वर्ष 28 | माघ-पौष | दिसम्बर-2023 | अंक 12 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982

पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023

मूल्य 10/- रुपये

मासिक प्रकाशन

आगमोद्धारक

प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को

श्री नवरत्नसागरसूरि समाधि मंदिर
श्री भोपावर महातीर्थ

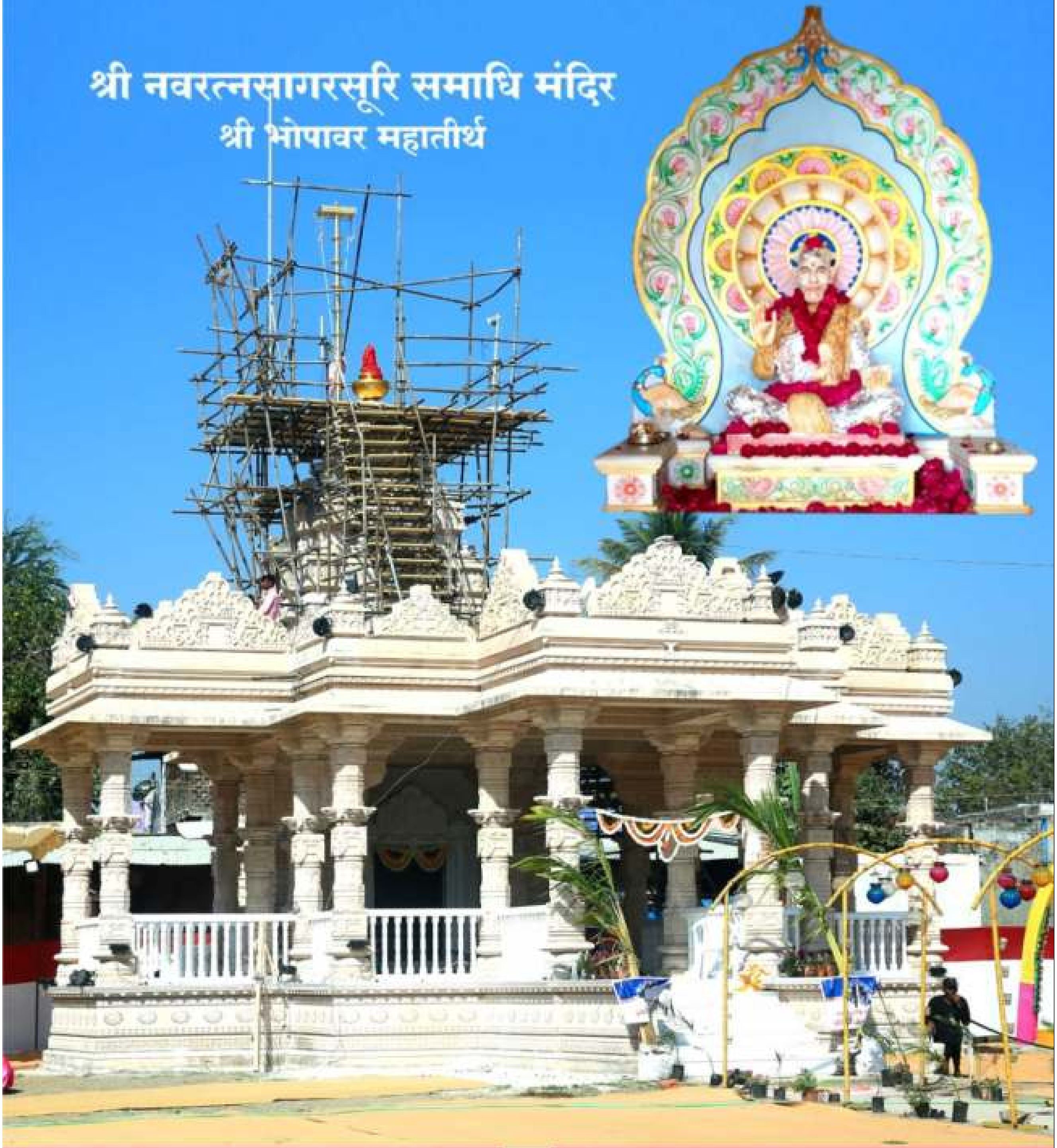

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन

उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)

मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897

1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in

2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन ''पप्पू''

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़

इन्दौर-452009 (म.प्र.)

5057087, 5057067

मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

✻ मोहराय के स्वजन सम्बन्धी आत्मदेव के घर में आकर मालिक/सर्वेसर्वा सत्ताधीश बन गये है। जहां आत्मदेव का चलना था, वहां आदेश मोहराय के स्वजनों का चल रहा है। आत्मदेव मालिक न रहकर सेवक बन गया है। आत्मदेव की पुनः मालिकी लाने हेतु दूसरे मेहमानों को लाना होगा। वे दूसरे मेहमान वैसे ही दूर हो जाते है जैसे सूर्य के आते ही अंधकार दूर हो जाता है एवं आत्मदेव ही सर्व सत्ताधीश बन जाता है, उसी का आदेश उसी पर चलने लगता है। अतः शीघ्रातिशीघ्र नमस्कार महामंत्र की आराधना द्वारा पंच परमेष्ठियों को आत्मघर में प्रतिष्ठित कर लेना है।

दिव्य आर्शीवाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

परम पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

सारीर-माणसा चेव, वेयणाओ अणन्तसो।
मए सोढाओ भीमाओ, असइं दुक्खभयाणि य॥

इस आत्मा ने अनंत बार तीव्र शारीरिक और मानसिक वेदनाएं भोगी है तथा वह अनन्त दुःख और भय से पीड़ित हुई है। - उत्तरा. सूत्र, 19.46

पाथेय *हे प्रभु, विश्व दो परस्पर विरोधी शक्तियों में हो गया है विभक्त, जो अपने को प्रधानता देने हेतु कर रही है घोर संघर्ष किन्तु वे दोनों ही समान रुप से हैं तुम्हारे सच्चे विधान के प्रतिकूल। क्योंकि तुम न तो स्थूल जड़त्व चाहते हो न अन्ध विनाश। तुम तो एक सतत क्रमोन्नत एवं ज्योतिर्मय रुपान्तर द्वारा ही स्वयं को करते हो सर्वदा अभिव्यक्त। यदि हम तुम्हारे संकल्प को चाहते हैं पूर्ण करना मूल सिद्धांत तो यही है वह जिसे हमें पृथ्वी पर करना चाहिये स्थापित। कभी-कभी हमारी अधीरता इस अभिव्यक्ति के ढंग को इनके साधनों को जान लेना चाहती है तत्काल, जो कि हमारा एक भ्रम है। क्योंकि वह ज्ञान समुचित समय पर, कर्म की अवस्था में अवश्य आएगा, अतः मन को शांत कर, संकल्प को स्थिर कर एवं दृढ़ होकर, हम प्रतीक्षा में हैं उस संकेत की जो तुम सही समय पर हमें दोगे। प्रभु तुम्हारी कृपा में हमारा विश्वास अधिक प्रबल है।*

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-29 पौष-माघ जनवरी 2024 अंक-1

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय 3

2- विषय सूची 4

3- आशा, विश्वास और धैर्य : यही समय की पहचान है -(सम्पादकीय)- डॉ.सुभाष जैन 5

4- नव वर्ष-अभिनंदन- श्रीमती प्रभा जैन, परमात्म भक्ति से अष्टकर्मों का नाश होता है- विरेज शाह 6

5- श्री सागरजी की महानता 7

6- ''वैशाली'' लोकतंत्रीय इबारत और भविष्य की आहट है-शांतिलाल सगरावत जीव का जन्म मरण 8

7- सही मार्ग पर ले जाने वाला मार्गदर्शक-पंन्यास प्रद्युम्न विजय गणि 9

8- पुण्य नामधन्य 100 वीं वर्धमान ओली के तपस्वी मुनिराज श्री पद्मकीर्तिसागरजी म.सा. की जीवन झलक 10

9- पोल्ट्री फार्म या समाधि शिविर, सच्चा यज्ञ- डॉ. दिलीप धीग 11-13

10- जैन प्रगति चाहते है तो 20 सूत्री योजना को अपनाये.... 14

11- आज के समय का सुकृत : युग धर्म-कांतिभाई शाह, आत्मा एवं शरीर- महावीरजी डांगी, याद रखो.... 15-16

12- आओ जिन शासन प्रभावकों को जाने.... 17-18

13- मेरे प्रेरणापुंज गुरुदेव श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा- डॉ. सुभाष जैन 19

14- बंटवारा 20

15- भगवद्भक्ति का स्वरुप एवं माहात्म्य-स्वामी श्री शरणानन्दजी महाराज, बुजुर्गों का सम्मान करें यह हमारी धरोहर है 21-22

16- बनजारा-ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी म. 23

17- जड़ को सींचों, कॉफी या कप ?-अचल जैन 24

18- आरती की रचना किसने की और.... 25

19- वर्गपहेली- 344 - जयंतीलाल जैन,रतलाम 26

20- ज्ञान गंगोत्री- 344-आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी म.सा. 27

21- शासन-समाचार 28-41

22- हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है, चक्रवर्ती के 9 निधान, 10 बोल दुर्लभ.... 42

संपादकीय

आशा,विश्वास और धैर्य : यही समय की पहचान है

विज्ञान की उन्नति के बाद भी आज अध्यात्म का स्थान ऊंचाईयों पर ही है । यह प्रतीति हमें समय करवाता है । हम जिन तिथियों, तारीख, वार और इनमें होनेवाली घटनाओं का संज्ञान लेते है । यह मात्र प्रतीति है । हमारे ज्ञान ने समय के पल, निमिष, सेंकड, मिनिट, घंटे, दिन का विभाजन हमने अपनी सुविधा के लिये किया है । वस्तुतः यह समय नहीं है किसी घटना को स्मृति में रखने के लिये, बताने के लिये यह एक काम चलाउ व्यवस्था मात्र है, प्रतीति मात्र होने से समय को हम किसी परिभाषा में बांध नहीं सकते है । यात्रा में दृष्टि से गुजर गया दृश्य वर्तमान है और गुजरनेवाला दृश्य भविष्य है तो समय को हम किसी परिभाषा में नहीं बांध सकते है, वर्तमान का बिंदु छूटते ही वह अतीत हो जाता है और गुजरने लगते ही भविष्य हो जाता है । समय की विशेषता और प्रतीति को जान लेने के बाद रोग, शोक और राग द्वेष से ऊपर उठना सहज हो सकता है ।

समय हमेशा नई संभावनाओं से भरा हुआ है वह अगर हमारे सामने चुनौतियां लाता है तो संभावनाएं और समाधान भी लाता है । वर्ष 2023 हमारे सामने कितनी घटना और चुनौतियों के साथ प्रस्तुत होता रहा है । अपने कालखण्ड के अंतिम समय में कितनी बड़ी चुनौति और चैलेंज के रुप में हमारे सामने खड़ा हुआ था, 42 जिंदगियां घोर अंधकार में रहने के बाद भी अपने आत्म विश्वास, आशा और धैर्य से सब कठिन चुनौति को दूर कर मानवीय भावना की जीत के रुप में जिन्दगी फिर मुस्करा दी, यह सर्व शक्तिवान परमात्मा के प्रति अटूट विश्वास और मानव की धैयता और विश्वास का प्रतीक बन गई है, सही मायने में यह मानव के विश्वास की जीत है और गत हुए वर्ष में मानव के धैर्य की परीक्षा का शुभ परिणाम भी है । ऐसी अनेक चुनौतियां आनेवाले 2024 में भी हमारे सामने आयेगी जो हमारी परम्परा, मान्यताओं, धर्म और जीवनशैली को प्रभावित कर हमारे जीवन आधार को कमजोर करनेवाली हो सकती है । ऐसे समय में सांस्कृतिक, धार्मिक संस्कार देनेवाले बलिष्ठ शक्तियों को एक सूत्र में पिरोना होगा, परमात्मा पर विश्वास रखकर इनका प्रतिकार करने के लिये संस्कृति, संस्कार और धर्ममय जीवन को प्राथमिकता देनी होगी । पाश्चात्य की थोड़ी नकल, आधुनिकता और जीवन में विच्छेद को बढ़ावा देनेवाली स्वार्थ भरी नीति रीतियों को समझाना होगा, इनके दुष्प्रभाव को आनेवाली पीढ़ी को अनुभव के साथ समझाना होगा ताकि वे वास्तविकता के रुबरु हो सके, सच्चाई की पहचान रुके और विकृतियों और विसंगतियों से सावधान हो सके तभी उनका भविष्य सुरक्षित हो सकेगा ।

इस वक्त सर्वाधिक संकटग्रस्त अस्थिता हमारे राष्ट्र की है, अपने निज हित स्वार्थ के लिये अन्य लोग इसे बर्बाद करने का खेल खेल रहे है परन्तु हमारे सनातनी देश को बचाने के लिये कोई न कोई शक्ति पैदा हो जाती है जो उन तत्वों के ईरादों पर पानी फेर देती है पर भारत की विशेषता है कि धर्म के नाम से इस देश में आंतकवाद का बीज बोनेवाले खुद ही आतंक के कारण नष्ट हो रहे है । धर्मनीति के आधार पर राक्षसी प्रवृत्तियों पर विजय पाई जा सकती है, यह बात भारत ने कई बार सिद्ध की है और इसी कारण यह देश सनातन के लिये जीवित है और रहेगा, क्योंकि हमारी चिंतन धारा लोक हित के लिये हमारे चिंतन से लोक मंगल और समष्टि का हित समाहित है । हमारी संस्कृति में अनैतिकता का कोई स्थान नहीं है, अनैतिक शक्तियों को नष्ट ही होना है आसुरी प्रवृत्तियों का अस्तित्व अधिक समय तक नहीं रहता है । क्रोध को प्रेम से, द्वेष को न्याय से, अन्याय को सेवा से, स्वार्थ पर गुणों के द्वारा विजय पाने का एक मात्र मार्ग धार्मिकता की नीति है,यह नीति सामाजिक व्यवस्था जीवन की स्वस्थता और कल्याण का मार्ग प्रशस्त करती है।

विगत वर्ष की धार्मिक कट्टरता, आर्थिक भ्रष्टाचार और हिंसात्मक विकृतियों के प्रति सतर्क रहना होगा इनसे प्रेरित घटनाओं से देश, समाज, संस्कृति को बचाने के लिये तत्पर होगा, यह विडम्बना है कि हम ऐसे युग से जी रहे है, जहां आज मानवता पर प्रश्न चिन्ह लग रहे है, आज समाज में आम्र पुरुषों जन्म जैसे बंद हो गये है, चारों ओर बंबुलों का साम्राज्य फैलता लग रहा है जिसे स्पर्श करो वही चुभने लगता है, मानव में आधुनिकता से अधिक बर्बरता आ गई है इससे हमें सतर्क रहना होगा, इसी शक्तियों और लोगों को कोई मौका नहीं मिले, योग्य समय पर इनके विरुद्ध वातावरण बनाने के लिये चुकना नहीं चाहिये, यही विश्वास, आस्था और धैर्य की विजय होगी ।

वर्तमान में सबसे अधिक संकट हमारी धार्मिक मान्यताओं के साथ खिलाफ और खानपान से संबंधित वस्तुओं को मांसाहार में बदल कर धर्म से दूर करने का चल रहा है, धार्मिक आस्थाओं का विखण्डित करने का षड्यंत्र रचा जा चुका है, उससे बचने के उपाय हमें करना होंगे ताकि ऐसे कुप्रयास करनेवाले को उचित सबक मिल सके, आपके अस्तित्व पर छाये, इन संकटों का सामना करने के लिये बाजार से क्रय करनेवाली सामग्री के प्रति सचेत बनकर उससे दूर रहना होगा ताकि ऐसे लोगों के मनसूबे सफल नहीं हो सकें । धर्म और सांस्कृतिक उत्साह के रंग में जीवन रंगना होगा ताकि हमारी संस्कृति को जीवित रखा जा सके ।

तो आईये आनेवाले नवीन कालखण्ड 2024 को एक चुनौती के रुप में स्वीकार कर अपनी आस्था विश्वास और धैर्य के बल पर देश, धर्म, राष्ट्र समाज के प्रति कुचक्र करने वालों को परास्त किया जा सके । इसी शुभेच्छा से ।

- डॉ. सुभाष जैन

नव वर्ष- अभिनंदन

* श्रीमती प्रभा जैन, देवास

समय बीता बीत रहा है और बीतता रहेगा। मानव जीवन इसी तरह गुजरता रहेगा। बीता हुआ समय वापस नहीं आता है। सन् 2023 का समय इसी कड़ी में बीतता जा रहा है, कुछ ही दिनों बाद सन् 2024 का पदार्पण होने जा रहा है। हम सन् 2023 को बिदाई देते हुए, नव वर्ष सन् 2024 का स्वागत, अभिनंदन, अभिवादन करते है। प्रत्येक वर्ष का अपना अलग अलग इतिहास रहता है, महिला नारी शक्ति विधेयक, सामाजिक, आर्थिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में उत्कर्ष का काल रहा है। वर्ष 2023 में हमने क्या खोया, क्या पाया इसका चिन्तन, मनन करते हुए नव वर्ष का जीवन के कुछ संकल्पों के साथ अनुशीवन करें।

मनुष्य जीवन क्षण भंगुर है, पानी के बुलबुले के समान है, यह चिन्तन करते हुए जीवन को सार्थक करें। मनुष्य जीवन एक नदी की तरह है, जिन्दगी में उतार-चढ़ाव, धूप-छांव, लाभ-हानि आदि के प्रवाह से गुजरती रहती है।

इस विचित्र संसार में हम जैसा चाहते है, वैसा होता नहीं, जो होता है वह मन को अच्छा नहीं लगता, इसका चिन्तन करें।

जिन्दगी दो प्रकार से बीतती है, सुख और दुःख, मनुष्य हमेशा सुख ही चाहता है परन्तु दुःख जीवन का वरदान है।

सुखी जीवन के लिए क्रोध, मान, माया, लोभ का निग्रह करते हुए सहजता, सरलता, वात्सल्यता, उदारता को जीवन में स्थान दें।

हम धार्मिक क्रिया-कलापों को अपने जीवन का हिस्सा बनाए। मानव धन से नहीं, गुणों से महान बनता है।

हम प्रदर्शन को नहीं, दर्शन को महत्व दें। परिवर्तन प्रकृति का नियम है, परिवर्तन के साथ अपने जीवन को ढालना हमारा लक्ष्य हो। लक्ष्यहीन जीवन अर्थ हीन है। बिना लक्ष्य के जीवन एक भटकाव है। अतः लक्ष्य निर्धारित करना आवश्यक है।

नये वर्ष की मंगल बेला में हम पल-पल को सार्थक करते हुए सफल बनाये।

परमात्म भक्ति से अष्ट कर्मो का नाश होता है....

* विरेश शाह

1- चैत्यवंदन, स्तुति आदि से....
ज्ञानावरणीय कर्म
2- जिनप्रतिमा दर्शन से....
दर्शनावरणीय कर्म
3- जयणापूर्वक पूजा से....
वेदनीय कर्म
4- प्रभु गुण स्मरण से....
मोहनीय कर्म
5- प्रभु अक्षय स्थिति स्मरण से....
आयुष्य कर्म
6- प्रभु नाम स्मरण से....
नाम कर्म
7- प्रभु वंदन से.... गोत्र कर्म
8- जिन पूजा में शक्ति
समय और द्रव्य के सदुपयोग से अंतराय
कर्म का नाश होता है....

हमारी ज्ञानेन्द्रियां, कर्मोन्द्रियां और मन निरन्तर व्यस्त रहते है, कभी सकारण और प्राय: अकारण। यदि हम इनकी गतिविधि पर ध्यान दें तो यह बात स्पष्टहो जायेगी। किन्तु हमें इनसे अलग रहकर इन पर ध्यान देने की बात प्राय: समझ ही नहीं आती। कभी भोजन करते समय जीभ पर उठते स्वाद पर ध्यान देकर देखें। प्राय: हम स्वाद को नहीं देखकर अनेक विचारों की लहरों में उलझ जाते हैं। जैसे अमुक समय यह सब्जी बहुत अच्छी बनी थी, आज वैसी नहीं है, इत्यादि। यह अनुपस्थित रहकर जीवन बिताने-जैसी बात है। यदि हम जाग्रत रहकर होशपूर्वक जीने का अभ्यास करें तो पायेंगे कि हमारा अधिकांश समय अपेक्षाओं में जाता है। जो ''है'' उसकी जगह जो ''होना चाहिये'' उसमें हम उलझे रहते हैं। कुछ समय ''जो है'' उसमें जीने का आनन्द लें तो भगवत्कृपा की धारा का स्पर्श हो। अपेक्षाओं का छाता थोड़ी देर को बन्द करके देखें, आनन्द आयेगा। अपेक्षारहित जीवन निष्काम-कर्म का बीज है।

**यह वर्ष
पूज्यपाद आगमोध्दारक
श्री सागरानंदसूरीजी महाराजा
के जन्म का 150 वां वर्ष है
वर्ष भर आप के श्री संघ में
पूज्यपाद श्री के स्मरण
स्वरुप कार्यक्र म का आयोजन करने की
प्रेरणा है।**

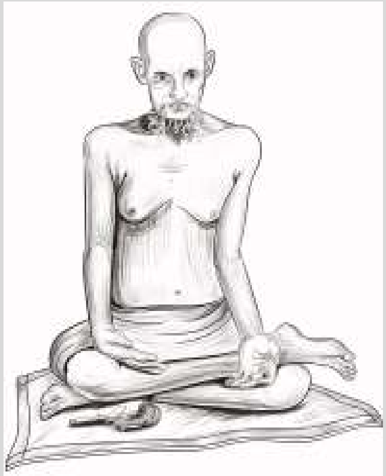

श्री सागरजी की महानता

विहार करते हुए मुनि भगवंत एक गांव में पहुंचे। वहां पहुंचने पर देखा कि उपाश्रय में पहले से ही साधु भगवंत विराजमान है। यह भी मालूम हुआ कि इन मुनि भगवंतों के साथ जो वृद्ध मुनिराज है वे बहुत ही बीमार है और पूर्ण रुप से संथारा लिये हुए है, ऐसा लगता था कि उनके जीवन की पूर्णाहुति होनेवाली है, लगभग अंतिम सांसें ही चल रही है, वृद्ध मुनिराज कालधर्म के समीप पहुंचे इन मुनिराज की आंखों में फिर भी एक बैचेनी, एक कथी, एक चिंता के दर्शन हो रहे थे, लगता था कि वे कुछ कहना चाहते है, उनके चेहरे और आंखों में अंतिम समय पर भी निश्चिंता नहीं दिखाई दे रही थी, लगता था कि किसी बात की चिंता से उनका मन विचलित दिखाई दे रहा था। विहार कर आने वाले मुनि भगवंतों से जो बड़े और विद्वान थे, उन्होंने जब बीमार मुनि भगवंतों की दशा देखी तो वे उनकी पारखी आंखों ने तुरन्त ही समझ लिया कि वृद्ध मुनि किसी बात से परेशान है, मुनि भगवंत उन वृद्ध मुनि के संथारे के निकट उनके पास बैठ गये और बड़े ही आदरणीय और प्रेम भरे शब्दों से उनसे पूछा- आपके मन में कोई बात की चिंता दिखाई दे रही है, अंतिम सांस ले रहे मुनि भगवंत ने कहा- मेरा यह जो शिष्य है इसको दो प्रतिक्रमण के अलावा कुछ भी नहीं आता है मुझे यह चिंता है कि मेरे जाने के बाद इसका क्या होगा ?

अंतिम सांस लेते मुनि भगवंत को बहुत ही विश्वास और आशा भरा जवाब मिल गया। आपका यह शिष्य जब तक मेरी आज्ञा में रहेगा तब तक इसकी जवाबदारी मेरी रहेगी।

वृद्ध मुनि भगवंत की लगभग बंद होती आंखों में एक चमक, संतोष और आशा का भाव दिखाई दिया, उन्होंने अपने शिष्य को बुलाया और कहा, इन महापुरुष को छोड़कर कहीं जाना मत। कुछ ही समय बाद वृद्ध मुनि भगवंत ने शांति के साथ अंतिम सांस ली और कालधर्म को प्राप्त किया।

बगैर कोई जान-पहचान परिचय स्वभाव आदि की जानकारी के बगैर वृद्ध मुनि भगवंत की समाधि हो जाने के बाद उन मुनि भगवंत ने उनके शिष्य को हमेशा के लिये अपने साथ रख लिया और वृद्ध मुनि भगवंत के शिष्य भी आजीवन उनके साथ ही रहे। उनके साथ ही संयम जीवन जीया।

ऐसे अनजान मुनि भगवंत को शांति से समाधि लेने में समयगार बने वह विद्वान और कोई नहीं हमारे आगमोद्धारक श्री सागरानंद सूरीजी महाराज थे। आपके जीवन के अनेक स्मरण प्रसंग आज भी हमें प्रेरणा मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

"वैशाली" लोकतंत्रीय इबारत और भविष्य की आहट है

✻ शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर

वैशाली गणराज्य के नायक राजा चेटक बारह व्रतधारी श्रावक एक विशाल गणतंत्र के संचालक थे। उन्होंने अपने राज्य को जैन आदर्शो के सांचे में ढाला था। उनकी राजनीति जैन नीति के अनुसार संचालित होती थी। उनका राज्य आदर्श जैन गणराज्य था।

पूरी दुनिया को लोकतंत्र का ज्ञान देने वाली भारत भूमि का इतिहास 2725 वर्ष पुराना है, तब यहां लिच्छवी गणतंत्र था, जिसे वज्जी संघ कहा जाता था। इसमें केन्द्रीय कार्यपालिका में एक गणपति याने राजा, उपराजा, सेनापति तथा भण्डागारिक होते थे। ये ही शासन व्यवस्था देखते थे। पूरी व्यवस्था आज के संसद की तरह थी। वास्तव में सारी दुनिया ने लोकतंत्र की परम्परा का ज्ञान, यहीं से प्राप्त किया था।

शरद का चन्द्रमा अपनी पूरी आभा को द्विगुणित करता है। निरभ आकाश में ओस के कण भरते है। ऐसे में दुनिया को धर्म और ज्ञान की रोशनी देनेवाली नगरी वैशाली अपने में सदियों पुराने वैभव को समेट कर भारतीय गणतंत्र की प्रामाणिक उत्कृष्ठ कुंजी कोष होकर इतिहास की लोकतंत्रीय इबारत और भविष्य की आहट थी।

जीव का जन्म मरण

चार गति में हमारी आत्मा जन्म आहार के साथ शरीर और मरण करती रहती है !
जब हमारा आयुष्य पूर्ण हो जाता है
तब हमें इस शरीर को छोड़ने
का मन नहीं होता ?
लेकिन ऐसे जीव भी है
जो 48 मिनिट्स में 12824 बार
जन्म और मृत्यु करती है,
पृथ्वीकाय-अपकाय तेउ काय-वायुकाय के जीव का 48 मिनिट्स एक अंत: मुहूर्त में 12824 बार जन्म और मृत्यु होता है !
प्रत्येक वनस्पतिकाय के जीव का 48 मिनिट्स में 12824 बार जन्म और मृत्यु होता है
जबकि साधारण वनस्पति के जीव
का 65563 बार जन्म और मृत्यु होता है !

''भगवती सूत्र'' में ''कोणिक चेटक'' का उल्लेख मिलता है। महाराजा चेटक ने देखा कोणिक का अन्याय कर रहा है। अन्यायिकों का निग्रह करना उन्हें दण्ड देना धर्म और न्याय है। यह विचार कर उसने नौमल्ली और लिच्छवी गणराज्यों के राजाओं की बैठक बुलाई और उनके सामने यह प्रश्न रखा। गणराजाओं ने कोणिक पक्ष को अन्यायपूर्ण घोषित किया। उन्होंने न्याय की रक्षा के लिये भयंकर नर संहार वाले युद्ध के मार्ग को अपना कर श्रावक धर्म के तकाजे को पूर्ण रुप से निभाया। राजा चेटक ने राष्ट्र की नीति प्रजाजनों की भलाई और उन्नति के लिये होती है अतः उसमें सहयोग देना लोकतांत्रिक कर्त्तव्य है, का आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया।

वैशाली चौबीसवें तीर्थकर श्रीमहावीर स्वामी की जन्म स्थली होकर श्रद्धालुओं के ठहरने के लिये यहां मंदिर प्रांगण में समुचित व्यवस्था है। वैशाली और इसके समीप के पौर-पौर धार्मिक, नैसर्गिक, आध्यात्मिक धरोहर समेटे है। वैशाली के नजदीक कुण्डलपुर गांव सर्वाधिक लोकप्रिय होकर प्रसिद्धि प्राप्त है।

वैशाली से पांच किलोमीटर दूर भगवान महावीर स्वामी का विशाल जिनालय होकर, इसी परिसर में एक विशाल संग्रहालय है, जहां संस्कृत, जैन दर्शन और अहिंसावादी महाव्रतों पर शौध कार्य सम्पन्न होता है। भगवान सन्यास के पूर्व तीस वर्ष तक तथा बाद में 12 वर्ष तक यहीं रहे। वैशाली जैन श्रमण निग्रंथों का विशाल केन्द्र होने का उल्लेख बौद्ध ग्रंथों में भी मिलता है। श्रीमहावीरकालीन परम्परा का स्मृति केन्द्र धर्म और संस्कृति में बड़ी में आख्यानों में वैशाली स्तूप के पास स्थित मंगल अभिषेक पुष्करिणी तालाब है। भगवान श्रीमहावीर स्वामी के जन्म कल्याणक दिवस पर आयोजित वैशाली महोत्सव पर श्रीमहावीर वर्द्धमान स्वामी की मूर्ति नाव में रखकर तालाब के उत्तर से दक्षिण किनारे तक लाई जाती है और पुष्करिणी तालाब का जल कलश में भरकर भगवान का अभिषेक किया जाता है। कई ख्यातनाम विद्वानों ने इसकी पुष्टि की है।

✻ समस्त संसारी जीव कर्मवश साताअसाता के उदय का अनुभव करते ही रहते हैं; उसमें मुख्यतया तो असाता का ही उदय अनुभव में आता है।

सही मार्ग पर ले जाने वाला मार्गदर्शक

✽ पन्यास प्रद्युम्न विजय गणि

आज के समस्या पढ़े लिखे विवेकशील आदमी की मानसिक स्थिति ऐसी हो गई है कि वह विचारहीन दिशाहीन एवं उद्‌देश्यहीन बहते तेज प्रवाह में (समय में) तैरना नहीं चाहता है, उसके साथ चलना नहीं चाहता है, उनकी सोने की, उसमें सम्मिलित होने की तीव्र इच्छा शक्ति है परन्तु उसमें ताकत नहीं है, उसकी शक्ति भी नहीं है वह निरपेक्ष (तटस्था) रहना चाहता है परन्तु प्रवाह इतना तेज है कि ऐसा व्यक्ति भी उसके प्रभाव में आ जाता है और बह जाता है, किनारे पर खड़ा रहनेवाला व्यक्ति उस प्रवाह में बहती नहीं है तैर तो नहीं सकता है परन्तु प्रवाह उसे गिला तो कर ही देगा वह उसके प्रभाव से रहने को बचा नहीं पायेगा, संयोग से इस छोटी सी पुस्तक में जो विचार व्यक्त किये गये है, उससे पढ़ने वाला निश्चत ही प्रभावित होगा।

अत्यधिक चिंतन मनन के बाद यह विचार सामने आये है, ऐसे विचारों से मोहित एवं आनंदित तो हुआ जा सकता है किन्तु उनसे अंतिम निष्कर्ष, हल को प्राप्त नहीं किया जा सकता है, एक कवि के शब्दों मेंः-

अरे ! उच्च शिखर को तो न छू पाऊंगा !
मैं मोहित आनंदित तो हो ही जाऊंगा !!

ऐसी विचारधारा के मार्ग पर चलने का नक्क्षा यहां दिखलाया गया है साथ ही इस मार्ग पर चलने की शक्ति एवं हौसला रखने की हिम्मत भी बंधाई गई है।

हमारी इस अपि संस्कृति एवं ईश्वर तक पहुंचने का मार्ग दिखानेवाले विचारों की गंगोत्री का दर्शन राजकोट के श्री प्रभुदासभाई ने दिखलाई। (श्री प्रभुदासभाई का जीवन योगीराज श्री आनंदधनजी जैसा था।) पर इस अकेले रास्ते पर चलने वाले की योजना सफल होगी ? यह नहीं लगता है। उस व्यक्ति के विचारों को समझा तो जा सकता है परन्तु उस मार्ग पर चलना अत्यन्त कठिन है। चाहे रास्ता कैसा ही छोटा बड़ा ही और उस पर कांटे, कंकर न भी हो तथा एक छोटी अच्छी सी बांड बनी हो उस पर हमें गलत रास्ते का त्याग का सही मार्ग पर आगे की ओर बढ़ना है।

आज भी भौतिकतावादी विचारों की हवा समझदार विवेकवान व्यक्ति को भी मार्ग से विचलित कर देती है, उसे कमजोर बना देती है। जैसे-जैसे यह हंडा अवसमर्पिणी काल आगे आगे बढ़ता जा रहा है, वैसे-वैसे धार्मिक व्यक्ति की धर्ममिष्ट बने रहने के लिये इस प्रकार के विचार प्रवाह का सामना (मुकाबला) करना पड़ रहा है। कोई नई बात जब हमारे सामने आती है तो हम उसे स्वीकार करते हैं, अपनाते है और उस पर सोच समझकर विचार भी करते है नहीं तो अच्छी वस्तुओं के नीचे सड़ी-गली वस्तु आ जाती है और लेने के देने पड़ जाते है, ऐसा न हो, यह सोच समझकर ऐसी परिस्थिति में क्या करना चाहिये ? इस प्रश्न का उत्तर पुस्तक में मिलता है जिसे सुगम सरल भाषा शैली में सही तरीके से समझाया गया है। आज चारों ओर जो विचार प्रवाहित हो रहे है उससे अलग हटकर संवाद सुनने को यहां मिलता है, छोटे-बड़ेस्थूल और सूक्ष्म धार्मिक, राष्ट्रीय एवं जातियों से संबंधित प्रश्नों के विचारों से आत्मासात कराने का प्रयास किया गया है। श्रद्धा की गहराई और ज्ञान के उच्च शिखर का सरल सुगम समन्वय यहां दिखाई देता है। अगर आप इस पुस्तक में प्रस्तुत किये गये विचारों से सहमत नहीं है तो पूर्वी ग्रह से मुक्त होकर इसका पठन करें एवं जल्दबाजी में कोई धारणा का अभिप्राय मत बना लेना, इसमें सत्य छुपा हुआ है, यह भावना रखकर आप इसके लेखों को पढ़ेंगे से आपके विचारों को नया मार्गदर्शन एवं नया प्रतिफल प्राप्त होगा। इन आलेखों के लेखक श्री अतुल भाई (मुनिश्री हितरुचिविजयजी महाराज) जन्म से ही सामद्ध और श्रीमती होते हुए भी संयमपूर्ण जीवन जीते थे इसलिये उनके लिये गर्भ आँख (गर्भश्राद्ध) शब्द का उपयोग किया जा सकता है। शास्त्र जैसा कहते है-उनका जन्म इसी कार्य के लिये न भी हुआ तो वह गलत रास्ते पर चलनेवालों को रोका एवं मार्गदर्शक व्यक्ति बनकर, प्रेम से, उनके साथ संवाद करते है और क्रोधित हुए बगैर उनकी ओर प्रेमभरा हाथ बढ़ाकर उन्हें भूतकाल की बात (घटना) पर विचार न करने एवं वर्तमान में सही रास्ते पर चलने के लिये प्रेरित कर रहे हैं।हमें अच्छे बुरे संवाद सुनना, सुनकर, रुककर उचित स्थान पर पहुंचने के लिये सही मार्ग पर हिम्मत के साथ आगे बढ़ना है। चलते-चलते श्री मकरंद दवे की इन पंक्तियों को अपने हृदय में और ओठों पर लाना है।

''मन मेरे जहां सब लोग दौड़ रहे है वहां तू अकेला रुक जा। रुकने से तेरा कुछ नहीं खोएगा। खोया हुआ तुझे वापस मिल जायेगा।''

''ऐसे सुन्दर विचार को अच्छी और बुरी नजर से देखनेवाले प्राणियों को यदि अच्छा नहीं लगेगा तो उससे तुझे क्या ?'' पढ़नेवाले निरपेक्ष भाव से, विवेक से देखें तथा इसमें बतलाये गये विचारों का आदर सम्मान करें और खराब विचारों का दूषित विचारों का त्याग करें। उन्हें छोड़े लेखक की लेखनी में वे सद्धर्म के लिये प्रत्येक व्यक्ति से प्रेम अनुराग करने की ध्वनि सुनाई देती है, वह ध्वनि हमारी भी बने इसी अपेक्षा और विश्वास के साथ...!

पुण्य नामधन्य 100 वीं वर्धमान ओली के तपस्वी मुनिराज श्री पद्मकीर्तिसागरजी म.सा. की जीवन झलक

नाम	-	मुनिराज पद्मकीर्तिसागरजी महाराज
जन्मदिवस	-	13/12/1969, मागसर सुद-12
माताश्री	-	श्रीमती कलावती बहन
पिताश्री	-	श्री सुमितभाई
भाई	-	श्री राजेश भाई
संसारी नाम	-	श्री लीनेश भाई
व्यावहारिक अभ्यास	-	बी.कॉम, पूना से
प्रारंभिक विद्याभ्यास		
दीक्षा	-	वैशाख सुद-11, शुक्रवार, दिनांक 24/05/1991, पूना,विक्रम संवत्-2047
बड़ी दीक्षा	-	विक्रम संवत्-2047 आषाढ़ शुक्ल-6 येवला (महा.)
गुरुदेव श्री	-	मुनिश्री चन्द्रकीर्तिसागरजी म.सा.
दादा गुरुदेवश्री	-	वचनसिद्ध आचार्य श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा
गृहस्थ पर्याय	-	22 वर्ष
कुल संयम पर्याय	-	32 वर्ष
कुल आयुष्य	-	54 वर्ष
वर्तमान चातुर्मास	-	पूना लेकटाउन सिटी
कुल चातुर्मास	-	32
प्रसिद्धि विशेष	-	वैयावच्य प्रेमी दादा गुरुदेव की सेवा
सुप्रसिद्ध गुण विशेष	-	सहज सरल शांतमूर्ति, साधारण
भाषा ज्ञान	-	हिन्दी, गुजराती, संस्कृत, प्राकृत
जैन जगत को विशिष्ट भेंट	-	100 ओली आयंबिल तप
सौम्य पहचान	-	शांत मूर्ति
विहार यात्रा	-	गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, बंगाल, बिहार।
जीवन का लक्ष्य	-	दादा गुरुदेव की सेवा-वैय्याप्तय
तपाराधना	-	आयंबिल तप

पोल्ट्री फ ार्म या समाधि शिविर

अपने देश के गांव में, घर के आंगन में मीठी-मीठी नींद सोनेवाला व्यक्ति प्रातःकाल मुर्गे की कूकूडुकू को आवाज से उठाता है तथा अंधेरी दुनिया से प्रकाश की दुनिया में प्रवेश करता है। यह ख्याल, यह विचार कितना सुन्दर है ? कितना अच्छा है ? यंत्रीकरण के युग ने विकास की गति ने हमारी ऐसी प्राकृतिक शैली को समाप्त कर दिया है। हमारी आज की नवीन पीढ़ी को सुबह उठने के लिये अलार्म घड़ी तथा टेलीफोन की घंटी के अलार्म की आवाज उठती है परन्तु आज भी हिन्दुस्तान के लाखों गांवों में रहने वाले करोड़ों लोगों को उठाने के लिये मुर्गे ने कूकूडुकू की आवाज देकर जवाबदारी ले रखी है या लोगों ने उसे सौंप रखी है और मुर्गा यह कार्य आज भी कर रहा है, एक पैसे का भी सुबह का अर्लाम घड़ी का बिल दिये बगैर तथा एच.एम.टी. से ''राष्ट्र का समय प्रहरी'' कहा जाता है जो देश को समय बताता है कि आवश्यकता के बगैर मुर्गा आज भी सुबह आवाज देकर लोगों को सफलतापूर्वक उठा रहा है।

परन्तु मनुष्य जो सम्पूर्ण योग्यताओं से परिपूर्ण है मुर्गी पालन उद्योग के बोर्ड के नीचे, नाम के नीचे मुर्गे, मुर्गीयों के साथ जुल्म कर रहा है उन्हें यातना दे रहा है इसके कारण प्रातःकाल के समय मुर्गे की आवाज ''कूकूडुकू'' जिसे सुनकर मनुष्य सोकर उठ जाता है वह आने वाले समय में भूतकाल की बात हो जावेगी और उसके स्थान पर भविष्य में पोल्ट्री फार्म (मुर्गी पालन केन्द्र) से मुर्गे मुर्गीयों की दर्द भरी चीत्कार कष्टप्रद आवाज ही सुनाई देगी।

अधिक से अधिक अण्डे पैदा करनेवाली मुर्गी जिसे ''लेयर हेन'' कहा जाता है तथा मुर्गी जिसका कोटकर, मारकर जो मांस प्राप्त किया जाता है उसे बायलर चिकन कहा जाता है, दोनों को ही पालन एवं कत्ल करने में जंगलीपन एवं वहशीर्षण होता है हां उसके तरीके में फर्क हो सकता है, अंतर हो सकता है।

पहले खेतों में और गांवों में चारो ओर मुर्गे-मुर्गीयां स्वतंत्राता पूर्वक आजादी से इधर उधर विचरते थे, घूमते थे (मत्स्य गलागल न्याय) के अनुसार मुर्गे-मुर्गी खेतों को नुकसान पहुंचाने वाले जीव जन्तु (जीवाणुओं) को खाकर उनके दुष्प्रभाव को समाप्त कर देती थी और उससे प्राकृतिक संतुलन बना रहता था तथा उससे मनुष्य का भौतिक स्वार्थ भी बना रहता तथा उससे मनुष्य को किसी प्रकार नुकसान नहीं होता था इसके स्थान पर आज मनुष्य ने आधुनिक युग में अधिक से अधिक अण्डा पैदा करने के लालच में सन् 1940 के आसपास मुर्गीयों के पालने के लिये जाली वाले पिंजरों का उपयोग शुरु किया सामान्यतः प्राकृतिक जीवन शैली के अनुसार मुर्गी वर्ष भर में चौबीस पन्द्रह अण्डे देती है उसके स्थान पर आज मुर्गी के जिस उसके गर्भाशय के साथ अनेक प्रकार के प्रयोग करके, अनेक प्रकार की छेड़-छाड़ करके उससे 300 अण्डे प्राप्त किये जा रहे है यदि किसी नारी, किसी महिला के साथ उसकी क्षमता से अधिक 10-12 गुना बच्चे पैदा करवाये जाये तो उसके क्रूरता के दर्द को वह नारी ही समझ सकती है। वह नारी ही अनुभव कर सकती है तुलना के दृष्टिकोण से हम कर सकते है कि- वर्ष में एक बच्चा पैदा करनेवाली नारी जिसके गर्भ धारण करने की क्षमता से अधिक 10-12 बच्चे पैदा करवाने की अप्राकृतिक कौशिश या प्रयास किये जाये तो उस महिला की, उस नारी की क्या दशा होगी ? उस पर क्या बितेगी ? उससे भी ज्यादा बुरी दशा, बुरी हालत, मुर्गीयों की जा रही है।

इससे भी अधिक शर्म की बात तो यह है कि- एक ओर अनेक जंगलीपन दर्शाने वाले पोल्ट्री फार्म (मुर्गीपालन केन्द्र) खोले जा रहे है इनको बंद करने की बात तो दूर रही बल्कि हमारी सरकार इन पोल्ट्री फार्म (मुर्गीपालन केन्द्र) को इनके जंगली बहादुरी दिखाने के लिये उसको प्रोत्साहन देने के लिये आयकर में 33 प्रतिशत की छूट दे रही है तथा उसके साथ अनेक प्रकार की अन्य सुविधाएं भी प्रदान कर रही है।

अन्य पशु पक्षीयों की अपेक्षा मुर्गे-मुर्गियों में अत्यधिक प्रकाश संवदनशीलता होती है उसको ग्रहण करने की क्षमता होती है। सूर्य उदय होने के पूर्व ही हल्के से प्रकाश में इनको अनुभव हो जाता है कि प्रातःकाल होनेवाला है और मुर्गे-मुर्गीयों कूकूडुकू की आवाज लगाने लगते है, ऐसी प्रकाश संवेदना रखने वाले पक्षीयों को अधिक से अधिक अण्डा देने के लिये उत्तेजित करने हेतु इनको 18 से 23 घण्टे तक कृत्रिम (नकली) प्रकाश के सानिध्य में रखा जाता है इनके पिंजरे में नीचे बैठने के स्थान पर लोहे की जाली लगी होती है जिससे न तो अच्छी तरह से बैठ सकते है और नहीं सो सकते है दूसरी और अप्राकृतिक रुप से अधिक से अधिक अण्डे

प्राप्त करने के लिये तथा मुर्गीयों को अनेक बीमारी से बचाने के लिये जिससे चिंकन की पूर्ति के लिये मुर्गे अधिकतरों ताजा और मोटे बने रहे इनको हार्मोन्स से लेकर एन्ट्री बायोटिक (रोग प्रतिरोधक) के इंजेक्शन और गोलियां (टिकिया) लगातार दी जाती है। इस तरह से इन पक्षीयों को इतना वास और दुःख पहुंचाया जाता है कि इससे ये पक्षी इतने अधिक मानसिक तनाव में आ जाते है कि ये पिंजरे में रहने वाले अन्य मुर्गे मुर्गियों से एक दूसरे को चोंच मार कर घायल कर देते है ऐसा होने से इन तथा कथित कसाई उद्योगपतियों को उनके धंधे में फायदा, मुनाफा होने के स्थान पर नुकसान दिखाई देने लगता है। उन्होंने इस समस्या के समाधान की भी खोज निकाली है। अगर इन पक्षीयों की चोच काट दी जावे तो ये एक दूसरे को घायल नहीं कर पायेंगे। ''न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी'' इन पक्षीयों की, नाजुक बच्चों की चोंच क्रूरता से काटी जाती है कि वैज्ञानिकों को भी कहना पड़ा कि- ''मनुष्य के नाखुन के नीचे की चमड़ी काटने पर जो असहनीय दर्द, वेदना होती है वह दर्द और वेदना इन पक्षीयों की चोंच काटने पर होती है।

ऐसे पाशविक उद्योग धंधे खेती ? के नाम पर आयकर छूट, अनेक प्रकार की सबसिड़ी, सुविधाएं देकर सरकार ऐसे (कू) तर्क देती है कि इससे लोगों को रोजगार मिलता है। गोड़से ने जब गांधीजी को गोली मारी तब से सरकार ने खादी एवं ग्रामोद्योग बेकार समझ कर, अटाला समझकर बंद कर दिया है अगर इन्हें वापस चालू किया जाये तो पोल्ट्री फार्म (मुर्गीपालन केन्द्र) से जो रोजगार मिलता है उससे हजारों लाखों गुना लोगों को रोजगार मिल सकता है। अगर यह बात कुछ समय के लिये, थोड़ी देर के लिये भूल भी जाये तो आपको आश्चर्य होगा कि जो नये-नये पोल्ट्री फार्म, कत्लखाने बहुत बड़े स्तर पर बड़े पैमाने पर अत्याधुनिक तकनीक विधि और यंत्रिकरण से लगाये जा रहे है, खोले जा रहे है, ये इतने आधुनिक है कि इनसे नया रोजगार मिलने की बात तो दूर रही बल्कि पुरानों का भी रोजगार छिन जायेगा ऐसे बड़े-बड़े उद्योगपति कसाई आधुनिक तकनीकि से काम करने के लिये आयकर में छूट एवं अन्य सुविधाएं एवं राहत प्राप्त कर लेते है और बेरोजगारों को रोजगार देने का बेतुका तर्क देते रहते हैं।

मुर्गे-मुर्गियों को अगर उनका जो प्राकृतिक जीवन है उसके अनुसार जीने दिया जावे तो वे आराम से 6-7 वर्ष तक जीवित रह सकते हैं परन्तु ये उद्योगपति कसाई जब मुर्गीयों की आयु 18 से 20 सप्ताह की होती है तभी से अधिक से अधिक संख्या में अण्डे प्राप्त करना शुरु कर देते है और अंदाजन जब ये मुर्गीयां 76 सप्ताह (एक वर्ष छह माह) की आयु की होती है तब तक इनको असहाय बना दिया जाता है इनको इतना चुस लिया जाता है कि इसके बाद इनको मारना ही पड़ता है तथा चिकन के लिये पाले जाने वाले मुर्गी को पांच से सात सप्ताह कर दिया जाता है।

नगर अहमदनगर के पास स्थापित एक विशाल बायलर कत्लखाने की कार्य योजना को पढ़ा जाये तो जिंदा पक्षीयों के साथ किये जाने वाले दुर्व्यवहार को अमानुषिक कृत्य को समझा जा सकता है, कारखानों में जिस चलित पट्टे (कन्वेयर बेल्ट) से वस्तुएं आगे की ओर ले जाई जाती है उसी तरह से कत्लखाने में एक घंटे में एक हजार (एक मिनिट में सत्तर) मुर्गीयों को उल्टे लटकी हुई दशा में कन्वेयर बेल्ट पर ले जाया जाता है इनमें खून का संचालन अच्छी तरह से होता रहे इसलिये इन्हें हल्का सा बिजली का छूटकर (करण्ट) भी लगाया जाता है तथा इनके खून को अन्य उपयोग में लाने के लिये एक ट्रे में इकट्ठा कर लिया जाता है फिर इन पक्षीयों को उबलते पानी में छकछोरा जाता है, धोया जाता है इसके बाद में प्लेविंग मशीन के द्वारा इनके पंखों को निकाल दिया जाता है फिर हाथों में इनकी आंतड़ियों को निकाल कर तैयार मांस को मुंबई की बड़ी-बड़ी पांच सितारा होटलों में विभिन्न एयरवेज तथा बड़ी-बड़ी कम्पनियों को केन्टीन (स्वल्पाहार गृहों) से पहुंचा दिया जाता है।

विवाह पर तथा अनेक पार्टी प्रसंगों के आयोजन के अवसर पर लोगों को आईस्क्रीम खिलाई जाती है एवं बच्चों को दिये जाने वाले बिस्कुट के पैकेट से लेकर ब्रेड, शेम्पू आदि जीवन की नित्य उपयोगी वस्तुओं में अण्डे का उपयोग किया जाता है। हम मात्र परम्परागत धार्मिक दृष्टिकोण से न भी देख और सम्य संस्कृत मनुष्य की दृष्टि से देखी तो अक्षम्य अपराधिक आचरण करने वाली पोल्ट्रा-उद्योग को स्थापित करने वाली सरकार के कान पकड़कर अनेक प्रकार के सवाल किये जा सकते है, एकसा कर सकनेवाले कट्टिबद्ध लोगों का व्यक्तियों का इंतजार मुर्गियां कर रही है।

जहां मांसाहारियों की संख्या कम नहीं है ऐसे देश इंग्लैंड में भी ''चिकन्स एल.आई.बी. (पोस्ट बाक्स नं. 2 होल्म फोर्ट, हुडर्सफिल्ड एस.डी. 7 क्वार्टर यू.के.) जैसे संस्थाएं

भी लड़-झगड़कर ऐसी निर्दयतापूर्ण कार्यवाही को रोकने में जनता का सहयोग प्राप्त कर सकती है तो हमारे देश में जहां संवेदनशील और करुणा से ओतप्रोत लोग रहते है वहां पर ऐसे अमानुष्कि कृत्यों से परिपूर्ण अत्याचारों को क्यों नहीं रोका जा सकता है। खास तौर पर अभी जहां देश में ऐसी निर्दयता एवं बर्बरता अभी प्राथमिक स्तर पर है उसको यहीं इसी स्तर पर रोकने के लिये सरकारी एवं अर्ध सरकारी प्रोत्साहन पर रोक लगाई जा सकती है, जागरुक नागरिक यदि अभी चुक जाता है तो विद्यालयों में जहां बच्चे पाठ्य पुस्तकों में सब पढ़ते है- ''राम की चिड़िया राम का खेत, खा ले चिड़ियां जी भर पेट'' यह गीत गाते रहेंगे और दूसरी तरफ लाखों करोड़ों पक्षियों की अन्त्नाद पूर्ण दर्दीली चीखों से हिन्दुस्तान का आकाश गूंजता रहेगा। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिये कि हिंसा और निर्दयता एक ऐसा चिपकू और छुत का रोग है चक्रवृद्धि ब्याज की भांति (तरह) बढ़ता ही चला जाता है जो हाथ आज मुर्गियों को काट सकते है वह हाथ कल अपनी सगी पत्नी, सगे भाई और देशवासी को भी जिंदा जलाने पर भी विचार नहीं करेगा, कोई चोरी करते हुए पकड़ा गया और उसे हाथ काटने की सजा मिली। अपने बचपन की छोटी-छोटी चोरियां करते हुए न रोका गया और बड़ा चोर बन जाने पर न रोकने वाली मां को दोष देवें और हाथ मां के काटे जाये ऐसा कहने वाले चोर की कहानी से कोई अनजान नहीं है।

उपसंहारः- पूज्य मुनिश्री हितरुचिविजयजी महाराज ने हमारे सामने इतने ज्वलंत प्रश्न पोल्ट्री फार्म में मुर्गे मुर्गीयों पर होने वाले निर्दयता पूर्ण अत्याचारों को सामने रखकर खड़े किये है कि यह सोचने पर मजबूर होना पड़ता है कि अहिंसा रुपी देश में किस प्रकार हिंसकता पूर्ण कार्यवाही कर मांसाहार के लिये उद्योगपति कसाई पशु पक्षियों पर अत्याचार कर रहे है और हमारी सरकार इन हिंसक उद्योग पतियों पर रोक लगाने के स्थान पर उन्हें बैंक से करोड़ों रुपये का कर्ज इन्हें प्रोत्साहन दे रही है यह बात सोचने पर विवश करती है कि अगर यह सब ऐसे ही चलता रहा और हम मुक दर्शक की भांति सब सहन करते रहे तो आने वाले समय हमें कभी भी माफ नहीं करेगा तथा इसका भुगतान हमें स्वयं को हिंसक कार्यवाही से गुजर कर करना पड़ेगा अतः हमें इसको रोकने के लिए एक जन आंदोलन खड़ा करना ही पड़ेगा।

सच्चा यज्ञ

*** डॉ. दिलीप धींग**

किसी समय द्रव्ययज्ञ का अतिशय प्रचार और यज्ञ के नाम पर हिंसा को खुला समर्थन दिया जा रहा था। यज्ञ में नरबलियों और पशुबलियां तक होने लग गई थी। ऐसे समय में निर्ग्रथ (जैन) परम्परा ने यज्ञ को नवीन और सम्यक् अर्थ दिये। उत्तराध्ययन सूत्र (12/42) में कहा गया है कि जो पांच संवरों से सुसंवृत है, जो असंयमी जीवन की इच्छा नहीं करते है, ऐसे देह-ममत्व के त्यागी पवित्र भाव रखनेवाले महाजयी श्रेष्ठ यज्ञ करते हैं-

सुसंवुडा पंचहिं संवरेहिं, इह जीवियं अणवकंखमाणा।
वोसट्ठ काया सुइचत्तदेहा, महाजयं जयइ जन्नसिट्ठं ॥

ऐसे यज्ञ की विधि बताते हुए उत्तराध्ययन सूत्र (12/44) में कहा गया कि तप ज्योति है, जीवात्मा ज्योतिकुण्ड है मन, वचन और काया की प्रवृत्तियां ही घी डालने की कुलछियां है, शरीर के अवयव ज्योति प्रदीप्त करने के कण्डे है, कर्म ईंधन है और कर्मो (पापों) को नष्ट करना ही आहुति है। यही यज्ञ शांतिकारक और सुखदायक है। ऋषियों ने ऐसे ही यज्ञ की तारीफ की है-

तवो जोई जीवो जोइठाणं, जोगा सुया सरीरं कारिसंगं।
कम्मेहा संजम जोग संति, होमं हुणामि इसिणं पसत्थं ॥

इस तरह की सकारात्मक व्याख्याओं का जन-जीवन पर गहरा सुप्रभाव हुआ। फलस्वरुप वैदिक और बौद्ध परम्परा ने भी यज्ञ के आध्यात्मिक और सामाजिक स्वरुप का अनुमोदन किया। उपनिषद और गीता में यज्ञ के अहिंसक और सेवामय स्वरुप का समर्थन किया गया है।

इसी प्रकार उस समय कुछ लोग कहते थे कि -बाहरी सफाई या शारीरिक स्वच्छता काफी है। कुछ लोग कहते थे कि -किसी नदी या जलाशय विशेष में स्नान करने से पाप धुल जाते है। इस प्रकार के निराधार और अवैज्ञानिक तथ्यों के निराकरण के लिए उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया कि धर्म जलाशय है और ब्रह्मचर्य तीर्थ (घाट) है। उसमें स्नान करने से आत्मा, शान्त, निर्मल और पवित्र हो जाती है। उत्तराध्ययन सूत्र में ब्राह्मण और ब्रह्मणत्व को भी उसके सही, श्रेष्ठ व गौरवपूर्ण अर्थ में प्रतिष्ठित किया गया है।

वस्तुतः समय की विभिन्न धाराओं और समाज की प्रचलित मान्यताओं को अर्थवान व मूल्यवान बनाने तथा जन-जीवन को अंधविश्वास से मुक्त करने में निर्ग्रन्थ (जैन) परम्परा की ऐतिहासिक, क्रांतधर्मी और सकारात्मक भूमिका रही है।

जैन प्रगति चाहते है तो 20 सूत्री योजना को अपनाये

1- प्रत्येक जैन का स्वास्थ्य बीमा करवाये।

2- प्रत्येक जैन मंदिर में वाचनालय खोले।

3- प्रत्येक जैन का स्थायी जैन पहचान पत्र बनाया जावे।

4- सभी जैन मंदिरों/धर्मशालाओं, विद्यालयों में जैन कर्मचारियों को ही नियुक्ति में प्राथमिकता दी जाये।

5- प्रत्येक शहर में जैन इधर-उधर अलग-अलग कालोनियों में बिखरे रहने के स्थान पर जैन कालोनी बने ताकि जगह-जगह मंदिरों का निर्माण न करना पड़े तथा उस क्षेत्र में सघन जैन घनत्व होने से राजनीति में प्रतिनिधित्व मिलेगा।

6- 200 से 500 परिवार होने पर नये मंदिर का निर्माण व 3 किलोमीटर के दायरे में मंदिर ना होने पर ही नया मंदिर बनाया जाये।

7- जैन प्रतिभाओं को स्नातक प्रथम वर्ष से ही प्राशासनिक सेवाओं की तैयारी हेतु प्रशिक्षण हेतु राष्ट्रीय स्तर की प्रत्येक राज्य की राजधानी में जैन प्रशासनिक सेवा अकेडमी बनायी जावे।

8- आई ए एस, आरएस., जज/वकील/न्याय पालिका, सरकारी नौकरियों में जैन धर्मावलम्बियों का प्रतिनिधित्व बढ़ाने का प्रयास किया जाये।

9- जैन के अलावा अन्य समाज के लोगों को दान बांटना बन्द करें। इस गलत फहमी में ना रहे कि सब जैन परिवार अमीर हो गये।

10- समाज में गलत व्यवहार, झगडालु व्यक्तियों का व परिवार का सामाजिक बहिष्कार करें।

11- विवाह समारोह में अनावश्यक दिखावा बन्द करें। रात्रि विवाह, प्रीवेडिंग शूटिंग/फूहड़ प्रकार के महिला संगीत बन्द करें, मंदिरों में चक्रवर्ती विवाह को बढ़ावा देवें।

12- सादगी पूर्ण विवाह करें। ये न सोचे कि हमारे पास इतना पैसा है तो उसको शादी ब्याह में उड़ा दे, आप किसी जैन परिवार की मदद करके उस यादगार पल को हमेशा हमेशा के लिए एक मिसाल बनाये।

13- तीसरी संतान होने पर विशेष प्रोत्साहन योजना प्रारंभ करें। नई पीढ़ी को कम से कम तीन संतानें अवश्य पैदा करनी चाहिये।

14- युवा उद्यमियों हेतु 6 प्रतिशत वार्षिक/न्यूनतम ब्याज दर पर ऋण की व्यवस्था की जावे, जैन नौकरी ना करके व्यवसाय करें।

15- प्रत्येक सामाजिक दान में न्यूनतम 20 प्रतिशत राशि साधर्मी सामाजिक उत्थान के लिये निर्धारित हो।

16- हर शहर में तात्कालिक जैन आपदा कोष का निर्माण किया जाये जिससे जैन परिवारों को गंभीर रोग/महामारी, अकाल/बाढ़ आदि आपदाओं में मदद मिल सके।

17- प्रत्येक कालोनी/गांव/शहर में साहसी जैन युवाओं का ''वीर रक्षा दल'' का गठन किया जाये जो जैन समाज/धर्म सम्पदा पर किसी के भी द्वारा किये गये हमले का मुंह तोड़ जवाब दे ताकि लोग हमला करना भूल जाये। लोग जैन धर्म की अहिंसा नियमों के कारण जैन समाज को कायर समझने लगे है।

18- किसी भी आंतरिक झगड़े को रोकें और उन्हें एक साथ सुलझाएं। यदि किसी जैन पुत्र का शोषण हो रहा हो तो उसे रोकने में भागीदार बनें। ऐसे काम करें जो जैनियों को संगठित रखे।

19- 23 वर्ष की आयु मे अपनी संतान का विवाह सुनिश्चित करें। बेटियों के विधाता बनने का प्रयास ना करें, लड़के के गुणवान होने को प्राथमिकता देवे ना कि बड़े पैसे वाले परिवार को।

20- सभी राज्यों की राजधानी में जैन हॉस्टल बनाये जाये। अगर समाज के लिये सच्ची भावना है तो जैनियों की रक्षा के लिये एक जुट हों।

मैसेज में यदि आपकी किसी सोच को ठेस पहुंचती है तो पहुंचे बात कड़वी है पर सच्ची है, मैसेज को बार बार पड़े एवं बेकार की पंथवाद की बहसबाजी से बचें। यदि पसन्द आता है और सच्चे जैन है तो अवश्य शेयर करें।

※ आरंभ-परिग्रह को अल्प करने से अ-सत्प्रसंग का बल कम होता है, सत्संग के आशय से असत्संग का बल घटता है, अ-सत्संग का बल घटने से आत्म विचार करने का अवकाश मिलता है, आत्म विचार होने से आत्मज्ञान होता है और आत्मज्ञान से निज स्वभाव स्वरुप, सब क्लेशों और सब दुःखों से मुक्त ऐसा मोक्ष होता है, यह बात बिलकुल सच है।

आज के समय का सुकृत : युग धर्म

✲ कांतिभाई शाह

गांधीजी से एक बार किसी ने पूछा कि- ''आपके और नेहरुजी के बीच क्या अंतर है ? तब गांधीजी ने उनसे कहा- ''जवाहर की यह इच्छा है कि अंग्रेज भारत से जाये किन्तु उनकी अंग्रेजीयत (संस्कृति, सभ्यता) यही रहे, जबकि मैं यह कहता हूं कि- अंग्रेज यहीं हमारे देश में रहना चाहे तो यहां रहे लेकिन उनकी अंग्रेजीयत (संस्कृति, सभ्यता) भारत में नहीं रहनी चाहिये।

सामान्यतः यह अंतर (भेद) पहली नजर में साधारण दिखाई देता है किन्तु यह साधारण अंतर भी हमारी आज की विषम तथा दयनीय परिस्थिति को प्रकट करता है कि प्रदर्शित करता है जब देश आजाद हुआ तब गांधीजी उसे सही दिशा में ले जाने का प्रयास कर रहे थे उसके पहले ही नेहरु और उसके साथी देश को गलत दिशा की ओर ले जाने के लिये अग्रसर हो गये थे, इसके परिणाम स्वरुप अंग्रेज तो चले गये लेकिन उनकी सभ्यता, संस्कृति यही रहकर फलने फूलने लगी और यहां उसका प्रसार अधिक होता गया और यह सभ्यता संस्कृति यहीं की होकर रह गई। आज हम राष्ट्रीय दृष्टिकोण से देखें तो हमें आजादी तो मिल गई है किन्तु वैचारिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से हम और अधिक से अधिक परतंत्र हो गये है। देश की जनता अधिक से अधिक परपंत्रता की बेड़ियां जकड़ गई है, इसका कारण यह रहा कि हमने अंग्रेजी के साथ पाश्चात्य देशों की सभ्यता संस्कृति को स्वीकार कर लिया है, इस सभ्यता ने हमारे मस्तिष्क, आचार-विचार स्वभाविक जीवन शैली, अर्थव्यवस्था, आदर्शो तथा मयादी पर पूर्ण रुप से अधिकार कर लिया है, उसका वर्चस्व हो गया और चारों ओर उसका राज्य चल रहा है। देखने पर हम स्वतंत्र दिखाई देते है पर वास्तव में हम गुलाम ही बने हुए है। गांधीजी हमें अंग्रेजों से ही मुक्ति नहीं दिलाना चाहते थे बल्कि वे अंग्रेजी सभ्यता, संस्कृति से परिपूर्ण साम्राज्य से भी छुटकारा दिलाना चाहते थे।

यह साम्राज्य इतना सूक्ष्म और गहरा है कि यह अपना प्रभाव आर्णुविक हथियारों से नहीं बल्कि अपनी विचारधारा से फैल रहा है। यह एक भौतिकतावादी विचारधारा है। भोगवाद में अधिक सुख संतोष है। लोग ऐसा मानकर चल रहे है। इस संस्कृति की प्रगति का प्रभाव इतना गहरा है कि लोग यह मानते है कि ''पैसा ही परमेश्वर'' है, प्रकृति को जितना अधिक लूटा जायेगा, इसका विनाश किया जायेगा उतना अधिक हम प्रकृति के मालिक बनेंगे यह उद्देश्य सामने रख रहे है। इस विचारधारा ने ऐसी सभ्यता ने जन्म ले लिया है कि उसके फलस्वरुप अधिक से अधिक राक्षसी, अमानुषिक एवं अकल्याणकारी प्रवृत्तियां बढ़ रही है। आज हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौति अगर कोई है तो वह यह है।

यह एक प्रकार का दर्शनशास्त्र में एवं विक्रत विचार धारा का प्रकार है। इस प्रकार की विचार शैली के दोषों के खराब परिणाम बतला कर उससे बहत्तर उससे अच्छी, सबको सुखम करने वाली संभावित विचारधारा जनता को बतलाकर समझाकर, उसका सामना, मुकाबला किया जा सकता है इसके लिये हमें अनेक विषय क्षेत्रों पर एवं अनेक स्थानों पर लड़ाई लड़ना होगी तथा विभिन्न तरीकों के द्वारा लोगों को हमें अपनी बात समझाना होगी। इस छोटी सी पुस्तक में इस प्रकार की लड़ाई का सामना करने के लिए कुछ बातें बतलाई गई है, वह में देख रहा हूं एवं मैं इसका हृदय से स्वागत करता हूं, हमारी आज की जो मूलभूत समस्याएं है उसकी गहराई से जांच-पड़ताल करना होगी। हमारे उम्रर विचारों का जो अतिक्रमण, आक्रमण हो रहा है इसके (अनेक) विविध रुप है। उसमें से लेखक ने अनेक का साक्षात्कार करवाया है। अनाज की विविध जाती जो जड़ से समाप्त की जा रही है। पशुओं की उत्तम नस्ल को समाप्त करना, रासायनिक खादों एवं जन्तु नाशक दवाईयों, हाईब्रीड, बीजों पर हो रहे आक्रमण मांसाहार के मायाजाल, बेबीपूड, हेल्थपूड, टीनपूड के प्रलोभन पर्यावरण को नष्ट करने की विवियों पर परम्परागत वास्तु विज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान इत्यादि के साथ अनेक क्षेत्रों में हो रहे विनाशकारी प्रभाव को निरीक्षण अवलोकन करके लेखक ने हमारी आज की समस्याओं के मूल कारणों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। लेखक ने एक लेख ''रोग का परिहार'' (निदान परिवर्जनम्) में कहा गया है कि रोग को नष्ट करना ही रोग का सर्वश्रेष्ठ उपाय है। रोक के कारणों को दूर करना रोग को नष्ट करने का सबसे अच्छा तरीका है।

इस पुस्तक के लेखक भाई अतुल एक तेजस्वी युवक है। पूर्व जन्म के संस्कारों तथा इस जन्म के पुरुषार्थ की

शक्ति से वे इस सभ्यता एवं संस्कृति के मायाजाल में नहीं फसे। इतना ही नहीं मायाजाल की गलतियों को बताने की क्षमता उनकी बुद्धी में समाविष्ट है तथा मायाजाल को नष्ट करने की इच्छा शक्ति भी बतलाई गई है आज उन्होंने यह सांस्कृतिक मार्ग छोड़कर साधु जीवन का मार्ग स्वीकार किया है फिर भी उन्होंने इस मायाजाल की सभ्यता संस्कृति को समाप्त करने का जोश और पुरुषार्थ अभी छोड़ा नहीं है ऐसा व्यक्तित्व बहुत प्रशंसा का पात्र है। धारणा ही धर्म है, मनुष्य और समाज का जो पालन-पौषण करता है, उसी को धर्म कहते है। इस प्रकार के युगधर्म (सुकृत) भौतिकतावादी औद्योगिक सभ्यता संस्कृति का सामना करने एवं इसके साथ साक्षसी दर्शन शास्त्र (विकृत विचारधारा) को पूर्ण रुप से नष्ट करने में सहायक सिद्ध हो रहे है। इसके बगैर आज का समाज संभावित पालन-पोषण में समर्थ नहीं हो सकता है।

भाई अतुल के प्रति प्रेम और आदर का भाव रखकर उनके लघुभ्राता एवं उनके मित्रजन ने उनके सांसारिक जीवन में रहते समय लिखे गये इन लेखों के संकलन एवं प्रकाशन करने का जो दायित्व निभाया है, उस भावना का मैं आदर करता हूं, सम्मान करता हूं। इस भावना से उक्त भाई अतुल ने विचारों का प्रेम दिखाया है, वह विचार उनके अधिक अध्यापन, मनन, चिंतन और उसका अनुकरण करने में प्रेरकतत्व का कार्य करें। ऐसी शुभकामना मैं प्रकट करता हूं।

✻ याद रखो- भोगों और इन्द्रियों के वश में न होकर राग-द्वेष को निकालकर जब तुम मन-इन्द्रिय और शरीर को अपने नियंत्रण में कर लोगों और पूर्ण नियंत्रित इन्द्रियों के द्वारा विषयों का यथायोग्य भगवत्सेवा में सदुपयोग करोगे, तब तुमको भगवत्प्रसाद का स्वाद आयेगा, तुम्हारा चित्त प्रसन्न या निर्मल हो जायेगा, तब तुम्हारे सारे दुःखों का अन्त हो जायेगा और तुम्हारी प्रज्ञा सहज ही परमात्मा में प्रतिष्ठित हो जायेगी। तुम्हें असली जीवन का साक्षात्कार होगा और तुम बन्धन से सदा के लिये मुक्त हो जाओगे।

आत्मा एवं शरीर

✻ महावीरजी डांगी, झालरापाटन सिटी

सूत्रकृतांग सूत्र में कहा है- अण्णो जीवो अण्णं शरीरं आत्मा अलग है और शरीर अलग है। जैन धर्म की यह दृढ़ मान्यता है कि हर एक आत्मा में महान् ज्योति जल रही है, आनंद और अमर शांति का महासागर उसमें हिलोरे मार रहा है। जब आत्मा का चैतन्य जाग उठता है तो वह भक्त से भगवान, रागी से वीतरागी, लघु से महान् बन सकता है जिस प्रकार जल की उष्णता, अग्नि की शीतलता उसका स्वभाव नहीं है ठीक उसी प्रकार कषाय (क्रोध, मान, माया,लोभ) आदि भाव आत्मा का स्वभाव नहीं है। जो आत्मा सुदेव-सुगुरु व सुधर्म को नहीं पहचानती, धर्माराधना करने को ठीक नहीं समझती, भोग को सच्चा सुख मानती है, काम भोगों में मस्त रहती है, जिसने मोह की मंदिरा पी रखी है, लोभ का चश्मा लगा रखा है, मान हाथी पर जो बैठी है क्रोध, जिसका शस्त्र है और माया जिसका अस्त्र है, वह आत्मा रास्ता भूल गई है, भटक गई है, उसकी दुर्गति निश्चित है।

बंधुओं ! आत्मा शाश्वत है, शरीर नश्वर है। आज तक कोई प्राणी सशरीरी मोक्ष नहीं गया है, जो मूंछों पर बट लगाते थे, ऐसे पराक्रमी जो संसार को थर्राते थे, जो मल मल कर स्नान करते थे चंदन, इत्र-फूलेल से शरीर को महकाते थे, मणि मुक्ता और रत्न मालाओं से शरीर को सजाते थे वे भी शरीर, साधना सामग्री,धन दौलत सभी यहां पर छोड़कर चले गये।

बंधुओं ! कर्म ही आत्मा को चारों गति में भटकाता है, जन्म मरण के चक्कर में फंसाता है, भवसागर में गोता खिलाता है, जब तक यह कर्म मैल आत्मा से पृथक नहीं होता तब तक आत्मा सिद्ध बुद्ध और मुक्त नहीं बन सकती। संवर से नवीन कर्मो का आगमन रुकता है। संवर आत्मा के कर्म छिद्रों को बन्ध करता है, यदि किसी तालाब या बांध के छोटे छेद को तत्काल बन्द नहीं किया तो वह भविष्य में महाविनाश का कारण बन सकता है। कितना सुन्दर कहा है-Save your self-this is the base of Jain religion.

इस मानव देह के द्वारा आस्रव के द्वार बन्द कीजिये। संवर दया, पौषध, तप आराधना, धर्माराधना कीजिए जिससे आत्मा कर्म बोझ से हल्की बनेगी। अतः शांति से बैठकर सोचियें चिंतन कीजिये, अपने जीवन को धर्ममय सुन्दर बनाईये। कहा भी है- Life is Short Make is sweet ताकि कर्म कट सके और देह से मुक्ति होकर यह आत्मा शाश्वत स्थान को पा सके।

आओ जिन शासन प्रभावकों को जाने....

❇ धंधुका में राजा परमार के शासन में आबु भी तलेटी में 444 जिन मंदिर, 2999 शिवालय थे, 360 करोड़पति आबु के मंदिर हमेशा पूजा पढ़ाते थे।

❇ महाराजा कुमारपाल अपने दांतों की शुद्धि के लिये प्रतिदिन वीतराग स्त्रोत के 20 और योगशास्त्र के 12 इस प्रकार से 32 प्रकार का स्वाध्याय करते थे।

❇ पेथड़ शाह ने जब पहला व्रत ग्रहण किया था तो उसकी खुशी से एक सोना मोहरऔर लड्डू की प्रभावना की थी और जब ब्रह्मचर्य व्रत लिया तब 16 हजार द्रव्य महोत्सव किया। 18 लाख का खर्च किया, का उपयोग कर शत्रुंजय, जयपुर, बड्वाण, दौलताबाद आदि अनेक स्थान पर स्वर्ण कलश से सुशोभित 84 जिन मंदिर बनवाये, मांडवगढ़ में 300 जिन मंदिर का जीर्णोद्धार करवाकर स्वर्णकलश और ध्वजा चढ़ाई।

❇ पेथड़शाह ने गिरनार तीर्थ यात्रा के समय 22400 तोला सोना तीर्थ माल की बोली ली थी, आपने पालकी में बैठकर राजमहल जाते समय उपदेश माला ग्रंथ कंठस्थ किया था।

❇ कपिल केवली के दर्शन से 500 चोरों ने संयम लिया था। बप्पभट्ट सूरीजी के उपदेश से आम राजा ने गिरनार का संघ निकाला था इस संघ में एक लाख सुभट, एक लाख घोड़े, 700 हाथी, 20000 ऊंट, 3 लाख पाड़ा तथा 20 लाख श्रावक के परिवार थे।

❇ पूज्य वादिदेव सूरी ने साड़े तीन लाख लोगों को जैन बनाया था।

❇ सम्राट अशोक के पुत्र सम्पत्ति ने सवा लाख जिन मंदिर और 36 हजार जीर्णोद्धार और सवा करोड़नई प्रतिमा भरवाई थी।

❇ मंत्री पेथड़ शाह की धर्मपत्नी मंदिर जाते समय हमेशा सवा सेर स्वर्ण का दान करती थी।

❇ कुमारपाल राजा त्रिभुवनपाल विहार में प्रतिदिन 74 सामंतों तथा 1800 सौ करोड़पतियों के साथ अष्टप्रकार की पूजा करते थे, इनके द्वारा बनाये हुए 32 मंदिरजी की चैत्यपरिपाटी करके ही भोजन करते थे, चांदी की 125 ईंच के मूलनायक श्री नेमनाथ की प्रभु प्रतिमा रत्नों आदि से बनाई थी और एक जिनालय में 96 करोड़ सोना मेहर खर्च की थी।

❇ लंकापति रावण के महल में गृह मंदिर था उसमें मुनि सुव्रत स्वामी की नील रत्नों की प्रतिमा थी, रावण रोज जिन भक्ति करता था, रावण ने अष्टावत तीर्थ पर जिन भक्ति करते हुए तीर्थंकर नामकर्म का उपार्जन किया था।

❇ हंसराजा धार के पुत्र जगडूशाह ने श्री सिद्धाचल तीर्थ पर सवा करोड़ मूल्य के माणिक्य भेंट कर तीर्थ माला पहनी थी।

❇ सूरी सम्राट बप्पभट्ट सूरी हमेशा आकाशगामिनी विद्या के बल पर सिद्धारथ, गिरनार, मथुरा, भरुच तथा गोपालगिरी के दर्शन कर आने के बाद आहार पानी ग्रहण करते थे।

❇ आबू के पास उवरगांव में रहनेवाले पारस शाह के पुत्र देसणा शाह 14 करोड़ सोना मोहर धर्म में खर्च की।

❇ पालनपुर में रोज 45 मन चावल तथा 16 मन सुपारी आती थी जिनालय दर्शन के लिये रोज 84 श्रेष्ठी पालकी में बैठकर आते थे।

❇ श्रेणिक राजा प्रतिदिन जिस दिशा में प्रभु विचरण करते उस दिशा में सात पगले आगे जाकर सोने के साथियां करते थे।

❇ सम्प्रति राजा ने श्री आर्य रक्षित सूरीजी महाराजा की प्रेरणा से प्रतिदिन एक नया जिनमंदिर का खात मुर्हूत समाचार मिलने के बाद ही भोजन करते थे।

❇ श्री वस्तुपाल तेजपाल ने आबू में 125300000/- द्रव्य खर्च कर जिन मंदिर बनवाया उसका नाम लुणीगवसही है शत्रुंजय तीर्थ पर 18 करोड़85 लाख द्रव्य का खर्च किया गिरनार तीर्थ पर 12 करोड़80 लाख द्रव्य का खर्च किया।

❇ थराद के आंभु संघपति ने श्री शत्रुंजय के संघ में 12 करोड़सोना मोहर खर्च किये थे। 6 लाख 30 हजार पुस्तक लिखाई तथा 300 सधार्मिक को अपने जैसा बनाया था।

❇ मांडवगढ़में आचार्य श्री सोमसुन्दरसूरीजी महाराज व्याख्यान में भगवती सूत्र का वांचन करते उस समय जहां

गोयमां शब्द आता था, संग्राम सोनी एक सोना मोहर तथा उनकी माताजी पाव सोना मोहर तथा पत्नी थी पाव सोना मोहर अर्पित करती थी।

❊ भारत महाराजा के संघ में 998984000 संघपति तथा सगर चक्रवर्ती के समय 509575000 संघपति और विक्रम राजा के समय 8400 संघपति थे।

❊ श्रेणिक राजा अनार्थ मुनि के सम्पर्क में आने से समकित पाये थे, आप वीर प्रभु के परम भक्त और क्षायिक समकिती जीव थे जब वनमाली में वीर प्रभु पधारे तो वधावणी में करोड़ प्रमाण में धन और सोना दिया।

❊ मंत्री पेथड़ शाह के पिता देदर शाह ने काश्मीर के एक व्यापारी के पास से साढ़े पचास मन केशर खरीद कर 49 मन से केशर का उपाश्रय का बनाया और बाकी की दो मन केशर अलग-अलग मंदिरजी में भेंट दी थी।

❊ माधव नाम का सुभट एक दिन में 40 मील के अधिक अंतर से मंत्री पेथड़ शाह को धर्मघोष सूरीजी महाराज के आगमन की सूचना दी थी इससे प्रसन्न होकर पेथड़ शाह ने सुभट माधव को सोने की जीभ भेंट की और हीरा के 32 हजार द्रव्य खर्च कर पूरे मांडवगढ़ नगर को शानदार रुप से सजाया था।

❊ जब कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्यश्री का अग्नि संस्कार हुआ वहां हजारों की संख्या में लोग एकत्रित हुए थे, अग्नि संस्कार स्थल से राख लेने के लिये इतनी पड़ापड़ी हुई कि राख लेने से उस स्थान पर बहुत बड़ा गहरा गड्डा बन गया था।

❊ श्रेणिक राजा आनेवाली चौबीसी के तीसरे आरे में निवासी पखवाड़ियां बीत जाने के बाद शतहवार नगर में समृद्धि राजा की भद्रा नाम की रानी के गर्भ से जन्म लेंगे।

❊ श्री संभवनाथ परमात्मा के तीसरे भव में तीर्थंकर नाम कर्म का उपार्जन किया था इसका मुख्य कारण प्रभु के द्वारा दुकाल में की गई साधर्मिक भक्ति था।

❊ देवगिरी में जगसिंह नाम के सेठ से 360 नौकरों को अपने जैसा धनवान बनाया इससे गांव में रोज एक-एक कर सभी के द्वारा स्वामी वात्सल्य होता था जिस पर प्रतिदिन का खर्च 73 टांक होता था।

❊ मधु (शहद) की एक बूंद मात्र खाने से सात गांवों के ''जलाने के बराबर'' पाप लगता है।

❊ श्रावक के द्वार के ऊपर मध्य भाग में जिन प्रतिमा होना चाहिये यह मंगल चैत्य कहलाता है। मथुरा नगर में प्रत्येक घर के द्वार या जिन प्रतिमा की स्थापना करने में आई थी।

❊ भरत राजा ने अपने 500 पुत्रों तथा 700 प्रपुत्रों की दीक्षा दी थी।

❊ श्रीकृष्ण महाराजा और चेटक राजा का यह नियम था कि अपनी संतान की शादी नहीं करना अपनी पुत्रीयों को उन्होंने दीक्षा दिलवाई थी।

❊ नलराजा के पुत्र कुबेर की शादी हुई थी कि ज्ञानियों के वचन से यह जानकर कि उसकी आयु नवपहर की बाकी है तो उसने दीक्षा अंगीकार कर सवार्थ विमान में पैदा हुआ था।

❊ राजा दवीर्य अपने दरवाजे आनेवाली सभी साधर्मिक को भोजन करवाकर उसके बाद भोजन करने की प्रतिज्ञा ले रखी थी, एक बार इन्द्र महाराजा ने उनकी परीक्षा लेने के लिये --- दिन तक साधर्मिक को अपनी और से कुंडल दिये थे।

❊ आचार्य तुलसी (तेरापंथ) के दादा श्री शत्रुंजय महातीर्थ की प्रशंसा की इस पर उनके एक भक्त ने दादा के चरणों में महा मूल्यवान मणि अर्पित की थी वह मणि पेढ़ी पर विद्यमान है।

❊ भाई मुनि को घर लाने के लिये गया हुआ भाई फल्गु मित्र उनके साथ ही साधु बन गया था।

❊ साधुओं को रात में मारने गये डाकू ने साधु भगवंत को भूमि का परिमार्जन करते देखा तो डाकू भी साधु बन गया।

❊ शराब के बिना नहीं रहनेवाला मालवी सत्संग के प्रभाव से श्री शत्रुंजय महातीर्थ का आधिष्ठायक देव कपडयश बना।

❊ 18 देश के मालिक कुमारपाल राजा जयताक नाम का लुटारा था उनके जीवन का परिवर्तन करनेवाले आचार्यश्री यशोभद्रसूरीजी महाराजा थे।

❊ अभयकुमार जैसे कल्याण मित्र के सत्संग में आने से अनार्थ देश में जन्म लेनेवाले आद्रकुमार ने दीक्षा ली थी। आद्रकुमार ने कसाई के लड़के सुलस को धर्मात्मा बनाया था।

❊ विश्वास रखिए भगवान की ओर से हमारे लिए जो फैसला किया गया है वह सर्वोत्तम ही है...!!

पुण्यतिथि पर विशेष आलेख:-

डॉ. सुभाष जैन

मेरे प्रेरणापुंज गुरुदेव श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा

किसी महापुरुष के उद्भव की जीवन कहानी जो धार्मिक क्रांति के द्वारा जन मन को आंदोलित कर ऐसा परिवर्तनता दे जिससे जनमानस के मन धार्मिक श्रद्धा के साथ जीवन व्यवहार के नैतिक मूल्यों के प्रति भी आदर हो तथा लोगों का जीवन में सदाचार की ओर प्रवृत्त हो जाये इस विषमकाल और विपरीत परिस्थिति में बुजुर्ग ही नहीं युवाओं के तन मन में अनुठी धार्मिक क्रांति लाने का काम अपने जीवनकाल में मेरे प्रेरणा पुंज पूज्यपाद गुरुदेव मालवभूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा ने किया था उसमें जो सम्मिलित होने के साथ ऐसे अनेकोनेक घटनाक्रम का भी प्रत्यक्षदर्शी रहा जो कहीं नहीं जाते थे वे एक बार गुरुदेव के पास आ जाने के बाद फिर कहीं नहीं जाते थे, गुरुदेव के ही हो जाते थे। अनेक ऐसी बातें जिससे जीवन में कठिनाईया आ जाती थी उस समय मेरे जीवन के दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदलनेवाले यदि कोई थे तो मेरे गुरुदेव ही थे। पूज्यश्री ने मेरे ही नहीं अनेकों के दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदला था फिर भी पूज्यश्री यहीं कहते थे कि मैंने कुछ नहीं किया। मैं कह सकता हूं कि जब-जब संसारीवालों से या कामकाज के कारणों से मेरा आत्मबल कमजोर होता था तब तब गुरुदेव मेरे लिये प्रकाश की एक उज्जवल स्वर्णिम रश्मि बनकर जीवन में उजाला कर देते थे, पूज्यश्री ने मुझे अपने चरणों में स्थान दिया मुझे अपने निकट समझा, जिस तरह एक छोटे बच्चे को अपनी माँ की याद आती है वैसे ही मुझे भी आज मेरे गुरुदेव की याद आती है। गुरुदेव ने दूसरे देवलोक में अपना स्थान बनाकर मेरे जैसे कितने ही गुरु भक्तों को अपने सानिध्य से दूर कर दिया फिर भी पूज्यश्री की शिक्षाएं आज मेरे जीने का आधार बन गई है। मेरे साथ गुरुदेव के वार्तालाप और घटित घटनाओं को मैं अपने निकट के लोगों को बतलाना रहता हूं उससे लगता है कि गुरुदेव आज भी मेरे आसपास ही है। यह निश्चित है कि पूज्यश्री मेरे जीवन में नहीं आते तो मैं ज्ञानहीन, दिशाहीन धर्म विहिन ही रह जाता।

सिर्फ मैं ही नहीं हर व्यक्ति के जीवन में गुरु का वैसे ही महत्व होता है जैसे हमारे सौर मण्डल के नौ ग्रहों में सूर्य का महत्व है जिस तरह पृथ्वी से लेकर मंगल, बुध और शुक्र से लेकर सभी ग्रह अपने गुरु सूर्य का चक्कर लगाते रहते है और उसी से ऊर्जा, प्रकाश ग्रहण करते है यदि उन्हें सूर्य का प्रकाश ऊर्जा नहीं मिले तो वे सभी ग्रहों का अंधकार छा जायेगा ठीक यही स्थिति आज गुरुदेव के चले जाने के बाद हमारी हो गई है। यह तो गुरुदेव की कृपा है कि पूज्यश्री की शिक्षा का प्रकाश अभी जीवन में बना हुआ है तो जीवन गतिशील है, हम जो कुछ है अपने गुरुदेव की वजह से ही है हमें अपने गुरु की दिव्य कृपा से ही जीवन प्रकाश और जीवन जीने की शक्ति मिल रही है। मैं तो आज भी आपश्री के पुण्य स्मरण से जीवन शक्ति पाकर चल रहा हूं।

गुरु के बताये पथ को हमें कभी नहीं भूलना है, मैं तो आप सबसे यही कहूंगा कि अगर आपने अपने जीवन में कोई सच्चा गुरु बनाया हो तो उनके बतलाये पथ को कभी भी विस्मृत मत करना क्योंकि यही एक ऐसा राजमार्ग है जिस पर चलकर हम आध्यात्मिक और आत्मिक शांति पा सकते है। गुरुदेव का हृदय इतना सरल, सहज और सौम्य था कि पूज्यश्री हमारी त्रुटियों और जाने-अनजाने हुई गलतियों को अनदेखा कर देते थे और हित शिक्षा देकर क्षमा कर देते थे।

मैंने भगवान को तो नहीं देखा है लेकिन मुझे सदैव गुरु को देखकर भगवत्ता का एहसास होता था, मैं गुरुदेव का स्मरण करता हूं (वे रोज ही स्मरण में रहते है) तो यह प्रतीत होता है कि मैंने भगवान को याद किया है, जब भी गुरुदेव को देखता था तो लगता था कि परमात्मा के दर्शन कर रहा हूं, मेरे जीवन पर इतना गुरु ऋण है कि एक जन्म तो क्या अनेक जन्मों में भी मैं गुरु ऋण को नहीं चुका सकता हूं, मुझे न जाने क्यों इस अनुभूति पर आश्चर्य होता है कि जैसे-जैसे जीवन बीतता जा रहा है वैसे-वैसे गुरुवर के प्रति मेरा प्रेम प्रगाढ़ होता जा रहा है। पूज्यश्री के जाने के बाद गुरुदेव के प्रति भक्तों का विश्वास और दृढ़ होने के साथ गुरुदेव के प्रति लोगों की श्रद्धा भक्ति में और वृद्धि हुई है। ऐसा मैंने अनुभव किया है। पूज्य गुरुदेव के और निकट, समीप पूज्यश्री के सानिध्य का अनुभव लोग कर रहे हैं।

पूज्यपाद गुरुदेव की 8 वीं पुण्यतिथि पर पूज्यश्री के प्रति नतमस्तक होते हुए संकल्प लेता हूं कि आपश्री के द्वारा दिखाये हुए सद्पथ और संस्कारों तथा हित शिक्षा को आत्मसात करते हुए सदैव आपश्री के बतलाये पथ पर चलकर जीवन जीता रहूंगा। मेरे अनंतों प्रणाम आपको।

बंटवारा

पप्पा ! आपने आज सुबह संपत्ति का बंटवारा करने का जो निर्णय किया है उसके बारे में मुझे आपसे इतना ही कहना है कि हम तीन भाईयों के बीच बंटवारा किस प्रकार हो, यदि इसका निर्णय आपको ही करना हो तो मुझे मान्य नहीं होगा।वालकेश्वर के एक विशाल फ्लेट में, मात्र 24 वर्ष के छोटे बेटे ने रात के समय अपने पिताजी को साफ तौर पर कह दिया।

तो यह निर्णय कौन करेगा ?

मैं करुंगा। तूं ?

हाँ पर संपत्ति तो मेरी स्वयं की है। किस बेटे को कितनी संपत्ति दी जाये, यह अधिकार मेरा है। मेरे इस अधिकार को अमान्य करने के पीछे कारण क्या है ?

मुझे आपकी निष्पक्षतावृत्ति के बाबत शंका है। - अपने ही बेटे के मुंह से यह बात सुनकर बाप स्तब्ध रह गया। वर्षो प्रेम, स्नेह और वात्सल्य से 17-17 सदस्यों के परिवार को एक ही रसोई में खाना खिलाते रहने में जिस बाप ने सफलता पाई थी, उसी बाप को अपने बेटे के मुंह से अब ऐसा आक्षेप सुनने का मिले तब उसे जो आघात लगा होगा उसे वही समझ सकता है जो बाप के स्थान पर हो। फिर भी बाप ने स्वस्थता बनाए रखते हुए पूछा- मेरी वृत्ति पक्षपाती होने का तुम्हारे पास क्या आधार है।

देखो पप्पा ! मुझे आपके साथ किसी बहस में नहीं पड़ना है। परन्तु, मैंने आपसे जो बात कह दी है उसमें मुझे कोई फेर बदल नहीं करना है। यदि संपत्ति का बंटवारा करना ही हो तो इसका निर्णय इस घर में मेरे सिवाय कोई नहीं कर सकता। इतना कहकर बेटा अपने कमरे में चला गया।

घर का शांत वातावरण भंग हो गया। बाप ने बड़े बेटे से बात की। बड़े बेटे ने पल का विलम्ब किये बगैर कह दिया पप्पा! इसमें कौन सी बड़ी बात है ? तुम छोटे से कह दो कि- वह जिस प्रकार भी बंटवारा करेगा वह हम सबको मान्य होगा। आखिर वह है तो हमारा भाई न ? आपके निर्णय के बारे में भले ही उसके मन में शंका हो, परन्तु उसके निर्णय के बारे में इस घर में मुझे तो कोई शंका नहीं है।

बड़े बेटे की यह बात सुनकर बाप की आंखों में आंसू आ गये। कहां बड़े के हृदय की उत्तमता और छोटे के हृदय की यह अधमता। अन्ततः दुःखी मन से बाप ने छोटे बेटे की बात स्वीकार ली।

रात के करीब नौ बजे तीनों बेटे से कहा- मुझे (अपनी) एक करोड़ की संपत्ति तुम तीनों के बीच बांटनी है और यह बंटवारा किस प्रकार हो इस बारे में निर्णय तुम्हारा यह छोटा भाई अभी करेगा।

पलभर की भी देर किये बगैर छोटे ने अपना निर्णय जाहिर कर दिया- जिस भाई की जितनी उम्र है उसे पप्पा उतने लाख रुपये दे दें। इस निर्णय को सुनकर सब स्तब्ध हो गये। पिता की आंखों से गंगा-जमुना बरसने लगी। तुम यह क्या कह रहे हो ? वे इतना ही बोल पाये।

पप्पा ! यदि संपत्ति के बंटवारे का अधिकार आपके हाथ में रखा होता तो आप हम तीनों भाईयों को बराबर-बराबर रकम दे देते। जो धंधा आपने शुरु किया है, उसे बड़े भाई ने फैलाया है और मंझले ने संभाला है। इस धंधे में प्रविष्ट हुए बगैर मुझे इसमें हुई कमाई का समान हिस्सा मिल जाये, यह बात मुझे मंजूर नहीं थी और इस दृष्टि से ही मैंने संपत्ति के बंटवारे के आपके अधिकार को चुनौती दी थी। पप्पा ! मेरे इस बर्ताव से आपको पहुंचे दुःख के लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूं परन्तु आप मेरे इस निर्णय पर सहमति की मोहर लगा दो ताकि घर के वातावरण में पूर्ववत् प्रसन्नता छा जाये। बेटे के इन शब्दों से बाप की आंखें हर्षाश्रुओं से छलक उठी।

बड़े बेटे की उम्र 40 वर्ष, उसे 40 लाख, मंझले बेटे की उम्र 34 वर्ष की थी, उसे 34 लाख और छोटे बेटे की उम्र 24 वर्ष की थी उसे 24 लाख। बाप को लगा कि- दिल का बंटवारा हुए बिना संपत्ति का बंटवारा करने में छोटे ने जो सफलता पायी है वह मुझे न मिलती, यदि बंटवारा करने का अधिकार मैंने अपने ही पास रखा होता। यह मेरा सद्भाग्य है कि मैं ऐसे गुणवान बेटों का बाप हूं।

❋ श्रीमत् अनंत चतुस्टस्थित भगवंत का और उस जयवंत धर्म का सदैव आश्रय करना चाहिये जिसमें अन्य कोई सामर्थ्य नहीं है ऐसे अशक्त और अबुध मनुष्य ने भी उस आश्रय के बल से परम सुख के हेतु ऐसे अद्‌भूत फलों को पाया है, पाता है और पाएगा । इसलिए निश्चय और आश्रय ही कर्त्तव्य नहीं है ।

भगवत भक्ति का स्वरुप एवं माहात्म्य

जब तक साधक का संसार से सम्बन्ध रहता है, तब तक उसका भगवान् से सम्बन्ध नहीं होता। संसार से और शरीर से सब प्रकार का सम्बन्ध छोड़कर एक मात्र भगवान् से सम्बन्ध जोड़ लेना, भगवान् के सिवा किसी से कोई नाता न रहना-यही तो भक्ति है। दो सम्बन्ध एक साथ नहीं रह सकते। लड़की जब पिता के घर से सर्वथा सम्बन्ध छोड़ती है, तब पति के घर से सम्बन्ध होता है। जब साधक का शरीर और संसार से सम्बन्ध ही नहीं रह जाता, तब कोई वस्तु या परिस्थिति उसके लिये आवश्यक कैसे हो सकती है और वह किसी प्रकार की कामना कर भी कैसे सकता है। जो वस्तुओं की कामना करता है, वह तो वास्तव में उन वस्तुओं का ही भक्त है, ईश्वर का नहीं।

भगवान् में पूर्ण विश्वास और नित्य नया प्रेम हो-इसी का नाम भक्ति है।

साधक को चाहिये कि प्रभु को अपना समझे, उन पर दृढ़ विश्वास करें, विश्वास में विकल्प न आने दे। शरीर, मन, इन्द्रियां और बुद्धि को तथा अपने-आपको पूर्णतया भगवान् के समर्पण करके सब प्रकार से उन पर निर्भर हो जाय। उन पर पूरा भरोसा करें।

भगवान् पर पूरा भरोसा होने पर ही समर्पण होता है। समर्पण करने के बाद जो यह देखना है कि कुछ नयापन आया या नहीं, यही भरोसे की कमी है।

आश्चर्य की बात तो यह है कि- मनुष्य संसार पर जितना भरोसा करता है, उतना भगवान् पर नहीं करता। जैसे कहीं जानेवाला यात्री पहले से गाड़ी में अपना स्थान सुरक्षित कर लेता है, तो उसका यह भरोसा रहता है कि ठीक समय पर स्थान अवश्य मिल जायेगा, अतः वह निश्चिन्त हो जाता है, यद्यपि उसमें अनेकों विघ्न भी आ सकते हैं। विघ्न असंभव नहीं, तो भी उस पर भरोसा कर लेता है। संसार पर भरोसा करके बहुत बार धोखा खाया है एवं भगवान् पर भरोसा करनेवाले को कभी धोखा नहीं हुआ-यह मानते हुए भी मनुष्य भगवान् पर निर्भर नहीं होता, इससे बढ़कर दुःख और आश्चर्य क्या होगा ?

मनुष्य स्वयं अलग रहकर अपने मन, बुद्धि और इन्द्रियों को भगवान् में लगाना चाहता है, यहां से ही भूल होती है। प्रेम का संबंध साधक से है न कि उसके मन, इन्द्रिय और

✻ स्वामी श्री शरणानन्दजी महाराज

बुद्धि से। प्रेम मार्ग में चलनेवाला पहले तो अपने को अपने प्रियतम के प्रेम की लालसा और बाद में प्रेम समझता है, प्रेमी प्रेम में विलीन हो जाता है। प्रेम और प्रेमी में भिन्नता नहीं रहती। अतः प्रेम मार्ग के पथिक के जीवन में भगवान का प्रेम, भरोसा और कृपा सदा सजीव बने रहना चाहिये, भाव की शिथिलता नहीं होनी चाहिये।

मन, बुद्धि और इन्द्रियां तो अहं की विभूतियां है, उनमें प्रेम नहीं होता। प्रेम अहं में होना चाहिये, अहं में प्रेम की प्रबलता होने से मन, बुद्धि और इन्द्रियां- सब उसी में विलीन हो जाते हैं। वे अहं के भाव का विरोध नहीं करते।

साधक को ध्यानपूर्वक इस बात का मनन करना चाहिये कि-मैं सचमुच क्या चाहता हूं। मेरी वास्तविक आवश्यकता क्या है जिसके न होने पर साधक रह सकता है, जिसका वियोग अनिवार्य है, वह उसकी आवश्यकता नहीं हो सकती। सच्ची आवश्यकता उसी की है, जिसके बिना वह नहीं रह सकता, जो कभी उससे अलग नहीं होता। सोचने पर यदि यह ज्ञात हो कि ऐसा तो एकमात्र मैं स्वयं ही हूं तो विचार करना चाहिये कि क्या कभी मैंने अपने में रमण किया या मैं संसार में ही रमण करता रहता हूं, तब ज्ञात होगा कि संसार में ही रमण करता रहा हूं। फिर विचार करने पर मालूम होगा कि जो अनन्त नित्य-सौंदर्य और अनन्त नित्य-रस का भण्डार है, उसी की वास्तविक आवश्यकता है, वह है जीव का नित्य साथी- एक मात्र परमेश्वर। वह कभी भी जीव का साथ नहीं छोड़ता। जीव स्वयं ही संसार को अपनाकर उसे भूल गया है, उससे विमुख हो गया है।

यह मालूम होने पर साधक को मान लेना चाहिये कि जिसकी मुझे आवश्यकता है, उससे मेरी देशकाल की दूरी नहीं है, अतः उसकी प्राप्ति के लिये यह धारणा करना कि अमुक स्थान में जाने पर या अमुक समय में मेरी आवश्यकता की पूर्ति होगी, सर्वथा प्रमाद है। उसकी प्राप्ति वर्तमान में अभी हो सकती है। मेरे प्रमाद ने ही, मेरी भूल ने ही मुझे उससे विमुख कर रखा है।

जिसको अपना मानकर मैंने अपना सम्बन्ध जोड़ रखा है, वे शरीर, इन्द्रियां, मन, बुद्धि एवं माता-पिता, भाई-बंधु और पति-पत्नी आदि तथा समस्त पदार्थ सभी अनित्य हैं।

अतः इनका वियोग अनिवार्य है। इनको अपना मानकर, इन पर विश्वास करके मैं अपने प्रभु से विमुख हो गया हूं।

यह निश्चय कर लेने के बाद साधक को चाहिये कि जिसकी उसे वास्तविक आवश्यकता है, उस परम प्रियतम प्रभु को ही अपना माने, उसी पर विश्वास करें, उसी से प्रेम करें, उसके सम्मुख हो जाय, एक मात्र उससे ही अनन्य सम्बन्ध रखे और निरन्तर उसी का स्मरण करें।

✻ ✻ ✻

वे हमारे प्रियतम प्रभु असीम है, अनन्त है। असीम का वर्णन नहीं हो सकता परन्तु उनको प्राप्त किया जा सकता है। वे जीव को उसके साधन से नहीं, किंतु स्वयं अपनी कृपा शक्ति से द्रवित होकर मिलते हैं।

जीव का स्वभाव तो बालक-जैसा है और प्रभु का स्वभाव माँ के सदृश। जब यह जीव बालक की भांति प्रभु को पाने के लिये व्याकुल होकर रोने लग जाता है, तब उनमें करुणा उत्पन्न हो जाती है और वे जीव को निहाल कर देता हैं। जगत् एक खिलौना है। जब तक जीव बालक की भांति इस जगत् रुप खिलौने से खेलता रहता है, इसे प्रभु के प्रेमरस की भूख नहीं लगती, उसके लिये यह व्याकुल नहीं होता, तब तक भगवान् भी तमाशा देखते रहते हैं, उसे मिलते नहीं। पर जब साधक को बालक की भांति भूख लग जाती है, अर्थात् जैसे भूख लगने पर बालक माँ का दूध पीने के लिये व्याकुल जाता है, खिलौने का मोह छोड़कर, उसको फेंककर माँ को पुकारने लग जाता है, वैसे ही जब प्रभु के प्रेमरस की भूख लग जाती है और इस जगत्रुप खिलौने से विरक्त होकर साधक प्रभु के प्रेमरस के लिये व्याकुल होकर उसको पुकारने लगता है, तब प्रभु भी करुणाभाव से व्याकुल हो उठते हैं फिर विलम्ब नहीं कर सकते। वे तत्काल ही प्रेमी साधक को अपना प्रेमरस प्रदान कर देते हैं।

सत्पुरुषों का केवल अंतर्मुख होने का मार्ग ही सब दुःखों के क्षय का उपाय है परन्तु वह किसी किसी जीव की ही समझ में आता है। महान पुण्य के योग से, विशुद्ध मति से, तीव्र वैराग्य से और सत्पुरुष के समागम से वह उपाय समझने योग्य है। उसके समझने का अवसर केवल यह मनुष्य देह है और वह भी अनियमितकाल के भय से ग्रस्त है उसमें प्रमाद होता है यही खेद और आश्चर्य है।

बुजुर्गो का सम्मान करें यह हमारी धरोहर है

पिता जिद कर रहा था कि उसकी चारपाई गैलेरी में डाल दी जाये। बेटा परेशान था। बेटा परेशान था। बहू बड़बड़ा रही थी, कोई बुजुर्गो का अलग कमरा नहीं देता। हमने दूसरी मंजिल पर कमरा दिया, सब सुविधाएं है, नौकरानी भी दे रखी है, पता नहीं सत्तर की उम्र में सठिया गए है पिता कमजोर और बीमार है। जिद कर रहे है तो उनकी चारपाई गेलेरी में डलवा ही देता हूं निकित ने सोचा। पिता की इच्छा पूरी करना उसका स्वभाव था।

अब पिता की चारपाई गेलेरी में आ गई थी। हर समय चारपाई पर पड़े रहने वाले पिता टहलते टहलते गेट पर पहुंच जाते। कुछ देर लॉन में टहलते। लॉन में खेलते नाती पोतो से बातें करते, हंसते-हंसते बोलते और मुस्कुरातें। कभी-कभी बेटे से मनपसंद खाने की चीजें लाने की फरमाईश भी करते। खूद खाते, बहु-बेटे और बच्चों को भी खिलाते धीरे-धीरे उनका स्वास्थ्य अच्छा होने लगा था।

अशुल बोला- दादा ! मेरी बॉल फेंको। गेट में प्रवेश करते हुए निकित ने अपने पांच वर्षीय बेटे की आवाज सूनी तो बेटा अपने बेटे को डांटने लगा। अंशूल बाबा बुजुर्ग है, उन्हें ऐसे कामों के लिए मत बोला करो। पापा ! दादा रोज हमारी बॉल उठाकर फेकते है, अंशूल भोलेपन से बोला निकित क्या...?

निकित ने आश्चर्य से पिता की तरफ देखा ! बेटा तूमने उपर वाले कमरे में सुविधाएं तो बहुत दी थीं लेकिन अपनों का साथ नहीं था। तुम लोगों से बातें नहीं हो पाती थी। जब से गेलेरी में चारपाई पड़ी है। निकलते बैठते तुम लोगों से बातें हो जाती है। शाम को अंशुल पाशीका साथ मिल जाता है। पिता कहे जा रहे थे निकित सोच रहा था। बुजुर्गो को शायद भौतिक सुख सुविधाओं से ज्यादा अपनों के साथ की जरुरत होती है। बुजुर्गो का सम्मान करें। यह हमारी धरोहर है। यह वो पेड़है जो थोड़ेकड़वे है, लेकिन इनके फल बहुत मीठे है और इनकी छांव का कोई मुकाबला नहीं। अपने बुजुर्गो का ख्याल हर हाल में अवश्य रखें।

✻ परिणाम तो जिसका अमृत ही है, परन्तु प्रारंभिक दशा में जो कलकूट विष की तरह व्याकुल कर देता है, ऐसे श्री संयम को नमस्कार हो।

बनजारा

✻ ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी म.

एक बनजारा था। वह बैलों पर मेट (मुल्तानी मिट्टी) लादकर दिल्ली की तरफ आ रहा था। रास्ते में कई गांवों से गुजरते समय उसकी बहुत-सी मेट बिक गयी। बैलों की पीठ पर लदे बोरे आधे तो खाली हो गये और आधे भरे रह गये। अब वे बैलों की पीठ पर टिकें कैसे ? क्योंकि भार एक तरफहो गया ! नौकरों ने पूछा कि क्या करें ? बनजारा बोला- ''अरे ! सोचते क्या हो, बोरों के एक तरफ रेत (बालू) भर लो। यह राजस्थान की जमीन है, यहां रेत बहुत है।'' नौकरों ने वैसा ही किया। बैलों की पीठ पर एक तरफ आधे बोरे में मेट हो गयी और दूसरी तरफ आधे बोरे में रेत हो गयी।

दिल्ली से एक सज्ज्ञन उधर आ रहे थे। उन्होंने बैलों पर लदे बोरों में से एक तरफ रेत झरते हुए देखी तो वे बोले कि बोरों में एक तरफ रेत क्यों भरी है ? नौकरों ने कहा- संतुलन करने के लिये। वे सज्जन बोले- अरे ! यह तुम क्या मूर्खता करते हो ? तुम्हारा मालिक और तुम एक-से ही हो। बैलों पर मुफ्त में ही भार ढोकर उनको मार रहे हो ! मेटके आधे-आधे दो बोरों को एक ही जगह बांध दो तो कम से कम आधे बैल तो बिना भार के खुले चलेंगे। नौकरों ने कहा कि आपकी बात तो ठीक जंचती है, पर हम वहीं करेंगे, जो हमारा मालिक कहेगा। आप जाकर हमारे मालिक से यह बात कहो और उनसे हमें हुक्म दिलवाओ। वह मालिक (बनजारे)- से मिला और उससे बात कही। बनजारे ने पूछा कि आप कहां के हैं ? कहां जा रहे हैं ? उसने कहा कि मैं भिवानी का रहनेवाला हूं। रुपये कमाने के लिये दिल्ली गया था। कुछ दिन वहां रहा, फिर बीमार हो गया। जो थोड़रुपये कमाये थे, वे खर्च हो गये। व्यापार में घाटा लग गया। पास में कुछ रहा नहीं तो विचार किया कि घर चलना चाहिये। उसकी बात सुनकर बनजारा नौकरों से बोला कि इनकी सम्मति मत लो। अपने जैसे चलते हैं, वैसे ही चलो। इनकी बुद्धि तो अच्छी दिखती है, पर उसका नतीजा ठीक नहीं निकलता। अगर ठीक निकलता तो ये धनवान हो जाते। हमारी बुद्धि भले ही ठीक न दिखे, पर उसका नतीजा ठीक होता है। मैंने कभी अपने काम में घाटा नहीं खाया।

बनजारा अपने बैलों को लेकर दिल्ली पहुंचा। वहां उसने जमीन खरीदकर मेट और रेत दोनों का अलग-अलग ढेर लगा दिया और नौकरों से कहा कि बैलों को जंगल में ले जाओ और जहां चारा-पानी हो, वहां उनको रखो। यहां उनको चारा खिलायेंगे तो नफा कैसे कमायेंगे ? मेट बिकनी शुरु हो गयी। उधर दिल्ली का बादशाह बीमार हो गया। वैद्य ने सलाह दी कि अगर बादशाह राजस्थान के धीरे (रेत के टीले)- पर रहें तो उनका शरीर ठीक हो सकता हैं। रेत में शरीर को निरोग करने की शक्ति होती है। अतः बादशाह को राजस्थान भेजो।

राजस्थान क्यों भेजें ? वहां की रेत मंगा लो !

ठीक बात है। रेत लाने के लिये ऊँट को भेजो।

ऊँट क्यों भेजें ? यहीं बाजार में रेत मिल जायेगी।

बाजार में कैसे मिल जायेगी ?

अरे ! दिल्ली का बाजार है, यहां सब कुछ मिलता है ! मैंने एक जगह रेत का ढेर लगा हुआ देखा है।

अच्छा ! तो फिर जल्दी रेत मंगला लो।

बादशाह के आदमी बनजारे के पास गये और उससे पूछा कि रेत क्या भाव है ? बनजारा बोला कि चाहे मेट खरीदो, चाहे रेत खरीदो, एक ही भाव है। दोनों बैलों पर बराबर तुलकर आये हैं। बादशाह के आदमियों ने वह सारी रेत खरीद ली। अगर बनजारा दिल्ली से आये उस सज्ज्ञन की बात मानता तो ये मुफ्त के रुपये कैसे मिलते ? इससे सिद्ध हुआ कि बनजारे की बुद्धि ठीक काम करती थी।

इस कहानी से यह शिक्षा लेनी चाहिये कि जिन्होंने अपनी वास्तविक उन्नति कर ली है, जिनका विवेक विकसित हो चुका है, जिनको तत्व का अनुभव हो चुका है, जिन्होंने अपने दुःख, संताप, अशांति आदि को मिटा दिया है, ऐसे संत महात्माओं की बात मान लेनी चाहिये क्योंकि उनकी बुद्धि का नतीजा अच्छा हुआ है। जैसे, किसी ने व्यापार में बहुत धन कमाया हो तो वह जैसा कहे, वैसा ही हम करेंगे तो हमें भी लाभ होगा। उनको लाभ हुआ है तो हमें लाभ क्यों नहीं होगा ? ऐसे ही हम संत-महात्माओं की बात मानेंगे तो हमारे को भी अवश्य लाभ होगा। उनकी बात समझ में न आये, तो भी मान लेनी चाहिये।

जड़को सींचों

एक अच्छे परिवार की लड़की पढ़-लिखकर होशियार हुई। विवाह होने के बाद ससुराल गई और कुछ समय वहां रहकर वापस अपने माँ-बाप के घर आई। घर पर उसे माँ-बहनें और सखियां, ससुराल के हाल पूछने लगी-

तुम्हारी सास कैसी है ?

मैं अच्छी हूं।

तुम्हारे ससुर कैसे है ? सब ने सोचकर पूछा।

उत्तर मिला- मैं अच्छी हूं।

सब तंग आ गई। कहने लगी- हम यह तो अच्छी तरह जानते है कि तुम अच्छी हो। पर हम तो तुम्हारे ससुराल के हाल जानना चाहती है। लड़की ने कहा- जो स्वयं अच्छा है, उसके लिये सारा संसार अच्छा है और जो स्वयं बुरा है उसके लिये सारा संसार बुरा है। इसलिए मेरे ससुराल के सभी लोग बहुत अच्छे है। संसार तो एक दर्पण है। उसके सामने जैसा मुंह आयेगा वैसे ही दर्शन होंगे। यदि दूर कोई घूसा तानेगा तो, दर्पण में भी घूसा तनेगा और यदि कोई इधर मुंह काला कर लेगा तो उधर भी मुंह काला ही दिख पड़ेगा। इसी तरह से इस संसार में हमारे ही मन का प्रतिबिम्ब पड़ता है। इसलिए उस लड़की ने बड़ेपते की बात कही। यदि वह स्वयं अच्छी है तो उसके लिए झोपड़ी भी महल और यदि वह स्वयं बुरी है तो, महल भी झोपड़ी की तरह वीरान हो जायेगी।

उक्त कथन का सार इतना ही है कि दुनिया में जो कुछ है, मनुष्य स्वयं है। इसलिए स्वयं को पहचानना और ठीक रखना बहुत आवश्यक है। यही जीवन वृक्ष की जड़है। जड़ को सींचना चाहिए, पत्तों को सींचने से काम नहीं चलेगा, पत्तों को सींचने से वृक्ष नहीं पनपेगा। जड़को पानी मिलने से सारा वृक्ष पल्लवित हो जायेगा, इसी प्रकार यदि मनुष्य और मनुष्यता सुरक्षित रही तो सारे धर्म और सारी जातियां हरी-भरी रहेगी। यदि मनुष्यता का मूल ही सूख गया तो सब कुछ सूख जायेगा, स्वाहा हो जायेगा। आज मंदिर, चर्च, स्थानक, आश्रम आदि खूब सींचा जा रहा है फिर भी जीवन दुःखी है। इसका कारण यही है कि पत्तों को सींचने का काम ही हो रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि हम पत्तों की ओर नहीं, वृक्ष के मूल की ओर जायें, उसे सींचें। मनुष्य और मनुष्यता की रक्षा करें। अपने आत्म-स्वरुप को पहचानें। यदि आत्म-विस्मृति हो गई तो हमारी आस्था लड़खड़ा जायेगी, हमारा विश्वास डिग जायेगा। हम आत्म-स्वरुप में रमण करते हुए विश्वात्मा की अनुभूति करें। यही सुख, शांति और प्रसन्नता का मार्ग है।

कॉफी या कप ?

✻ अचल जैन, फरिदाबाद

एक बार एक अत्यंत वरिष्ठ शिक्षाविद् के पुराने छात्रों ने शिक्षाविद् के घर पर एकत्रित होने का आयोजन किया। सभी शिष्य अनुभवी व सफल नागरिक बन चुके थे। सभी ने विद्यमान प्रोफेसर सा. के सानिध्य में एम.बी.ए. की शिक्षा प्राप्त की हुई थी। एक कमरे में बैठकर सभी लोग आपस में चर्चा कर रहे थे बहुत देर तक वे सब अपनी-अपनी उपलब्धियों की तथा नई नई तकनीकों की चर्चाएं कर रहे थे, सभी लोग कहने लगे कि जिन्दगी में हर समय हर व्यक्ति तनाव ग्रस्त है। गलाकाट प्रतिस्पर्द्धा है। कुछ भी कर लो तनाव समाप्त नहीं होता, हर समय चिंता, भय व तनाव लगा रहता है, कुछ भी अच्छा नहीं लगता। तभी प्रोफेसर साहब उठे और उन्होंने कहा कि मैं आप सभी के लिए चाय कॉफी का प्रबंध करता हूं वे अंदर गये और एक चाय और कॉफी का भरा हुआ बर्तन लाए तथा एक ट्राली पर बहुत से कप लेकर आए। उन्होंने सभी को कहा कि आप सब स्वयं उठ कर कॉफी या चाय जो पसंद हो वो लें।

सभी लोगों ने बारी-बारी से उठकर एक एक कप उठाया और चाय अथवा कॉफी जो पसंद था लेकर पीने लगे। तभी प्रोफेसर सा. ने सभी का ध्यान अपनी ओर खींचा और कहा- देखो भाई मैं आपको एक बात बताता हूं। इस ट्राली में कुछ डिजाइनदार और सुन्दर कप थे और कुछ प्लेन-साधारण कप भी है सभी ने चुन चुन कर केवल डिजाईनदार कपों को ही लिया है और प्लेन कप ट्राली में ही रह गए हैं। अभी भी आप सब एक दूसरे के कप को देख कर सोच रहे है कि उनके हाथ में मेरे से अधिक आकर्षक कप है। यह तनाव का कारण है। यदि हमें एक कप चाय या कॉफी ही पीनी है और चाय या काफी किसी भी कप में डालकर पिये उसका स्वाद यही रहेगा मगर फिर भी हमारा ध्यान कप के डिजाइन पर केन्द्रित है, उसी प्रकार जीवन में आवश्यक आवश्यकताएं जैसे भोजन, वस्त्र और मकान आदि तो आसानी से पूरी हो जाती है, मगर हम पद, प्रतिष्ठा मान और व्यर्थ के दिखावे के लिए अधिक प्रयत्नशील रहते है और सदैव अपूर्ण और तनाव ग्रस्त रहते हैं। यदि हम अपने मन में संतोष रखे और इस तथ्य को समझें तो कभी भी तनावग्रस्त नहीं होंगे।

आरती की रचना किसने की और....

''मूलचंदजी भोजक एक ऐसे जैन श्रावक थे जो धुलेवा नगर (केसरियाजी तीर्थ) में रहते थे।'' नित्य रोज, सुबह-शाम तीन-तीन घंटे दादा-दादा करते, दूसरा कुछ भी नहीं, कारण की ! लोगों के लिए नहीं। श्रीआदिनाथ भगवान की भक्ति के लिए गाते थे।

समय के साथ ढलती उम्र गुजरते 60 साल बीत गये 60 वर्ष तक निरंतर सुबह शाम अखंड भक्ति करते रहे, एक भी दिन खाली नहीं गया, एक भी दिन फुरसत से कहीं गये नहीं।

एक दिन मूलचंदजी की लड़कियां बड़नगर गुजरात से लेने आई। पिताजी आप हमारे साथ चलो। मूलचंदजी रोते हुए बोले, इस भगवान को छोड़कर कहीं नहीं जाऊंगा। लड़कियों ने पूरा समान बांध लिया, फिर भी तैयार हो गये।

मूलचंदजी प्रभु के पास गये हुसके हुसके रोने लगे, प्रभु ! मैंने तेरी भक्ति में क्या कमी रखी, जो आज तक, तेरा और मेरा ये नाता तोड़ने का काम किया, 60-60 साल की अखंड तेरी भक्ति, एक पल में टूटकर चकना चूर हो जाएगी, ऐसी कल्पना भी, नहीं थी मुझे।

पैर चलते नहीं बुढ़ापे की उम्र थी। देरासर में से बाहर निकले, पैरों में झन झनाहठ हुई, वापस देरासर में गये, ऐसा एक बार-दो बार-तीन बार-चार बार-पांच बार-छे बार ऐसे सात बार अंदर गये वापस बाहर आये, आठवें बार अंदर गये और इतना रोय कि मुख से आवाज भी नहीं निकल रही थी।

हे प्रभु ! या तो यहां से मेरा शरीर मृत होकर बाहर जायेगा या फिर, प्रभु तुम्हारे साथ ही बाहर जाऊंगा, अथवा मैं अकेले नहीं जा सकता। 20 मिनट तक रोते हुए हाथ लम्बा कर भगवान के पास मूलचंदजी विनंती करते रहे, प्रभु ! साथ दो, मैं नहीं निकल सकता, इतना कहते ही, ''भगवान का दांया (जिमणा) पैर का अंगूठा टूटकर, कुदरती मूलचंदजी के हाथों में आया। मूलचंदजी अंगूठे को देखकर हर्षोल्लास होकर बोले, भगवान आप ! आवाज आई हां ! इस अंगूठे में, मैं ही हूं, ले जा इसे तेरे साथ।

मूलचंदजी गुजरात में किशनगढ़ के पास बड़नगर गये। कहां केसरियाजी और कहां बड़नगर का नया देरासर, और देरासर में प्रभु के अंगूठे की स्थापना कर, तीन घंटे सुबह, तीन घंटे शाम, प्रभु की भक्ति मूलचंदजी ने अखंड रखी।

एक दिन बड़नगर संघ के लोगों को आश्चर्य हुआ और पूछा ? मूलचंदजी भगवान को छोड़कर, अंगूठे के साथ क्या मिलना होगा। तभी संघ एक बार आग्रह पूर्वक पूछते है ? मूलचंदजी अंगूठे की क्या महत्वत्ता है। तब मूलचंदजी कहते है.... **आरती का अर्थ:-**

जय जय आरती आदि जिणंदा, नाभिराया मरुदेवी को नंदा.... नाभिराजा और मुरुदेवी के पुत्र, हे आदिनाथ प्रभु ! आपकी आरती जयवन्त हो जयवन्त हो।

✽ शुभ कर्म के उदय के समय शत्रु मित्र बन जाता है और अशुभ कर्म के उदय के समय मित्र शत्रु बन जाता है। सुख-दु:ख का सही कारण कर्म ही है।

आगमोद्धारक की सदस्यता एवं श्रुतभक्ति में दान देने के लिये ऑन लाईन बैंक की जानकारी

महोदय,

आगमोद्धारक की सदस्यता प्राप्त करने के लिये सदस्यता शुल्क एवं श्रुतभक्ति दान आप ऑन लाईन जमा कर सकते है। आपकी धनराशि भेजने के लिये:-

बैंक का नामः- इण्डियन ओवरसीज बैंक, शाखा नईसड़क उज्जैन (म.प्र.)

खाता:- श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता क्रं.:- 06800200001425 IFSC Code:- IOBA0000680

वर्ग पहेली क्रमांक-344

✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1	2		3	■	4			5
6		■		■		■	■	
	■	7	■	8			■	
9			■		■	■	10	
■	■	11				12	■	■
13		■	■		■	14		
	■	15	16		■		■	■
	■	■		■	17		18	■
19				■	20			

बाएं से दाएं:-

1- भ.अरनाथजी की माता का नाम (4)

4- पोष माह में पार्श्व प्रभु का जन्म व दीक्षा--- मनाया जाता है (4)

6- इस तीर्थ में आषाढ़ी श्रावक द्वारा स्थापित पार्श्व प्रभु की प्रतिमाजी है चा--- (2)

8- आठ दिनों के उपवास का पर्याय--- (3)

9- जिनमें संसारी जीव का जन्म मरण होता रहता है उन चार गतियों में से एक (3)

10-सोलह सतियों में से एक है राजी---जी (2)

11-बैंगलुर के निकट--- की पहाड़ियों का जैन धर्म के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है (5)

13-कमठ और मरुभूति की माता का नाम---द्धरा (2)

14----- मां भमता थकां, भव भावठ दूर पलाय, दर्शन, ज्ञान, चारित्र रुप प्रदक्षिणा त्रण देवाय (3)

15----- जन्मभूमि स्वर्ग से महान है (3)

17-भ.महावीर के प्रथम गणधर के पिता का नाम---ति (3)

19-पालीताना के निकट ऋषभ प्रभु का तीर्थ जहां से कदम्ब गणधर मोक्ष सिधारे क--- (4)

20-प्रयागराज के निकट स्थित तीर्थ जहां से ऋषभ भगवान को केवलज्ञान हुआ--- ल (4)

वर्ग पहेली क्रमांक-343 का परिणाम

■	उ	त्त	रा	ध्य	य	न	सू	त्र
त	प	■	व	य	■	मि	■	स
■	रि	■	ण	■	वि	■	त	■
प्र	या	ग	■	अ	ज	रा	म	र
थ	■	■	स	म	य	■	■	त
म	र	सा	ग	र	■	अं	ज	न
■	थ	■	र	■	ला	■	य	■
य	■	वी	■	सा	र	■	का	वी
सा	ग	र	व	र	गं	भी	रा	■

ऊपर से नीचे:-

1- भ.पार्श्वनाथ का प्रथम भव ---(4)

2- पर्युषण जिनशासन का म---र्व है (2)

3- मां सरस्वती को---वादिनी भी कहते है (2)

4- पार्श्व प्रभु पर उपसर्ग करने वाला, मेघमाली का पूर्व भव--- (3)

5- अहमदाबाद शहर का प्राचीन नाम--- (4)

7- भ.अजीतनाथजी की मोक्ष कल्याणक तिथि--- (3)

8- जैन तीर्थ धाम वीरायतन के संस्थापक थे राष्ट्रसंत उपाध्याय--- (5)

12-आठवीं सदी में 1444 ग्रंथ की रचना करने वाले गुरु ह--- (5)

13-पार्श्व प्रभु के प्रथम भव की जन्म स्थली पोतनपुर के राजा का नाम--- (4)

16-राजा भोज के शहर का प्राचीन नाम धारा ---(3)

17-जैसलमेर के निकट सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ का तीर्थ लोद्र---र (2)

18-बारह चक्रवर्ती में से एक सु--- (2)

✻ सब जीव आत्मरुप से सम-स्वभावी है। दूसरे पदार्थ में यदि जीव निज-बुद्धि करें तो परिभ्रमण दशा को पाता है और यदि निज में निज-बुद्धि करें तो परिभ्रमण दशा टलती है।

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-344

✻ आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

प्रश्न- प्रश्न का उत्तर दीजिये:-

1- पाप से पीछे हड़ने की क्रिया कौन सी है ?
2- जिससे संसार का लाभ होता है, वह क्या है ? (संसार बढ़े)
3- वितराग के वचनों पर पूर्ण श्रद्धा रखने वाले को क्या कहेंगे ?
4- कौन से क्षेत्र में से मोक्ष मार्ग कभी बंध नहीं होता ?
5- मोक्ष में कौन सी गति में से जा सकते है ?
6- कौन सा कर्म जीवन में एक ही बार बांधने का होता है ?
7- अरिहंत परमात्मा की प्रतिमा किस से पहचानी जाती है ?
8- शांतिनाथ भगवान के साधु प्रतिक्रमण कब करते थे ?
9- वर्ष में पकिख प्रतिक्रमण कितने आते है ?
10-परमाधामी का जीव भवी है या अभवी ?
11-21000 साल तक किनकी पाट परंपरा चलेगी ?
12-परमात्मा को दीक्षा की विनंती करने कौन आता है ?

✻ दलदल में फंसी हुई आत्मा अनंतकाल से व्यथित है, दुःखित है, पीड़ित है चारों गति में। जैसे कोई मोटर दलदल में (किचड़ में) फंसी हुई हो, उसे बाहर निकालने हेतु एक रस्सा, एक ट्रेक्टर, एक चैनल एवं एक ड्राइवर की आवश्यकता होती है, वैसे ही इस आत्मदेव रुपी मोटर को चारों गतिरुप दलदल के बाहर निकालने हेतु नमस्कार महामंत्र का नाम स्मरण रुप रस्सा, तपश्चर्या रुप ट्रेक्टर, सुगुरु की निश्रारुप चैनल एवं आज्ञापालन रुप ड्राइवर-इन चारों की सहायता से आत्मदेव मुक्त स्वतंत्र बनकर पंचम गति में स्थिति हो सकता है।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

वर्ग पहेली क्रमांक-343 के परिणाम

विजेताः-

1- चन्दनबाला जैन, देवास (म.प्र.)	-प्रथम
2- भारती जैन, देवास (म.प्र.)	- द्वितीय
3- प्रभा जैन, देवास (म.प्र.)	- तृतीय

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-343 के परिणाम

सही उत्तर-

1- खामेह, 2- पुणेवि कायव्वो, 3- देव गुरु पसाय, 4- आयरो न मोतव्वो, 5- पहेव, 6- तहत्ति, 7- करजो, 8- संधि सावेह, 9-पडिक्कमेह, 10-प्रकाशो, 11-पडिलेवेह, 12-पडिलेवेह ।

विजेताः-

1- भारती जैन, देवास (म.प्र.)	-प्रथम
2- चन्दनबाला जैन, देवास (म.प्र.)	- द्वितीय
3- प्रभा जैन, देवास (म.प्र.)	- तृतीय

✻ श्री जिन आत्म परिणाम की स्वस्थता समाधि और आत्म परिणाम की अस्वस्थता को असमाधि कहते हैं। अस्वस्थ कार्य की प्रवृत्ति करना और आत्म परिणाम स्वस्थ रखना ऐसी विषम प्रवृत्ति श्री तीर्थकर जैसे ज्ञानी से होना कठिन कही है, तो फिर अन्य जीव से वह बात संभवित होना कठिन हो इसमें आश्चर्य नहीं है।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-1-2024 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक'' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

।। श्री परमात्माय नमः ।।

शेठ नगीनचंद कपुरचंद झवेरीना प्रयासथी

जीवदया फंड

श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी

सुभाष चौक, गोपीपुरा, सुरत - 1
मो.: 09825414470 / 9820078772
स्थापना वि. सं. 1962
इ.स. 1906 रजि. नं.- 1744
PAN : AAATS8024L

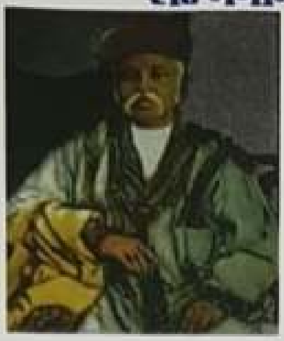

पैसा भेजने का पता :

प्रफुल अमीचंद झवेरी

26, खटाऊवाडी, गोरेगांवकर लेन,
सेन्ट्रल सिनेमानी पाछळ,
मुंबई - 400 004.
ऑफिस फोन : 2387 8476
मोबाईल : 98200 78772

धर्मप्रेमी सद्‌गृहस्थश्री, सादर प्रणाम !

जीवदया फंड संस्था सुरत के दानवीर शेठ श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी के प्रयासो के द्वारा स्थापित एक रजीस्टर्ड ट्रस्ट है। यह जीवदया फंड संस्था के द्वारा कतल के लीये जानेवाले ओर बीन उपयोगी जीवो को छुडवाकर के सुरत की पांजरापोल में भेजा जाता है। यह कार्य पीछले ११४ सालो से यह संस्था कर रही है । ओर शेठश्री के उत्तम पुण्यबल की वजह से यह कार्य के अंदर लगातार प्रतिवर्ष प्रगति हो रही है । जैसे की पीछले पांच सालो के दौरान (एप्रील - २०१४ से मार्च - २०१९) १०७९८ जीवो को छुडाया / बचाया गया है ।

हमारे आंगन में आनेवाले बेझुबान जीवो को पांजरापोल के अंदर ट्रस्टीओ के द्वारा नीगरानी करके सोंपा जाता है । ओर पशु के संपूर्ण जीवनकाल तक उनको संभालकर रखा जाता है ।

अनंत दया के सागर भगवान श्री महावीर प्रभु के शासन के दो स्तंभ है । अहिंसा ओर जीव के उपर मैत्री । सर्वज्ञश्री के यह संदेश को सार्थक करने के लिये दोनो का भी बहुत बडा महत्व है । जैसे की

आपके परिवार के कोई भी सभ्य का जन्मदिन
पशु परिवार के एक सभ्य को जीवनदान देकर मना सकते है ।

आपके परिवार मे आये हुए शुभ लग्नोत्सव के दीन
एक पशु युगल को जीवनदान देकर उनका जीवन उत्सवमय बना सकते है ।

कर्मसंयोग के कारन आई हुई बीमारी का दुःख ओर अशाता को टालने के लीये
कोई पशु को अभयदान प्रदान करके महाशाता का सुख प्रदान करे ।

अपने स्वजन के मृत्यु के दुःखद समय में एक पशु को
मृत्यु के मुखमें से छुडवाने से आपश्री को सांत्वना भी प्राप्त होती है ओर आपके स्वजन की सदगति प्राप्ती की प्रार्थना भी कर सकते है ।

पवित्र पर्व के धर्मोत्सव के समय एक जीवको
जीवनदान देकर पर्व उपासना को दया ओर करुणामय बनाये ।

आपश्री हंमेशा के लीये तिथि का भी चयन कर सकते है। यह तिथि के दीन दान में दी गई रकम का जो ब्याज मीलता है उसमें से जीव को छुडवाया जायेगा ।

यह संस्था के द्वारा एप्रील २०२० से मार्च २०२१ के एक वर्ष के समय जो की लोकडाउन था, उस समय में कुल २५९१ जीवो को छुडवाया गया है ।

आपश्री चेक या ड्राफ्ट जीवदया फंड के नाम का बनाए। रोकड रकम में भी आप योगदान दे सकते है। (आपश्री का अनमोल योगदान सुरत ओर मुंबई में उपर दिये गये पत्ते पर भीजवा सकते है।)

आपश्री आपका योगदान हमारे बेन्क खाते के अंदर भी जमा करवा सकते है । जीसकी जानकारी नीचे दी गई है। हमारी संस्था का 80-G नंबर AAATS 8024 LF 20210 है ।

Bank Name	: AXIS BANK LTD.	Bank Name	: BANK OF INDIA
A/c. Name	: JIVDAYA FUND	A/c. Name	: JIVDAYA FUND
IFSC	: UTIB0002274	IFSC	: BKID000001
A/c. No.	: 921010033621820	A/c. No.	: 00120100001219
Branch	: Charni Rd, Mumbai	Branch	: Mumbai Main Branch

जीवदया की शुभ भावना से कीये हुए कार्य से अक्षय सुख ओर मोक्षमार्ग की प्राप्ति होती है ओर नरकगति के कर्म का ओर अनेक भवो के पापो का क्षय भी जीवदया का कार्य करने से होता है। जीवदया का कार्य तीनो लोकमें श्रेष्ठ और सर्वोत्तम कार्य है ।

दान अेज सफल जीवन

लि. ट्रस्टीगण

प्रफुल अमीचंद झवेरी
पुष्पसेनभाई पानाचंद झवेरी
विरेन्द्र नेमचंद झवेरी

जतीनभाई फकीरचंद
शरदभाई गुलाबचंद कांटावाला
उषाकांत साकेरचंद झवेरी

शासन समाचार

जैनं जयति शासनम्

महाराष्ट्र के बाद मालवा (मध्यप्रदेश) राजस्थान और झारखंड में युवा जैनाचार्यश्री के धर्म प्रभावना के श्रृंखलाबद्ध आयोजन

उज्जैन कानवन के बाद श्री सम्मेद शिखर जी महातीर्थ के अधिष्ठायक देव श्री भौमियाजी महाराज के मूल मंदिरजी जीर्णोद्धार होने के बाद प्रतिष्ठा आपश्री की निश्रा मे को होना निश्चित हुई है।

* तीसरे युवा मुमुक्षु सैलाना में प्रवज्या ग्रहण करेंगे। * बाल मुनिश्री कल्याणरत्नसागर एवं बालमुनि श्री संवेगरत्नसागरजी म.सा. से गुरुकुल की शान बढ़ी। * श्री महावीर पंथगामी बनने जा रहे बाल मुमुक्षु तरुण दिलीप जैन ने 29 नवंबर को दीक्षा ग्रहण की। * बाल मुमुक्षु श्री उज्जवल जैन 7 दिसंबर को श्री वीर पंथगामी बनें। उज्जैन जनवरी के द्वितीय सप्ताह आने की संभावना। * गुरुदेव की पुण्यतिथि, अंजन-प्रतिष्ठा और पौष दशमी आराधना से अब मालवा के श्री संघ उपकृत होंगे। * पौष दशमी की आराधना का आयोजन प्रतापगढ़ (राज.) में चन्द्रावत परिवार के द्वारा किया जायेगा, दिनांक 4 से 8 जनवरी तक आराधना में अट्ठम तप होंगे

पौष दशमी आराधना प्रतापगढ़ में 5-7 जनवरी 2024	**गुरुदेवश्री की पुण्यतिथि** भोपावर महातीर्थ 31 जनवरी 2024	**अंजन-प्रतिष्ठा** उज्जैन 12 से 17 जनवरी 2024
दीक्षा सैलाना 17 से 21 फरवरी दिव्यांश मोदी	**इसके बाद-सम्मेद शिखर** भोमियाजी प्रतिष्ठा 21अप्रेंल 2024चैत्र ओली	**अंजन-प्रतिष्ठा** कानवन 21 से 25 जनवरी 2024

प्रतिष्ठ
26 जनवरी बदनावर

चार्तुमास
संभवतः जयपुर

रियावन
प्रतिष्ठा
14-15 फरवरी

सुवासरा
8 से 11 फरवरी
में महामांगलिक संयम
जैन का दीक्षा।

उज्जैन- मुंबई में चार्तुमास प्रवेश से लेकर सम्पूर्ण चार्तुमास में दीक्षा महोत्सव, उपधान तप तथा 100 ओली पारणा महोत्सव जैसे जिनशासन के प्रभावी धार्मिक कार्यक्रमों के श्रृंखलाबद्ध आयोजन व मुंबई में वर्षो तक यादगार बना रहेगा। यही कहानी अब मध्यप्रदेश, राजस्थान, झारखंड में भी दोहराई जायेगी। युवा जैनाचार्यश्री मुंबई को अलविदा कहकर पगले पगले विहार कर राजस्थान के प्रतापगढ़ में पौष दशमी आराधना के साथ स्थिरता प्राप्त कर आगे बढ़ेगा। इसके बाद उज्जैन में अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन उज्जैन में नूतन जिनमंदिर की सौगात लेकर आया है। कानवन, बदनावर में प्रतिष्ठा महोत्सव के आयोजन से मालवा में नये धर्म उत्साह का संचार होने जा रहा है। क्रियाशील जैनाचार्य मालवा के आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा अपने प्रभाव पुण्य और पवित्रता से शासन प्रभावक कार्य से यादगार मिसाल बनते जा रहे है चार्तुमास यादगार बन गया है। युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागरसूरीजी महाराजा परमात्मा श्री वीर प्रभु के शासन की अभिवृद्धि के लिये अपने सम्पूर्ण पुण्यबल का सुनियोजित उपयोग कर स्वयं और आपश्री ने गुरुकुल के युवा मुनिपुंग न जिन शासन की भरपूर प्रभावना कर देश भर में जैनत्व का नया इतिहास रच दिया हैं। युवा श्रमण भगवंतों ने अद्भूत शासन भक्ति कर युवा और वरिष्ठधर्मिष्ठों को आकृषित कर जैनत्व का सम्मान किया पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरसागरसूरीजी महाराजा के गुरुकुल ने श्री वीरप्रभु के शासन को उज्जवल बनाने के लिये वर्तमानकाल में जैनत्व का शंखनाद कर रहे है।पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा के गुरुकुल ने डंका बजा दिया है। श्री वीर प्रभु की पाट परम्परा में अपना योगदान देने के लिये बाल संयमी गुरुकुल से निरंतर जुड रहे है। उज्जैन आगमन होने के बाद अंजन-प्रतिष्ठा का संयोग 17 जनवरी को बना है इसके बाद कानवन में प्रतिष्ठा तथा रियावन में प्रतिष्ठा है। पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा की आठवीं पुण्यतिथि के निमित्त महोत्सव का आयोजन 31 जनवरी को भोपावर में होगा। मुमुक्षु दिव्यांश मोदी की दीक्षा का महोत्सव 21 फरवरी को सैलाना में होगा। इसं के बाद विहार श्री सम्मेदशिखरजी महातीर्थ की ओर होगा।35 कल्याणक भूमि के अध्यक्ष श्री कमलसिंहजी रामपुरिया कोलकत्ता की पूज्यश्री से आग्रहभरी विनंती पर विश्वविख्यात महातीर्थ श्री सम्मेदशिखरजी के अधिष्ठायक देव श्री भौमियाजी मंदिर में प्रतिष्ठा 21 अप्रेल को निश्चित हुई है15 से 23 अप्रेल तक चैत्र नवपद ओली का आयोजन भी होगा ।युवा जैनाचार्यश्री की गुरुमंडली का मालवा आगमन होते ही शासन के कायो की शुस्वातहो जायेगी है। उज्जैन, बदनावर में आपश्री के द्वारा जिन मंदिर की प्रतिष्ठा के साथ दिनांक 25 जनवरी को कानवन में श्री विमलनाथ परमात्मा के जीर्णोद्धार किये गये जिनालय की मंगलकारी प्रतिष्ठा गुरु पुष्य अमृत सिद्धियोग में सम्पन्न होगी। आपश्री आदि ठाणा का श्री सम्मेद शिखरजी की ओर मंगल विहार होगा वहां श्री भौमियाजी मंदिर में प्रतिष्ठा सम्पन्न कर आपका विहार राजस्थान जयपुर में चार्तुमास के लिये हो सकता है। लगभग यह कार्यक्रम निश्चित हो चुके है। योगायोग से परिवर्तन की संभावना से इंकार नहीं है। युवा जैनाचार्यश्री अपने गुरुकुल के युवा मुनि भगवंत प.पू. मुनि श्रीकीर्तिरत्न सागरजी म. सा. ,प.पू. मुनि श्रीतीर्थ रत्नसागर जी म. सा. प.पू. मुनि श्रीउदयरत्न सागर जी म. सा. ,प.पू.मुनि श्री उत्तमरत्नसागर जी म. सा. ,प.पू.मुनि श्री उज्ज्वलरत्न सागर जी म. सा.,प.पू. मुनि श्रीप.पू. मुनि श्रीरम्यरत्न सागरजी म.सा.,प.पू. मुनि श्रीलब्धि रत्न सागरजी म. सा. मुनिश्री शौर्यरत्नसागर जी म.सा. मुनिश्री ऋषभ रत्नसागरजी म.सा .मुनि श्रीसिध्दरत्न सागरजी म. सा.आदि ठाणा युवा शिष्य मंडली के साथ मालवा के श्रीसंघों में शासन प्रभावना करने के लिये आ रहे है।

लीमखेड़ा में भूमिपूजन : दीक्षा पत्रिका का आलेखान

लीमखेड़ा- यहां श्री शांतिनाथ प्रभु के जिन मंदिर निर्माण के लिये युवा हृदय सम्राट आचार्यदेव श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी महाराज की प्रेरणा और मार्गदर्शन से आपश्री के सुशिष्य मुनिश्री कीर्तिरत्नसागरजी म.सा. एवं मुनिश्री तीर्थरत्नसागरजी म.सा. की निश्रा में मंदिरजी के निर्माण के लिये भूमि पूजन दिनांक 14 दिसंबर को सम्पन्न हुआ। आपकी निश्रा में सैलाना के बाल मुमुक्षु दिव्यांश मोरी की प्रवज्या निमित्त दीक्षा महोत्सव की पत्रिका का विमोचन आलेखान दिनांक 24 दिसंबर को सैलाना में किया गया। मुमुक्षु की दीक्षा का मुर्हूत 21 फरवरी को है।

पूज्य आचार्यश्री के आगामी मंगलमय आयोजनों की श्रृंखला

- ✼ 5 से 7 जनवरी प्रतापगढ़नगर में पौष दशमी की भव्य आराधना।
- ✼ 12 से 17 जनवरी, उज्जैन, सूरजनगर में महामांगलिक सह अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव।
- ✼ 19 जनवरी बदनावर नगर में प्रतिष्ठा महोत्सव की भव्य जाजम।
- ✼ 21 से 25 जनवरी, कानवन नगर में भव्य अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव।
- ✼ 26 जनवरी, बदनावर नगर में भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव।
- ✼ 29 से 31 जनवरी, श्री भोपावर महातीर्थ में गुरुदेवश्री की पुण्यतिथि-गुरु समर्पण महोत्सव।
- ✼ 8 से 11 फरवरी, सुवासरा नगर में महामांगलिक सह मुमुक्षु संयम जैन का दीक्षा महोत्सव।
- ✼ 14-15 फरवरी, रियावन नगर में भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव।
- ✼ 17 से 21 फरवरी, सैलाना नगर में मुमुक्षु दिव्यांश मोदी का भव्य दीक्षा महोत्सव।

गणिवर्यश्री की निश्रा में घसोई में पौष दशमी आराधना का आयोजन

घसोई- पूज्यपाद आचार्य देवेश मालव भूषण श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के प्रशिष्य पूज्यपाद गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागर जी म.सा.गणिवर्य श्री अक्षतरत्नसागर जी म.सा.आदि ठाणा श्रमण-श्रमणी वृंद की निश्रा में घसोई में पौष दशमी की आराधना में दिनांक 4 से 8 जनवरी तक आयोजित कार्यक्रम में बड़ी संख्या में तपस्वियों ने अट्ठम तप किया। प्रभु श्री पार्श्वनाथ दादा के जन्म और दीक्षा कल्याणक पर भव्य उजवाणी हुई। श्रीमती रंजना बहन पारसजी भण्डारी परिवार ने लाभ लिया। दिनांक 7 जनवरी को परमात्मा के जन्म कल्याणक पर भव्य रथयात्रा का आयोजन भी किया गया। दीक्षा बाजना निवासी पूजा बाफना को पूज्य गणिवर्यश्री ने संयम मार्ग पर आगे बढ़ने के लिये दीक्षा का मुर्हूत दिनांक 14 फरवरी प्रदान किया है गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागरजी म. सा. की निश्रा में दीक्षा बाजना में होगी।

दादा के 18 अभिषेक और ध्वजा चढ़ाई जावेगी

पालीताना- श्री शत्रुंजय तीर्थाधिपति श्री आदिश्वर दादा के दीक्षा कल्याणक पर दादा के 18 अभिषेक के साथ दादा की 493 वीं वर्षगांठ पर मूलनायक प्रभु की जिनालय के शिखर पर ध्वजा चढ़ाने के लिये दिनांक 26 नवंबर को बोली हुई। बोली सुबह 10 बजे से भाताघर जय तलेटी पर के पास बोली गई। दादा के अट्ठारह अभिषेक दिनांक 2 अप्रेल को होंगे तथा वर्षगांठ पर ध्वजा 19 मई को चढ़ाई जावेगी।

उज्जैन में उपधान तपाराधना

उज्जैन- पूज्यपाद पंन्यास प्रवर श्री अभ्युदयसागरजी महाराज के सुशिष्य पूज्य आचार्यदेव श्रीजैनाचार्य श्री मुक्तिसागरसूरीजी एवं आचार्य देव श्री अंचलमुक्तिसागर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा की अमृत निश्रा में श्री अभ्युदयपुरम् तीर्थ में श्रावक से श्रमण बनने की आराधना उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है। दिनांक 14 अप्रेल 2024 को प्रथम तथा दिनांक 16 अप्रेल को द्वितीय प्रवेश होगा। उपधान तप का वरघोड़ा 1 जून को आयोजित होगा। मालरोपण विधान दिनांक 2 जून को सम्पन्न होगा। श्रीमती ज्योति बहन नलिनभाई दलाल परिवार पूना सम्पूर्ण लाभार्थी है। कल्याण मंदिर की प्रथम वर्षगांठ दिनांक 21 फरवरी को 108 पार्श्वनाथ पूजन तथा 22 फरवरी को वर्धमान शक्रस्तव, 18 अभिषेक होंगे दिनांक 23 फरवरी को ध्वजा चढ़ाई जावेगी **आपका आगामी चातुर्मास श्री अर्बुजगिरी जैन श्वेतांबर उपाश्रय इन्दौर में होने की घोषणा की गई है।**

उज्जैन में पौष दशमी आराधना

उज्जैन- श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी पर पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागर सूरीजी महाराजा की प्रेरणा से आपश्री के सुशिष्य युवा मुनि प्रवर श्री कीर्तिरत्नसागरजी म.सा. एवं मुनिश्री तीर्थरत्नसागरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में पौष दशमी पर अट्ठम तप का आयोजन किया गया। उत्तर पारणा 4 जनवरी से 8 जनवरी पारणा तक यह तपाराधना का आयोजन हुआ। बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों ने अट्ठम तप किया।

जैनाचार्य श्री रवि-ललितसूरीजी की निश्रा में श्रीगिरनार से शत्रुंजय महातीर्थ का छःरिपालित संघ

माण्डवला- श्री मेवाड़ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ भांडुप में पूज्यपाद जैनाचार्य श्री रविशेखर सूरीजी महाराजा एवं श्री ललितशेखर सूरीजी महाराजा आदि साधु-साध्वीवृंद की अमृत निश्रा में श्री गिरनार से श्री सिद्धाचल महातीर्थ के लिये सुखी-रतन छःरि पालित संघ का आयोजन होने जा रहा है। आपश्री की निश्रा में दिनांक 30 दिसंबर से 12 जनवरी तक श्री गिरनार से शत्रुंजय महातीर्थ का छःरिपालित संघ तथा दूसरा संघ 26 जनवरी से 8 फरवरी 2024 तक आयोजित होगा। दिनांक 26 फरवरी से 1 मार्च तक शैरिसा तीर्थ में अट्ठम तपाराधना आयोजित की गई है।शाह मतिलाल रतन चंद्रजी चौधरी परिवार के द्वारा आयोजित संघ माण्डवला से बस द्वारा गिरनारजी पहुंचेगा। गिरनार से गिरीराज का संघ गुरुजी की निश्रा में 26 जनवरी से आरम्भ होगा। सिद्धगिरी 7 फरवरी को पहुंचेगा। दादा के दरबार में संघ माल 8 फरवरी को प्रातः होगी।

नाकोड़ा में उपधान तप के साथ नव्वांणु यात्रा का महायोजन

नाकोड़ा- पूज्य आचार्यदेवेश श्री नयचंद्रसागरसूरीजी महाराजा के शिष्यरत्न मुनिश्री सुमितचंद्रसागरजी और मुनिश्री शीतलचंद्रसागरजी महाराज आदि साधु साध्वी की निश्रा में यहां उपधान तप का भव्य आयोजन प्रथम मुर्हूत दिनांक 7 और 9 दिसंबर द्वितीय मुर्हुत के साथ आरंभ हुआहै। उपधान तप के तपस्वीयों की भव्य शोभायात्रा तथा मालारोपण का आयोजन दिनांक 25 जनवरी 2024 को होगा। बच्चों के लिये 18 दिवसीय उपधान का आयोजन दिनांक 23 दिसंबर से हुआ। नव्वांणु यात्रा नाकोड़ा तीर्थ में पीछे की ओर बने 500 सीढ़ियां ऊपर विराजित श्री नेमि, पार्श्व एवं श्री शांतिप्रभु की यात्रा के साथ कराई जायेगी।

अभय अमृत छःरिपालित संघ यात्रा तपागच्छीय समिति के कार्यवाहकश्री की निश्रा में निकलेगी

राधनपुर- तपागच्छीय प्रवर समिति के कार्यवाह पूज्य आचार्यदेवेश श्री अभयदेवसूरीजी महाराजा, आचार्य देवश्री मोक्षरत्नसूरीजी महाराज आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद की अमृत निश्रा में राधनपुर से श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ तीर्थ का छःरिपालित संघ यात्रा का आयोजन होने जा रहा है। संघ राधनपुर से दिनांक 29-12-2023 को संघयात्रा प्रस्थान हुई तथा दादा के दरबार में संघ मालारोपण दिनांक 3 जनवरी 2024 को हुई।

गिरनार में नव्वांणु यात्रा

गिरनार- पूज्य आचार्य भगवंत श्री हेमवल्लभसूरीजी महाराजा की अमृत निश्रा में नव्वांणु यात्रा का आयोजन दिनांक 6 जनवरी 2024 से आरंभ होने जा रहा है, लाभार्थी की माल दिनांक 18 फरवरी को होगी।

दादा के दरबार में नव्वांणु यात्रा

पालीताना- शाश्वत गिरिराज में स्थित बैंगलोर धर्मशाला में पूज्य आचार्य श्री यशोभद्र सूरीजी एवं आचार्य श्री पीयूषभद्रसूरीजी महाराजा आदि ठाणा की निश्रा में नव्वांणु यात्रा का शुभारंभ 2 दिसंबर से हुआ, यात्रा का समापन 15 जनवरी को होगा।

आचार्यश्री हंसरत्नसूरीजी महाभद्र तप कर रहे है

मुंबई- यहां चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजित महातपस्वी आचार्य भगवंत श्री हंसरत्नसूरीश्वरजी महाराजा जिन्होंने पूर्व में 18 उपवास किये थे अब आपश्री महाभद्र तप की आराधना का शुभारंभ हुआ। इस तप में कुल 245 दिवस 196 उपवास और 99 बियासणा आयेंगे। पहली बारी में 28 उपवास तथा सात बियासणे आयेंगे।

कन्या 99 यात्रा का आयोजन

पालीताना- पूज्य साध्वीवर्या श्री तत्वपूर्णा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में श्री शत्रुंजय गिरीराज की कन्या 99 यात्रा का आयोजन होने जा रहा है। नव्वांणु यात्रा का शुभारंभ दिनांक 14 अप्रेल से होगा तथा पूर्णाहुति दिनांक 5 जून को होगी।

श्री अंतरिक्ष तीर्थ में अट्ठम तपाराधना

अंतरिक्ष तीर्थ- पूज्य जैनाचार्य श्री अजितशेखरसूरीजी म.सा. एवं विमलबोधिसूरीजी म.सा. की प्रेरणा से यहां पौष दशमी पर अट्ठम तपाराधना 5 से 7 जनवरी तक होगी। यह आयोजन पूना से अर्हत् ग्रुप के द्वारा आने जाने वाले श्रावक के साथ होगा।

जम्मू में श्री कल्याण पार्श्व जिनालय की अंजन-प्रतिष्ठा वल्लभसूरीजी के गच्छाधिपति की निश्रा में होगी

जम्मु- कश्मीर के जम्मू नगर में शिखरबद्ध नव निर्मित श्री कल्याण पार्श्वनाथ प्रभु के जिन मंदिर की अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव पूज्य श्री वल्लभ सूरीजी समुदाय के गच्छाधिपति पूज्य पाद आचार्य देवेश श्री नित्यानंद सूरीजी महाराजा आदि ठाणा के वरद् हस्ते होने जा रही है। त्रिदिवसीय महोत्सव के अंतर्गत दिनांक 13 जनवरी से महोत्सव का आरंभ एवं दिनांक 14 जनवरी को संक्रांति समारोह मनाया जायेगा। प्रतिष्ठा दिनांक 15 जनवरी को हर्षोल्लास से सम्पन्न होगी। श्री आत्मनंद जैन सभा के द्वारा आयोजित हो रहा है।

मुमुक्षु निखिल कुमार दीक्षित हुवे

रतलाम- श्री देवसूर तपागच्छ चारथुई जैन श्री संघ गुजराती उपाश्रय में विराजित पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री विजयकुलबोधि सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा की अमृत निश्रा में मुमुक्षु श्री निखिल कुमार का भव्य संयम ग्रहण महोत्सव दिनांक 7 दिसंबर को आयोजित हुआ। इसके पूर्व दिनांक 1 से 4 दिसंबर तक **''शरण मेरा रजोहरण''** विषय पर चार दिवसीय प्रवचन श्रेणी का आयोजन किया गया। इसके साथ ही 5 दिसंबर को संयम उपकरण वंदनावलि का आयोजन हुआ तथा दिनांक 6 दिसंबर को वर्षीदान का भव्य वरघोड़ा आयोजित हुआ। 7 दिसंबर को पूज्यश्री के द्वारा दीक्षा क्रिया विधि विधान सम्पन्न कराये गये।

विरति उपधान तप का आयोजन

पालीताना- पूज्य आचार्यदेव श्री ललितप्रभसूरीजी महाराज आदि ठाणा की निश्रा में उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है। प्रथम मुर्हूत दिनांक 29 दिसंबर तथा द्वितीय मुर्हूत 31 दिसंबर को होगा। उपधान तप का मालारोपण उत्सव दिनांक 16 फरवरी 24 को मनाया जायेगा। उपधान का आयोजन श्री पन्नारुपा धर्मशाला में होगा।

चौविहार छट की सात यात्रा जनवरी में

सूरत- गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री राजशेखार सूरीश्वरजी महाराज तथा आचार्य देवेश श्री रत्नाकरसूरीजी महाराज की निश्रा में श्री शत्रुंजय महातीर्थ की चौविहार छट कर सात यात्रा का आयोजन होने जा रहा है। श्री नमो नमः शाश्वत परिवार के द्वारा आयोजित यात्रा का प्रयाण दिनांक 10 जनवरी 2024 को उजमणा से होगा। सवेतना तथा उत्तर पारणा दिनांक 11 जनवरी 2024 को तथा शुभयात्रा 12-13 जनवरी को होगी। 14 जनवरी को पारणा के साथ यात्रा का समापन होगा।

वीर वत्सल उपधान तप

काकटूर- श्री 24 तीर्थंकर तीर्थधाम आंध्रप्रदेश के काकटूर में पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री उदयप्रभ सूरीजी आदि साधु-साध्वीवृंद की अमृत निश्रा में उपधान तप का शुभारंभ 21 दिसंबर को प्रथम तथा दिनांक 23 दिसंबर को द्वितीय मुर्हूत के साथ आरंभ होगा। उपधान तप की भव्य शोभायात्रा दिनांक 7 फरवरी को आयोजित होगी तथा दिनांक 8 फरवरी को आराधक तपस्वीयों की मोक्ष माल सम्पन्न होगी।

सरस्वती पुत्र का जन्मदिन 6 जनवरी को मनायेंगे

सूरत- पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री रत्नसुन्दरसूरीजी महाराज का सूरत चार्तुमास के बाद विहार बलसाणा तीर्थ की ओर होगा। तीर्थ प्रवेश 27 दिसंबर को होगा। इसके पूर्व बारडोली जैन श्री संघ में संयम जीवन के 58 वें वर्ष में प्रवेश पर भव्य स्नात्र महोत्सव मनाया जायेगा। बलसाणा तीर्थ में 29 से 31 दिसंबर तक श्री जैन एलर्ट ग्रुप शिविर का आयोजन भी होगा। पूज्यश्री का 76 वां जन्मदिन 6 जनवरी को बलसाणा तीर्थ में पौष दशमी के अट्ठम तप के साथ मनाया जायेगा।

रानीवाड़ा में उपधान तप मालारोपण सम्पन्न

रानीवाड़ा (राज.)- ऐतिहासिक चार्तुमास में सिद्धितप मासक्षमण अट्ठाई आदि तप के बाद प.पू. सूरिमंत्र आराधक आचार्यदेव श्री रविरत्न सूरीश्वरजी म.सा., पू.आचार्य श्री जयेश रत्नसूरीजी म., पू. पंन्यास श्री वैराग्य रत्नविजयजी म.सा. आदि एवं पू. साध्वी श्री उज्जवलरेखा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा-9 की पावन निश्रा में भव्य उपधान तप का प्रारंभ दशहरा दिनांक 24-10-2023 से प्रारम्भ हुआ था जिसकी मोक्षमाला रोपण दिनांक 11-12-2023 को सम्पन्न हुई उस निमित्त प्रभु भक्ति पंच कल्याणक पूजा, बारह व्रत पूजा, श्री ऋषिमंडल महापूजन, प्रभु आंगी एवं भव्य वरघोड़ा सैकड़ें श्रावक-श्राविकाओं के पूरे नगर में परिक्रमा की। दोपहर में उपधान तप के तपस्वियों की मोक्ष माला के चढ़ावे व बहुमान किया गया।

प्रतिष्ठाचार्य श्रीमद् विजय जिनोत्तम सूरीश्वरजी म.सा. के आगामी कार्यक्रम

✼ श्री शत्रुंजय महातीर्थ में श्री चैन्नई चन्द्र यात्रिक भवन के प्रांगण में शिखर बद्ध श्री चन्द्रप्रभुस्वामी जिनमंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा निमित्त एका दशान्हिका महोत्सव दिनांक 22नवबंर से प्रारंभ हुआ,अंजन प्रतिष्ठा मार्गशीर्ष कृष्ण-5,शनिवार,2-12-2023 हुई।

✼ श्री ओम शान्ति भवन, पालीताना में श्री चन्द्र प्रभुस्वामी, गुरु गौतमस्वामी, योगीराज श्री शान्तिसूरीजी म.सा. की रजत प्रतिमा की अंजनशलाका प्राण प्रतिष्ठा प्रेरक : शासनरत्न श्री मनोज कुमार बाबूमलजी हरण, सिरोही 7 दिसंबर 2023 हुई ।

✼ श्री विशाल कला जैन म्युझियम में श्री आदिनाथ रथ मन्दिर में स्फटिक रत्नमय श्रीअंतरिक्ष पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिष्ठा 8-12-2023 हुई ।

✼ श्री कल्याण जालोर भवन में उपधान तप मोक्षमाला 14दिसबंर का होगी।

✼ अयोध्यापुरम् से श्री शत्रुंजय महातीर्थ का छःरिपालित संघ 16 से प्रारंभ हुआ।

✼ श्री शत्रुंजय महातीर्थ की परिक्रमा सह 12 गाऊ का छःरिपालित संघ 24दिसबंर से प्रारंभ होगी।

✼ श्री गढ़सिवाना नगर में श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिन मंदिर (पेढ़ी मंदिर) का रजत जयंति महोत्सव एवं श्री गौतम स्वामी आदि बिम्बों की प्रतिष्ठा 14-2-2024 को होगी।

✼ श्री अष्टापद जैन तीर्थ सुशील विहार, रानी स्टेशन में श्री अष्टापद आदि मंदिर का रजत जयंति महोत्सव 23-2-2024 को होगा।

✼ श्री चेलावास नगर (वाया मारवाड़ जंक्शन) श्री नमिनाथ भगवान जिन मंदिर में अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव 8-3-2024 से होगा।

✼ श्री शंखेश्वर महातीर्थ में श्री कुमार पाल चैत्र मास ओली समिति, चैन्नई द्वारा1100 से अधिक आराधकों के साथ सामुदायिक ओली आराधना प्रारंभ दिनांक 15 से तथा समाप्त 23 अप्रेल2024 को होगी।

✼ श्री शंखेश्वर महातीर्थ में श्री पार्श्व-भैरव-सुशील धाम के परिसर में श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ चौमुख जिन मंदिर, श्री गौतम गुरु मंदिर, श्री नाकोड़ा भैरवजी का चौमुखा मंदिर का खनन मुर्हूत एवं शिलान्यास मंगल मुर्हूत खनन मुर्हूत16अप्रेल 2024 को, शिलान्यास मुर्हूत18अप्रेल को होगा । **आपका आगामी चातुर्मास श्री शिवगंज राज. के जैन श्वेतांबर उपाश्रय में होने की घोषणा हुई है ।**

श्री गिरनार महातीर्थ का संघ निकलेगा

जेतपुर- पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय जगतचंद्रसूरीजी महाराजा आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद की अमृत निश्रा में जेतपुर से श्री गिरनार महातीर्थ का छःरिपालित यात्रा संघ का आयोजन होने जा रहा है। संघ का प्रस्थान कलकत्ता से 10 जनवरी 2024 को होकर पदयात्रा 13 जनवरी 2024 से जेतपुर से आरंभ होगी । गिरनार 16 जनवरी को संघ पहुंचने के बाद 17 जनवरी को संघ माल होगी।

गिरनार में चार्तुमास

गिरनार- पूज्य अध्यात्मयोगी श्री कलापूर्ण सूरीश्वरजी महाराजा के सुशिष्य पूज्य आचार्य भगवंत श्री पूर्णचन्द्र सूरीश्वरजी महाराज आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद का आगामी सामूहिक चार्तुमास श्री गिरनार महातीर्थ में होने जा रहा है। सामूहिक रुप से 500 आराधक का चार्तुमास 50 दिवस का होगा।

श्री सिद्धाचल महातीर्थ में 99 यात्रा

पालीताना- शाश्वत तीर्थराज श्री सिद्धाचल महातीर्थ में 99 यात्रा का आयोजन सिर्फ श्रावक के लिये दिनांक 15 अप्रेल से होने जा रहा है। यह यात्रा पूज्य आचार्यदेवश्री संयमबोधि सूरीश्वरजी महाराज आदि साधु-साध्वी ठाणा की निश्रा में होगी। सुनतर भवन पालीताना से यात्रा आरंभ होगी।

सतना के लिये मंगल मुर्हूत प्रदान किया

सतना- श्री आदिनाथ परमात्मा आदि जिनबिंबों की प्रतिष्ठा तथा मुनिश्री सुव्रतस्वामी जिनबिंबों की अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव के लिये पूज्यपाद गच्छाधिपति श्री अभयदेवसूरीजी महाराजा के द्वारा मंगल मुर्हूत प्रदान किया गया। जिन प्रतिमा का मंदिरजी के गर्भगृह में प्रवेश दिनांक 7 मार्च 2024 को होगा। पूज्यश्री का अंजन-प्रतिष्ठा के लिये मंगल प्रवेश दिनांक 5 अप्रेल को होगा। अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव का शुभारंभ कुंभ स्थापना के साथ दिनांक 6 अप्रेल से होगा। परमात्मा की अंजन विधि दिनांक 14 अप्रेल को होगी तथा प्रतिष्ठा दिनांक 15 अप्रेल को सम्पन्न होगी।

युगल बंधु आचार्यश्री को हिन्दी साहित्यलंकार और वर्धमान तप युग प्रभावक पदवी से अलंकृत हुए

पूना- पूज्यपाद आचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी महाराज,मालव मार्तड आचार्य श्री मुक्तिसागर सूरीजी आदि शताधिक साधु-साध्वी भगवंत के साथ जैनाचार्य वाणी के जादूगर पूज्य पाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्न सागर सूरीजी महाराज मुनिश्रीचैत्यरत्न सागर जी मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागरजी मुनिश्री पवित्र रत्नसागरजी म.सा. मुनि श्री गोयमसागरजी म.सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा की अमृत निश्रा में पूज्य युगल आचार्य भगवंत श्री जितरत्नसागर सूरीजी म.सा. का हिन्दी साहित्यलंकार के साथ श्रमण संघ द्वारा साहित्य सूर्य की उपाधि से अलंकृत किया गया। आपकी 400 वीं पुस्तक का विमोचन भी इस प्रसंग पर हुआ साथ ही आयंबिल आराधक जैनाचार्यश्री चन्द्ररत्न सागर जी म.सा. को आयंबिल तप की 268 वीं ओलीजी की पूर्णाहुति के साथ वर्धमान तप युग प्रभावक पदवी से पूज्यपाद गच्छाधिपतिश्री ने सम्मानित किया। विशाल शोभायात्रा के साथ आप दौलतनगरी कोढ़ेला पधारे। यहां भव्य धर्मसभा में आपको दिनांक 13 दिसंबर को पद प्रदान किया गया।

श्री गिरनारजी की संघ एवं नव्वांणु यात्रा

जूनागढ़- पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री हेमवल्लभसूरीजी महाराज जिन्होंने अभी तक श्री गिरनार महातीर्थ की 3500 यात्रा कर ली है, ऐसे जैनाचार्यश्री की अमृत निश्रा में दिनांक 6 जनवरी 2024 से नव्वांणु यात्रा का शुभारंभ होगा। यात्रा की पूर्णाहुति पर मालारोपण 28 फरवरी 2024 को होगा। पूज्यश्री की निश्रा में गिरनार से श्री गिरनार की संघयात्रा के अंतर्गत गिरनार तीर्थ की परिक्रमा का आयोजन दिनांक 29 दिसंबर से 1 जनवरी 24 तक किया जायेगा। श्री सहसावन कल्याणक भूमि तीर्थोद्धार समिति जूनागढ़ के द्वारा आयोजन हो रहा है।

बंधुबेलड़ी की निश्रा में मुनि चैतन्यचंद्रसागरजी तथा साध्वी श्री शौर्यनंदिता श्रीजी ने दीक्षा लेकर श्रवणत्व स्वीकारा

❋ देवकुमार का प्रवज्या महोत्सव : अनेक आचार्य भगवंत की उपस्थिति रही।

पालीताना- सागर समुदाय के वरिष्ठ जैनाचार्य श्री जिनचंद्रसागर सूरीजी, श्री हेमचन्द्रसागर सूरीजी महाराज के साथ 12 आचार्य भगवंतों के साथ अनेक साधु-साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा में देवों की नगरी श्री सिद्धाचल महातीर्थ में मुमुक्षु देवकुमार को श्रमणत्व पथ का राही बनाया।में मुनि चैतन्यचंद्रसागरजी तथा साध्वी श्री शौर्यनंदिता श्रीजी के रुप में परमात्मा के शासन को आगे बढ़ाने की भावना से रजोहरण ग्रहण कर श्रमणत्य स्वीकार किया। अनेक साधु-साध्वी इस प्रसंग पर अहमदाबाद आदि स्थानों से पालीताना पधारे। दिनांक 14 दिसंबर को शुभ लग्नांश बेला में आगमोद्धारक संयम वाटिका में मुमुक्षु की प्रवज्या विधि गुरु भगवंतों के द्वारा सम्पन्न कर मुमुक्षु को रजोहरण प्रदान किया गया।

सरस्वतीनंदन की बरसाणा तीर्थ में 13 दिन की स्थिरता

बरसाणा- श्री विमलनाथ परमात्मा की छत्रछाया में बरसाणा तीर्थ के मार्गदर्शक आचार्य देवेश श्री रत्नसुंदर सूरीजी महाराजा आदि ठाणा की 13 दिन की स्थिरता दिनांक 27 से 8 जनवरी तक रही। यहां आपश्री ने शिलान्यास सम्पन्न करवाकर जैन अलर्ट ग्रुप का शिविर हुआ, अर्हत महापूजन पढ़ाई गई तथा पौष दशमी की आराधना भी हुई। पूज्य साध्वी श्री बोधिनिधि श्रीजी म.सा. का 100 ओली पारणा हुआ। यहां से आपश्री का विहार धुलिया की ओर हुआ जहां दिनांक 23 जनवरी को दीक्षार्थी की भव्य वर्षीदान यात्रा का आयोजन होगा तथा 24 जनवरी को सामुहिक 6 दीक्षा का आयोजन आपश्री की निश्रा में है।

श्री चंचलेश्वर तीर्थ में अट्ठम आराधना

भीलवाड़ा- शाहपुरा में स्थित श्री चंचलेश्वर तीर्थ में पौष दशमी पर अट्ठम तपाराधना का आयोजन होने जा रहा है। अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक श्री मनोजकुमार बाबूमलजी हरण की प्रेरणा और मार्गदर्शन से यह आयोजन पूज्य श्री धर्मानंदविजयजी म.सा. की निश्रा में होगा। दिनांक 4 जनवरी को उत्तर पारणा तथा 5 से 7 जनवरी अट्ठम तप के बाद पारणा और बहुमान होगा। 6 जनवरी को जन्म कल्याणक पर वरघोड़ा निकाला जावेगा। श्री उवसगहरम् पार्श्वनाथ पूजन होगी। 7 जनवरी को ध्वजारोहण तथा श्री नाकोड़ा पूजन भी होगा।

वागड़ नरेश जैनाचार्य श्री मृदुरत्नसागर सूरीजी पालीताना में चार्तुमास करेंगे

✻ ठाकुर विलेज एवं सुखेड़ा में अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव।

मुंबई- पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्न सागरसूरीजी महाराजा के सुशिष्य आचार्य देवेश वागड़ नरेश श्री मृदुरत्न सागरसूरीजी म. सा.. पू. मुनिश्री पद्म रत्न सागर जी म.सा. आदि ठाणा का मंगलमय चार्तुमास (2024) के लिये श्री शत्रुंजय महातीर्थ पालीताना पधारेंगे। दिनांक 23 दिसंबर को आपश्री की निश्रा में ठाकुर विलेज में मौन एकादशी की आराधना सम्पन्न हुई। 24 जनवरी को ठाकुर विलेज में अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव के चढ़ावे बोले गये । उक्त कार्यक्रम के लिये पूज्यश्री का प्रवेश 20 जनवरी को हुआ था। प्रतिष्ठा दिनांक 28 जनवरी को भव्य रुप से सम्पन्न हुई। यहां से आपश्री का विहार मालवा के सुखेड़ा के लिये हुआ है जहां आपश्री की निश्रा में अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन होने जा रहा है। दिनांक 4 अप्रेल को यहां प्रतिष्ठा होगी। यहां से आपश्री का विहार मोटागांव, बांसवाड़ा (राज.) के लिये होगा जहां श्री नाकोड़ा भैरव मंदिर की प्रतिष्ठा दिनांक 21 अप्रेल को होगी। श्री सिद्धक्षेत्र शत्रुंजय महातीर्थ पालीताना में आपश्री का आगामी चार्तुमास होने जा रहा है जहां चार्तुमासिक प्रवेश 19 जुलाई को होगा । **चार्तुमास के लाभार्थी श्रीमती सम्पत्तबाई बापूलालजी चौधरी परिवार जीरण (नीमचवाले) है । चार्तुमास साबरमती धर्मशाला में होगा।**

गणिवर्यश्री की निश्रा में स्नात्र महोत्सव का आयोजन

इन्दौर-पूज्य गणिवर्य श्री आनंद सागरजी महाराज, मुनि श्री ऋषभचंद्र सागरजी म.सा. आदि ठाणा-8 के एवं साध्वी श्री सौम्ययशा श्रीजी म.सा.एवं साध्वीवर्या श्री शीलरेखाश्रीजी म.सा. साध्वी वर्या श्री हेमप्रज्ञाश्रीजी म.सा. आदि साधु-साध्वी की निश्रा में तथा मालव शिरोमणी श्री पीयूषचन्द्र विजयजी म.सा. की निश्रा में आदि ठाणा की निश्रा में 125 वां स्नात्र महोत्सव का आयोजन श्री नवकार परिवार, इन्दौर के द्वारा किया गया। दिनांक 24 दिसंबर को 125 वें स्नात्र महोत्सव के लिये विशाल मेरु पर्वत का निर्माण किया गया था। प्रभु के माता-पिता, इन्द्राणी, 64 इन्द्र आदि पात्रों ने स्नात्र महोत्सव में भाग लिया। विशाल संख्या में धर्मिष्ठों की उपस्थिति बायकेट बाल ग्राउण्ड में रही, स्वामी वात्सल्य भी रखा गया था।

आगामी चार्तुमास

औरंगाबाद- यहां चार्तुमास हेतु विराजित पूज्य मुनिश्री हंसबोधि विजयजी म.सा. का तथा तपस्वी श्री भद्रकीर्तिविजयजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास अहमदाबाद के शांतिनगर जैन संघ उस्मानपुरा में घोषित हुआ है । पूज्य पंन्यास श्री मनोभूषणविजयजी म.सा. का चार्तुमास भी यहीं होगा।

आत्मोन्नतिकारक उपधान तप

शंखेश्वर- त्रैलोक्य पूजित श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ महातीर्थ में आत्मोन्नतिकारक संयम उपधान तपोत्सव का आयोजन होने जा रहा है। पूज्य आचार्य भगवंत श्री विजय जगतचंद्र सूरीश्वरजी महाराज के सुशिष्य आचार्य भगवंत श्री कल्पयश सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में यह आयोजन हो रहा है। उपधान तप का वरघोड़ा 23 जनवरी को तथा उपधान तप की माल 24 जनवरी 2024 को सम्पन्न होगी। उपधान का आयोजन आचार्य श्री कलापूर्ण सूरी स्मृति मंदिर के परिसर में होगा।

आगामी चार्तुमास की जय बोलाई गई

मुंबई- यहां के विलेपार्ले श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ की आग्रहभरी विनंती पर पूज्य आचार्य देवेश श्री अक्षयबोधि सूरीजी तथा आचार्यदेव श्री महा बोधि सूरीजी महाराज का आगामी वि.सं. 2080 ईस्वी सन् 2024 का चार्तुमास विलेपार्ले श्री संघ में करेंगे । संघ में चार्तुमास की घोषणा से हर्ष छा गया।

दादा के दरबार से दादा के दरबार की संघ यात्रा

पालीताना- श्री सिद्धाचल महातीर्थ से श्री नेमीनाथ दादा के दरबार गिरनारजी का छःरिपालित संघ आयोजित होने जा रहा है। पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री अजितयश सूरीजी एवं आचार्य भगवंत श्री संस्कारप्रशसूरी जी महाराजा आदि ठाणा की अमृत निश्रा में दिनांक 6 फरवरी 2024 को संघ का प्रयाण पालीताना से होकर दिनांक 22 फरवरी 2024 को श्री गिरनार महातीर्थ से संघ माल होगी।

सामुहिक अट्ठम तप का आयोजन

पानसर- श्री पानसर तीर्थ में सामुहिक अट्ठम तप का आयोजन पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री विजय अभयदेव सूरीजी महाराजा तथा आचार्य देवेश श्री मोक्षरत्नसूरीजी महाराज आदि साधु-साध्वीजी म.सा. की अमृत निश्रा में किया गया। दिनांक 16 से 18 दिसंबर तक यह आयोजन कैलाश बहन जिनेन्द्रकुमार शाह परिवार के द्वारा किया गया।

कांच मंदिर में ध्वजारोहण हुआ

उज्जैन- पूज्यपाद मालव देशोद्धारक आचार्य देवेश श्री चन्द्रसागर सूरीजी महाराजा के द्वारा प्रतिष्ठित श्री शीतलनाथ प्रभु के जिन मंदिर में अगहन सुदी-6 दिनांक 18 दिसंबर को ध्वजारोहण किया गया। सत्तर भेदी पूजन पढ़ाई गई।

श्री कामितपूरण पार्श्वनाथ तीर्थ में अट्ठम तप

उन्हेल- 108 पार्श्वनाथ प्रभु में सम्मिलित श्री कमितपूरण पार्श्वनाथ प्रभु की छत्राछाया में प्रथम बार अट्ठम तप का आयोजन किया गया। पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री कुलबोधि सूरीजी म.सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा में पौष दशमी अट्ठम तप करवाने का लाभ श्रीमती सरोजनी बहन शाह परिवार ने लिया। दिनांक 4 से 8 जनवरी तक आयोजित कार्यक्रम में बड़ी संख्या में तपस्वियों ने अट्ठम तप किया। दिनांक 7 जनवरी को शक्रस्तव अभिषेक का आयोजन किया गया।

जोधपुर में चार्तुमास

जोधपुर- श्री भेरुबाग पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर तीर्थ में पूज्य आचार्यदेव श्री तत्वदर्शन सूरीश्वरजी महाराज का आगामी चार्तुमास निश्चित हुआ है। आपश्री कलापूर्ण सूरीश्वरजी म.सा. के प्रशिष्य है।

अगाशी तीर्थ में उपधान तप

अगाशी- परम परमात्मा श्री मुनिसुव्रतस्वामी प्रभु से महिमा मंडित श्री अगाशी तीर्थ विरार (वेस्ट) में उपधान तप होने जा रहा है। राजग्रही तीर्थ प्रेरक आचार्य देवेश श्री अक्षयचन्द्र सागरसूरीजी म.सा., पूज्य प्रर्वतक श्री नयशेखरसागरजी म.सा. एवं साध्वी-वर्या श्री भव्यज्ञाश्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में प्रथम मुर्हूत दिनांक 20 दिसंबर तथा द्वितीय मुर्हूत 21 दिसंबर से उपधान का शुभारंभ होगा। उपधान तप का मालारोपण दिनांक 8 फरवरी 2024 को होगा।

कुवाला से श्री गिरनार का छ:रिपालित संघ

कुवाला- पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री रामसूरीश्वरजी महाराज के शिष्यरत्न पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री जगतचंद्रसूरीजी महाराज (डहेलावाला) की अमृत निश्रा में कुवाला से श्री गिरनार महातीर्थ का छ:रिपालित यात्रा संघ का आयोजन 15 दिसंबर से आरंभ हुआ। एक माह का संघ 15 जनवरी को गिरनार महातीर्थ पहुंचेगा तथा 16 जनवरी को समुह यात्रा होगी। संघ माल 17 जनवरी को आयोजित होगी।

श्री चंवलेश्वर तीर्थ में अट्ठम आराधना

भीलवाड़ा- श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ प्राचीन महातीर्थ में पौष दशमी पर दादा के जन्म दीक्षा कल्याणक के अवसर पर पंच दिवसीय महोत्सव के अंतर्गत अट्ठम तप आराधना का आयोजन होने जा रहा है। अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक श्री मनोजकुमारजी हरण के मार्गदर्शन में यह आराधना श्री धर्मानंदविजयजी म.सा. की निश्रा में होगी। धारणा अट्ठम पारणा के साथ दादा के जिनालय पर ध्वजारोहण भी होगा।

श्री लोद्रवपुर तीर्थ में वार्षिक ध्वजारोहण हुआ

जैसलमेर- प्रसिद्ध तीर्थ श्री लोद्रव पुर में श्री पार्श्वनाथ परमात्मा के जिन मंदिर में वार्षिक ध्वजारोहण का आयोजन दिनांक 22 एवं 23 दिसंबर को किया गया। सागर समुदाय की साध्वीवर्या श्री कुसुमश्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री चन्द्ररत्नाश्रीजी म.सा. एवं बाल साध्वी श्री ध्वनिरत्ना श्री जी म.सा. आदि दो ठाणा की निश्रा में 18 अभिषेक तथा ध्वजारोहण एवं सत्तर भेदी पूजन पढ़ाई गई। अहमदाबाद के देसाई परिवार ने लाभ लिया।

केकड़ी में ध्वजारोहण हुआ

केकड़ी- श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनमंदिर की प्रथम ध्वजारोहण का आयोजन पूज्य साध्वीवर्या श्री आत्म दर्शना श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में किया गया। दिनांक 16 एवं 17 दिसंबर को आयोजित ध्वजारोहण उत्सव में परमात्मा के 18 अभिषेक हुए एवं ध्वजा का चल समारोह निकाला गया। ध्वजारोहण के बाद सत्तरभेदी पूजन पढ़ाई गई।

बंधु त्रिपुटी की निश्रा में तीन राज्यों के 11 जिन मंदिर में प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित होंगे

✽ अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक श्री मनोजजी हरण का मार्गदर्श-प्रेरणा रहेगी।

पालीताना-पालीताना- जैनाचार्य अपूर्व मंगल रत्नसागरसूरीजी महाराजा के गुरुकुल के बंधु त्रिपुटी मुनि प्रवर श्री आगम प्रश्म- व्रजरत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा के चार्तुमास और उपधान तप की यशस्वी पूर्णाहुति के बाद अंतर्राष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई श्री मनोजकुमार बाबूमलजी हरण के मार्गदर्शन में तीन राज्यों के 11 जिन मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न करवायेंगे। अहमदाबाद प्रहलाद नगर में 15 जनवरी, सीतामऊ में 11 फरवरी, झालावाड़ में 21 फरवरी, सोयतकलां में 29 फरवरी, रतलाई (राज.) में 3 मार्च, मालवा में 6 मार्च, पचोर में 13 मार्च, सुखेड़ा में 4 अप्रेल, गौतमपुरा में 15 अप्रेल, सीतामऊ जहाज मंदिर में 26 अप्रेल तथा सीतामय में गांव मंदिर में 28 अप्रेल को प्रतिष्ठा आयोजन सम्पन्न होंगे।

मक्षी महातीर्थ में पौष दशमी मेला महोत्सव

मक्षी- श्रीपार्श्वनाथ मक्षीजी महातीर्थ पर आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. के दिव्य आर्शीवाद से सागर समुदाय वर्तीनी सरल स्वभावी श्री प.पू. प्रशम शीला श्रीजी म.सा. की शिष्या प्रशांत मूर्ति प.पू.प्रशमना श्रीजी म.सा. की शिष्या तपस्वी रत्ना प.पू.प्रशमज्ञया श्रीजी म.सा., प.पू.प्रशमसिद्धि श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की पावन निश्रा में पौष वदी-दशमी मेला महोत्सव में 108 सामूहिक अट्ठम तप की भव्यातिभव आराधना (5-6-7 जनवरी) को किया जावेगा।

सोयार बंगाल में अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव होगा

सोयार- सराक क्षेत्र में श्री शंखेश्वरपुरम् तीर्थ से श्री जीरावला पार्श्वनाथ प्रभु आदि जिनबिम्ब एवं देवी देवताओं की अंजन-प्रतिष्ठा का महोत्सव आयोजित होगा। पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री मुक्ति प्रभसूरीजी महाराजा एवं आचार्यदेव श्री डॉ. विनीतप्रभसूरीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में परमात्मा की अंजन का आयोजन दिनांक 20 से 22 जनवरी तक श्री शंखेश्वर तीर्थ में तथा प्रतिष्ठा महोत्सव दिनांक 23 से 25 जनवरी तक सोयर (निमबाद) में होगा।

भोपाल में प्रतिष्ठा महोत्सव

भोपाल- श्री आदिनाथ जैन श्वेतांबर मंदिर तुलसीनगर में श्री पुंडरिक स्वामीजी, गुरुदेव श्री आनंद सागर सूरीजी महाराजा तथा रायण पगलियाजी तथा श्री नाकोड़ा भैरवजी एवं घंटाकर्ण महावीर स्वामीजी की प्रतिमा प्रतिष्ठा का आयोजन पूज्य मातृ हृदया साध्वी श्री अमितगुणा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा की अमृत निश्रा में किया गया। दिनांक 11 से 15 दिसंबर तक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन हुआ।

आचार्य श्री दिव्यानंद सूरीश्वरजी की निश्रा में प्रतिष्ठा सम्पन्न

मोहनखेड़ा- सौधर्म बृहत्त पागच्छीय गच्छाधिपति आचार्य श्री जयानन्द सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य रत्न आचार्यश्री दिव्यानंद सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में महिदपुर में उपधान के बाद ढोढर (म.प्र.) में 250 वर्ष प्राचीन श्री चन्द्रप्रभस्वामी जिनालय के जीर्णोद्धार बाद रत्नत्रायी महोत्सव के साथ प्रतिष्ठा 15 दिसंबर को सम्पन्न हुई। यहां पर संघ आराधनार्थ एवं धार्मोद्यम हेतु श्री राजेन्द्रसूरि पौषधशाला भवन (उपाश्रय) का भी पुनः निर्माण मुंबई के दोशी-देसाई परिवार द्वारा पूज्य आचार्यश्री की प्रेरणा से करवाया गया है।आपकी निश्रा में दोशी-देसाई परिवार द्वारा आयोजित छःरिपालित संघ 8 जनवरी 2024 को भक्तामर तीर्थ जिला धार से प्रयाण कर अमझरा भोपावर तीर्थ होते हुए दिनांक 12 जनवरी को श्री मोहनखेड़ा तीर्थ पहुंचेगा। संघ माला 13 जनवरी को सम्पन्न होगी।श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की जन्म एवं स्वर्गारोहण तिथि राजगढ़ मोहनखेड़ा तीर्थ में मनायेंगे। पौष सुद-12 दिनांक 22 जनवरी को सुराणा (राज.) निवासी साक्षीकुमारी किरणजी आदोनी की भागवती प्रवज्या दीक्षा मोहनखेड़ा तीर्थ पर सम्पन्न होगी। **स्मरण रहे पूज्य आचार्य भगवंत का चार्तुमास झाबुआ (म.प्र.) में तय हुआ है।**

श्री गिरीराज की 99 यात्रा शाश्वत परिवार के द्वारा

मुंबई- पूज्य आचार्य श्री आनंदवर्धनसूरीजी महाराजा एवं आचार्य श्री आत्मदर्शनसूरीजी महाराज की निश्रा में दादा की 99 यात्रा का आयोजन दिनांक 27 अप्रेल से आरम्भ होगा। बिदाई बहुमान दिनांक 30 मई को होगा।

मुनिपुंग श्री पद्मकीर्तिसागरजी म.सा. को 100 ओली का पारणा घोड़ेगांव में 16 जनवरी को अष्टान्हिका महोत्सव होगा

✻ आ.भगवंतों के साथ अनेक साधु-साध्वीजी की अमृत निश्रा रहेगी।
✻ छोटे कद के संत ने बड़ा तप कर नाम चमकाया।

पूना- सागर समुदाय के वरिष्ठ जैनाचार्य पूज्यपाद वचनसिद्ध जैनाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी महाराजा एवं आयंबिल तपाराधक मुनिराज श्री पद्म कीर्तिसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में के साथ मालवा के जैनाचार्य श्री जितरत्नसागरसूरीजी, आयंबिल आराधक श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीजी, नूतन आचार्य श्री वैराग्यरत्न सागर सूरीजी म.सा. आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीजी की अमृत निश्रा में आयंबिल तपस्वी मुनिराज श्री पद्मकीर्तिसागरजी म.सा. को 100 वीं ओली पारणा निमित्त अष्टान्हिका महोत्सव का आयोजन आपश्री के गृहनगर घोड़ेगांव में 10 से 17 जनवरी के मध्य हो रहा है। 10 जनवरी को गुरु भगवंतों के प्रवेश के साथ ही महोत्सव का शुभारंभ होगा । श्री पार्श्वपंच कल्याणक पूजन होगी । 11 जनवरी को तप वंदनावली, श्री केतुलभाई का उद्बोधन तथा बाल गणेशा का कार्यक्रम रखा गया है। दिनांक 14 जनवरी को तपस्वी मुनिराज के गुणों की गौरव गाथा गुणानुवाद सभा होगी, लघु शांति स्नात्र पूजन भी होगी। 15 जनवरी को भव्य रथयात्रा के साथ तपस्वी मुनिराज की शोभायात्रा का आयोजन होगा एवं पूज्यश्री पगले पारणा का चढ़ावा बोला जायेगा । अमीचंद की अमिदृष्टि नाटिका शाम को होगी। 16 जनवरी को तपस्वी मुनिश्री के लाभार्थी के यहां पगले होंगे। लाभार्थी, कार्यकर्ताओं का सम्मान होगा। पूज्यश्री पूना से घोड़ेगांव की ओर विहार करेंगे । आचार्यदेव श्री नरदेवसागर सूरीजी महाराजा की निश्रा में श्री आदिनाथ सोसायटी पूना में पूज्य आचार्यदेव श्री विजय हंसरत्न सूरीश्वर जी म.सा. को भद्रतप के अंतर्गत 6 टी बारी में 16 उपवास के पच्चखाण तथा तप वधावण का आयोजन दिनांक 22 दिसंबर को किया गया। इस अवसर पर आचार्यश्री अक्षय बोधिसूरीजी आदि साधु-साध्वीजी की निश्रा भी रही।

पंचम ध्वजारोहण हुआ

विजयनगर- यह निर्मित श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ बाफना जैन तीर्थ में पंचम ध्वजारोहण महोत्सव का आयोजन अंतर्राष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई मनोजकुमार बाबूमल हरण की प्रेरणा और मार्गदर्शन से किया गया। दिनांक 17 एवं 19 दिसंबर को आयोजित कार्यक्रम परमात्मा के 18 अभिषेक सत्तरभेदी पूजन तथा ध्वजारोहण सम्पन्न हुआ।

श्री वही पार्श्वनाथ में पौष दशमी पर अट्ठम हुए

मंदसौर-श्री वही पार्श्वनाथ तीर्थ में पौष दशमी पर अट्ठम तप का आयोजन साध्वीवर्या श्री अमीपूर्णा श्रीजी एवं साध्वी अमीदर्शना श्रीजी म.सा. की निश्रा में किया गया। यह आयोजन 4 से 8 जनवरी तक हुआ।

चौविहार छट्ठ से सात यात्रा

पालीताना- पूज्यपाद आचार्य श्री राजशेखरसूरीजी महाराज एवं आचार्य देव श्री रत्नाकरसूरीजी महाराज की अमृत निश्रा में संघवी परिवार के द्वारा श्री गिरिराज शत्रुंजय महातीर्थ की चौविहार छट्ठ यात्रा का आयोजन किया जा रहा है। दिनांक 11 जनवरी को उत्तर पारणा के बाद 12 एवं 13 जनवरी को यात्रा तथा 14 जनवरी को पारणा के साथ पूर्णाहुति होगी।

कालधर्म हुआ

बाकरोल- आगमोद्धारक समुदाय की साध्वीवर्या पूज्य साध्वी श्री प्रशमरसा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वीवर्या श्री पूर्णताश्रीजी म.सा. बाकरोल-अहमदाबाद रोड़ पर सड़क दुर्घटना में काल धर्म हो गया। आपको ट्रक ने पीछे से टक्कर मार दी थी। सुबह 6.15 बजे बड़ा ट्राला उनके ऊपर चढ़ गया। एक्सीडेंट बहुत ही भयानक रुप से हुआ। सभी साधु-साध्वी भगवंतों से निवेदन है कि सड़क पर विहार करते समय अत्यधीक सावधानी रखें ताकि ऐसी दुर्घटना से बचा जा सके।

मुंबई में गणि पदवी प्रदान की गई

मुंबई- श्री गौड़ी पार्श्वनाथ तीर्थ मुंबई में पूज्यपाद आचार्यदेव श्री नयचंद्र सागर सूरीश्वरजी महाराज के सुशिष्य महाशतावधानी मुनिश्री अजितचंद्र सागरजी महाराज को पंच मांग भगवती सूत्र की अनुज्ञा अनुरुप गणिपद प्रदान किया गया। यह प्रदान कार्यक्रम दिनांक 10 दिसंबर को हुआ। श्री मोतीशाह जैन संघ के तत्वावधान में यह आयोजन हुआ।

श्री नागेश्वर तीर्थ में 1008 अट्ठम तपाराधना जैनाचार्य श्री अशोकसागरसूरीजी की निश्रा में हुई

✻ आर्यरक्षित सूरीधाम की अंजन प्रतिष्ठा जोरदार हुई । ✻नागेश्वर तीर्थ मेंआगमोध्दारकश्री के 150 वें जन्मवर्ष में गुरु मंदिर कर खनन् मुहूर्त हुआ ✻ दीक्षा महोत्सव का मुहूर्त दिया

नागेश्वर- नागेश्वर- विश्व विख्यात महातीर्थ गेश्वर तीर्थ उन्हेल के मार्गदर्शक आचार्य श्री अशोकसागर सूरीजी म.सा. पूज्य आचार्य श्री सौम्य चंद्रसागरसूरीजी श्री विवेकचंद्रसागर सूरीजी एवं प्रवर्तक श्री धैर्यचंद्र सागरजी महाराज के साथ साध्वीवर्या श्री दमिता श्रीजी, श्री चारुधर्माश्रीजी एवं श्री गिराशुंश्रीजी आदि ठाणा की पावन अमृत निश्रा में पौष दशमी अट्ठम तपाराधना का आयोजन लाभार्थी श्रीमती देवेन्द्रा बहन मन्नालाल जी भोगीलाल शाह परिवार द्वारा किया जायेगा। दिनांक 4 जनवरी को उत्तर पारणा होगा तथा दिनांक 5 से 7 पौष वदी 9-10-11 को 1008 आराधकों के द्वारा सामुहिक अट्ठम तप किया जायेगा।में दिनांक 7 जनवरी को दादा के जन्म कल्याणक पर भव्य रथयात्रा का आयोजन किया गया। इसके पूर्व आपश्री की निश्रा में मन्दसौर में निर्मित आर्य रक्षित सूरी जैन तीर्थ धाम की अंजन प्रतिष्ठा का भव्य आयोजन आपश्री की निश्रा में हुआ। दिनांक 9 से 16 दिसंबर तक आयोजित महोत्सव मंदसौर में यादगार बन गया। तीर्थ का निर्माण भी आपश्री की अमृत निश्रा में हुआ है। पूज्यश्री ने सलोनी ज्ञानचन्द्र मेहता को 18 नवंबर ज्ञानपंचमी पर श्री नागेश्वर तीर्थ में संयम प्रवज्या का मंगल मुर्हूत प्रदान किया। मुमुक्षु की दीक्षा बड़नगर में दिनांक14 फरवरी को होगी।

श्री गिरनार से श्री शत्रुंजय महातीर्थ संघ यात्रा

कल्याण- रामानगर से श्री जीरावला भीलड़ीयाजी रुणी तीर्थ होते हुए शंखेश्वर तीर्थ दर्शन वंदन के बाद संघ यात्री गिरनार तीर्थ पहुंचेंगे। यहां पर पूज्य आचार्यदेव श्री रविशेखार सूरीजी तथा आचार्यदेव श्री ललित शेखर सूरीजी महाराज आदि ठाणा की अमृत निश्रा में संघ प्रस्थान के विभिन्न अनुष्ठान होने के बाद यात्रा संघ का प्रस्थान 30 दिसंबर को हुआ। पालीताना में संघ का प्रवेश दिनांक 11 जनवरी 2024 को होगा। तीर्थमाला दादा के दरबार में 12 जनवरी को सम्पन्न होगी। मुथा प्रकाशराज आदि शंकलेशा परिवार के द्वारा संघ का आयोजन होने जा रहा है।

श्री शत्रुंजय गिरिराज की नव्वांणु यात्रा

पालीताना- पूज्यपाद आचार्य श्री विजयसंयमबोधि सूरीजी म.सा.आदि श्रमण-श्रमणीवृंद की निश्रा में श्री शत्रुंजय गिरिराज की नव्वांणु यात्रा का आयोजन होने जा रहा है। यह यात्रा दिनांक 15 अप्रेल 2024 सोमवार से आरंभ होगी। लाभार्थी हंसा बहन मुलाणी परिवार है।

थाने में पहली बार बड़ी दीक्षा प्रदान मुर्हूत

थाने- पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री जयानंदसूरीजी महाराजा तथा साध्वी श्री मणिप्रभा श्री जी आदि अर्ध शताधिक साधु-साध्वी वृंद की अमृत निश्रा में चार बड़ी दीक्षा 1-मुनिराज श्री पार्श्व विजयजी म.सा. (मोक्ष अशोकजी बोहरा-बागोड़ा/ मुंबई), 2-साध्वीजी श्री शत्रुंजययशा श्रीजी म.सा. (आंचल कुमारी जितेन्द्र जी नागोरी-आहोर/बैंगलोर), 3-साध्वीजी श्री शौर्ययशाश्री म.सा. (खुशी कुमारी तिलोकचंदजी गांधी मुथा-धुम्बड़िया/ठाणे), 4- साध्वीजी श्री उज्जिन्तयशा श्रीजी म.सा. (अदिति कुमारी मुकेशजी रांका धुम्बड़िया/ बैंगलोर) तथा निम्न को दीक्षा मुर्हूत प्रदान किया गया- 1- मुमुक्षु सुनिता पुखाराजजी बाफना, गढ़ सिवाना (राज.), 2- मुमुक्षु शाइना जयंती लालजी रामाणी (गुड़ा बालोताना/ मुंबई/नेल्लोर), 3- मुमुक्षु सुमिरन सुरेशजी कांकरीया (मोदरा-गुन्दुर), 4- मुमुक्षु मोनिका भंवरलालजी दरलेशा (मांडोली/विजयवाड़ा), 5- मुमुक्षु शालू अरविन्दजी सिंघी (आहोर-गुन्टुर)। यह आयोजन दिनांक 16 दिसंबर को हुआ। इसके बाद गृह मंदिर में चल प्रतिष्ठा के लिये पूज्यश्री आदि ठाणा तथा परमात्मा श्री नमिनाथ प्रभु का मंगल प्रवेश तथा चल प्रतिष्ठा हुई।

पालीताना में चार्तुमास

पालीताना- सनतर भवन पालीताना में 2024 का चार्तुमास होने जा रहा है। पूज्य आचार्यश्री आनंदवर्धना सूरीजी एवं श्री आत्मदर्शन सूरीजी महाराज आदि ठाणा की निश्रा में चार्तुमास दिनांक 20 जुलाई से आरंभ होगा तथा समापन 8 सितंबर को होगा।

पूना कोढ़ेला दौलतनगरी में दीक्षा : आचार्य, उपाध्याय पद का भव्य आयोजन हुआ

✻ संयम मेरु महोत्सव में गच्छाधिपतिश्री का 85 वां संयम दिन मनाया।✻ उपाध्याय वैराग्यसागरजी सूरी कहलायेंगे। ✻ पंन्यास श्री विरागसागरजी भी आचार्य पद पर आरुढ़हुए।✻ पंन्यास विनीतसागरजी अब सागर के उपाध्याय बने। ✻ मुमुक्षु दर्शना अब साध्वीजी कहलायेगी।✻ 7 से 14 दिसंबर तक संयम मेरु महोत्सव मनाया गया। ✻ दो आचार्य भगवंतों की समाधि मृत्यु भावयात्रा हुई।

पूना- कोढ़ेला जैन संघ में निर्मित दौलतनगरी में 7 से 12 दिसंबर तक भव्य रुप से धर्म की दौलत लूटाई गई। संघ स्थविर सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधि पति गीतार्थ मूर्धनय जिनागाम सेवी आचार्य भगवंत श्री पूज्य पाद श्री दौलत सागरसूरीजी महाराजा आचार्यश्री नरदेव सागर सूरीजी महाराजा, आचार्य श्री देवचंदसागर सूरीजी, आचार्य श्री जितरत्नसागर सूरीजी, आचार्य श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीजी, आचार्य श्री मुक्तिसागर सूरीजी, आचार्य श्री अचल मुक्तिसागर सूरीजी, आचार्य श्री दिव्यचंद्रसागर सूरीजी, उपाध्याय (नूतन आचार्य) श्री वैराग्यरत्नसागर सूरीजी, पंन्यास प्रवर (नूतन आचार्य) श्री विरागसागर सूरीजी, पंन्यास प्रवर (नूतन उपाध्यायश्रीजी) श्री विनीत सागरजी म.सा. आदि शताधिक साधु-साध्वी वृंद की अमृत निश्रा में दिनांक 7 से 14 दिसंबर तक भव्य रुप से पूज्यपाद गच्छाधिपतिश्री के 85 वें दीक्षा पर्याय पर भव्य रुप से वधावणा करने के साथ 10 दिसंबर को मुमुक्षु दर्शना बारामती की प्रवज्या हुई। 11 एवं 12 दिसंबर को विविध भव्य आयोजन हुए। दिनांक 13 दिसंबर को 268 ओली के आराधक तपस्वी आचार्य भगवंत श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीजी महाराजा की श्री वर्धमान तप प्रभावक पदवी से नवाजा गया साथ मुनिराज श्री पद्मकीर्ति सागरजी म.सा. की 100 ओली पूर्ण होने के (16 जनवरी) पर भव्य रुप से तप वधावणा का आयोजन किया गया। दिनांक 14 को एक भव्य शोभायात्रा के बाद पूज्य उपाध्याय श्री वैराग्यसागर जी को आचार्य पदवी प्रदान कर सागर समुदाय को गौरावित किया गया। पूज्य पाद आचार्य श्री विरागसागर सूरीजी एवं उपाध्याय श्री विनीतसागर जी को पदवी प्राप्त होने पर साध्वीश्री ऋतुप्रज्ञा श्रीजी की निश्रा में नवकार फ्रेंडस सर्कल पूना के द्वारा सामूहिक नवकार महामंत्र का जाप दिनांक 13 दिसंबर को किया गया। पूज्यपाद गच्छाधिपति वर्तमान में कात्रज में विराजमान है आगे चार्तुमास तथा अन्य कार्यक्रम का निर्णय योग्य समय पर लिया जावेगा।

2900 अट्ठम तप का आयोजन

शिरपुर- श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ तीर्थ में 2900 अट्ठम तप का आयोजन उत्तर पारणा एवं पारणा के साथ दिनांक 4 से 8 जनवरी तक किया गया। आसपास के क्षेत्रों के तपस्वी अट्ठम तप करने के लिये आये थे।

राष्ट्रसंत का चार्तुमास श्री नाकोड़ा तीर्थ में

मुंबई- सागर समुदाय के वरिष्ठ संत जैनाचार्य श्री चन्द्राननसागर सूरीजी महाराजा के गुरुभक्तों का मिलन समारोह दिनांक 8 दिसंबर को चेम्बुर वेस्ट के श्री ऋषभदेव जैन मंदिर में आयोजित किया गया। श्री नाकोड़ा दर्शन परिवार ने आयोजित किया था। पूज्यश्री का आगामी चार्तुमास श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ महातीर्थ से निश्चित हुआ। आपश्री की निश्रा में मुंबई में चार प्रतिष्ठा महोत्सव होने के बाद आपश्री ने दिनांक 23 दिसंबर को राजस्थान की ओर विहार किया है। राजस्थान में आपश्री की निश्रा में पांच अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव होनेवाले है। मुंबई में आपश्री के वरद हस्ते 136 अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव हो चुके है।

कुणसी में अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव

कुणसी- हैदराबाद के समीप कुणसी में श्री मनमोहन पार्श्वनाथ तीर्थधाम में पूज्य आचार्य देवेश श्री विजय राजतिलक सूरीजी महाराज आदि ठाण की निश्रा में अंजन प्रतिष्ठा का आयोजन दिनांक 18 फरवरी से आरंभ होगा। वरघोड़ा 21 फरवरी को है तथा प्रतिष्ठा 22 फरवरी को होने के बाद द्वारोद्घाटन 23 फरवरी को होने के बाद कार्यक्रम की पूर्णाहुति होगी।

हमारे तीज-त्यौहार

1- पौष वदी-10	शनिवार	6/1/2024	श्री पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक दिन
2- पौष वदी-11	रविवार	7/1/2024	श्री पार्श्वनाथ दीक्षा कल्याणक
3- पौष सुदी-5	सोमवार	15/1/2024	धनार्क कुमुर्हता समाप्त
4- पौष सुदी-9	शुक्रवार	19/1/2024	श्री शांतिनाथ प्रभु का केवलज्ञान कल्याणक
5- माघ वदी-5	बुधवार	31/1/2024	मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा का 8 वां स्वर्गारोहण (वि.सं.2072)

पंचक :- **आरम्भः-** पौष सुदी-2, शनिवार, दिनांक 13/1/2024, समय- 23.36 बजे
समाप्तः- पौष सुदी-8, गुरुवार, दिनांक 18/1/2024, समय- 03.34 बजे

पुष्प नक्षत्र :- **आरम्भः-** पौष सुदी-15, गुरुवार, दिनांक 25/1/2024, समय- 08.18 बजे
समाप्तः- माघ वदी-1, शुक्रवार, दिनांक 26/1/2024, समय- 10.29 बजे

चक्रवर्ती के 9 निधानः-1- नौ सर्प- रामनगर-गृहस्थापनादि, वास्तु शास्त्र, पुस्तकादि का संग्रह, **2- पांडुक-** धन, धान्य, मान, उन्मादि की उत्पत्ति, **3- पिंगल**-पुरुष, गज, अश्व, अलंकार, 64 सेर के हार की व्यवस्था, **4-सर्वरत्न-** 14 रत्न की उत्पत्ति और कांतिमय बनाते है, **5- महापद्म-** वस्त्रोत्पत्ति, रंगविधि, कपड़ा धोवाण आदि, **6-काल-** 63 शलाकापुरुष, ज्योतिष, शिल्प के 100 प्रकारों की जानकारी, **7- महाकाल-** मणि रत्न-प्रवाल-खाण आदि की उत्पत्ति, **8- माणवक-** सभी प्रकार के शस्त्र, नीतिदंड, कला आदि का ज्ञान, **9- शंख-**गायन, नाटक, काव्य, वांजीत्र आदि की विधि। सभी निधान पटारा के आकार के होते है, 12 योजन लंबे, 9 योजन चोड़े व 8 योजन विस्तार वाले होते हैं। आठ-आठ पहिये सभी को होते है उसमें सभी पदार्थ शाश्वते होते हैं। (बृहत्संग्रहणी)

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

10 बोल दुर्लभ....

1-मनुष्य भव मिलना दुर्लभ हैं। 2-आर्य क्षेत्र मिलना दुर्लभ हैं। 3-उत्तम कुल मिलना दुर्लभ हैं। 4-पूर्ण इन्द्रिय मिलना दुर्लभ हैं। 5-लम्बा आयुष्य मिलना दुर्लभ हैं। 6-निरोगी काया मिलना दुर्लभ हैं। 7-जिनवाणी का मिलना हैं। 8-जिनवाणी सुनना दुर्लभ हैं। 9-जिनवाणी पर श्रद्धा रखना दुर्लभ हैं। 10-धर्म में पराक्रम करना दुर्लभ हैं।

सादर आमंत्रण

✻ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

✻ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✻ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✻ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक

पधारो... पधारो... पधारो...

87000 वर्ष प्राचीन श्री शांतिनाथ भगवान की पावन भूमि

श्री भोपावर महातीर्थ में

जन-जन की आस्था एवं श्रद्धा के केन्द्र, तप सम्राट, 193 वीं ओली के आराधक, महामांगलिक प्रदाता, भोपावर तीर्थोद्धारक, जीरावला तीर्थ मार्गदर्शक, वचनसिद्ध महापुरुष, मालवभूषण प.पू. आचार्य देव

श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा

की

अष्टम् वार्षिक पुण्यतिथि

गुरु समर्पण महोत्सव

शुभ दिवस : माघ वदी 5, बुधवार 31 जनवरी 2024

सस्नेह निमंत्रण

आईये! गुरु समर्पण महोत्सव मे जुड़ते है ओर हमारी गुरुभक्ति के कर्तव्य का निर्वाहन करते है

विशेष : आप सभी पावन अवसर पर अपने-अपने श्रीसंघ में गुरुभक्ति के रुप मे कुछ ना कुछ सद्कार्य अवश्य करें। अधिक से अधिक संख्या मे आयंबिल कर अपनी गुरुभक्ति का परिचय देवें।

निमंत्रक : श्री शांतिनाथ जैन श्वेताम्बर तीर्थ ट्रस्ट पेढी भोपावर, तह. सरदारपुर, जि. धार

अध्यक्ष श्री रमणभाई जैन (मोन्टेक्स)

आयोजक : श्री जैन श्वेताम्बर मालवा महासंघ, नवरत्न परिवार

वर्ष 28 | माघ–पौष | दिसम्बर–2023 | अंक 12 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023

प्राप्त न होने पर कृपया लौटायें-

डॉ. सुभाष जैन (संपादक)
46, सखीपुरा, उज्जैन – 456001 (म.प्र.)
मो. 94250-91012, 8770884897
Email : subash_3333@yahoo.co.in, subhashjain@gmail.com

बुक पोस्ट

प्रति,
श्रीमान् ....
....
....

स्टाम्प टिकिट

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन – संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स, 285, एम.जी.रोड, इन्दौर से मुद्रित। फोन : 0731-2412232, संपादक मो. 94250-91012, 8770884897